06 मार्च, 2025
फाल्गुन, शुक्ल पक्ष, सप्तमी
संवत 2081
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

रांची
गुरुवार, वर्ष 10, अंक 137

* ओड़िशा संस्करण

www.epaper.azadsipahi.in

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

दक्षता है, तो रोजगार खुद आपके दरवाजे पर आयेगा : हेमंत सोरेन

विकास के लिए जरूरी है सामाजिक समरसता

परिचय

राजेश उरांव एक ऐसा नाम, जिसने अपने कार्य की बदौलत बनायी अपनी अलग पहचान। बुंडू के भकूआडीह (महापात्र डेरा) में दारोगा स्वर्गीय गौरी उरांव के घर जन्मे राजेश उरांव की प्रारंभिक शिक्षा केजी मोंटेसरी विद्यालय बुंडू में शुरू हुई। फिर संत जेवियर स्कूल बुंडू में आगे की पढ़ाई की। इन्होंने अपनी उच्च शिक्षा पांच परगना कॉलेज बुंडू में ग्रहण की। राजेश उरांव शुरू से अपने क्षेत्र और समाज के लिए कुछ करना चाहते थे। तत्कालीन समय में इन्होंने अपने नेतृत्व में अनेकों जगह पर बिजली का पोल लगवाया, वर्ष 2012 में इन्होंने भाजपा की सदस्यता ली, साल 2018 में पहली बार भाजपा के टिकट से नगर पंचायत का चुनाव लड़ा एवं अपने पहले ही चुनाव में विजय होकर झारखंड के सबसे युवा अध्यक्ष होने का गौरव हासिल किया। राजेश उरांव अपने व्यवहार, सरलता एवं साफ छवि की वजह से कम समय में ही समाज की सभी वर्गों के बीच अपनी पहचान बनाई, अध्यक्ष बनते ही इन्होंने बुंडू के सर्वांगीण विकास के लिए बुंडू के उन वार्डो को चिन्हित कर अपनी प्राथमिकता में रखी जो पूर्व मूलभूत सुविधाओं से वंचित था, एक समय था जब नावाडीह टोली एवं कुम्हार टोली के लोगों को पीने के पानी के लिए 2 किलोमीटर दूर जाना पड़ता था, अध्यक्ष बनते ही नावाडीह टोली, कुम्हार टोली के साथ-साथ 22 ऐसी जगह जो ड्राई जोन थे उन जगहों तक पाइपलाइन से जोड़कर घर-घर पानी पहुंचाने का कार्य किया। बुंडू के आम जनमानस को छोटी छोटी समस्या के लिए नगर पंचायत ना आना पड़े इसलिए इन्होंने चुनाव जीतने के बाद अपना बुंडू नाम का व्हाट्सएप ग्रुप बनाया जिसमे सिर्फ नगर के जनता ही जुड़ सकते है एवं अपनी छोटी छोटी समस्या जैसे खराब लाइट, नाली की सफाई, खराब चापानल आदि की जानकारी दे सकते है ग्रुप में आये समस्याओं को संज्ञान में लेकर त्वरित कारवाई किया। युवाओं के साथ सहजता से घुल मिल जाने वाले राजेश उरांव खेलकूद एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाई एवं कई आयोजन करवाएं। स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए उन्होंने बुंडू क्षेत्र से निकलने वाली कचरे के लिए तीन एकड़ जमीन की व्यवस्था करवाई और करोड़ों की लागत से कचरा को खाद में तब्दील करने के लिए रिसाइकिल प्लांट लगवाया। आज पूरा बुंडू रात के वक्त स्ट्रीट लाइट से जगमगा उठता है, बुंडू का हर गली में पक्की सड़क और नालियां है, जो इनके कार्यकाल की एक बड़ी उपलब्धि रही है। कार्यकाल की अंतिम अंतिम में इन्होंने अपनी महत्वाकांक्षी योजना बुंडू तालाब सौंदर्यीकरण के लिए भी टेंडर करवाया जिसमें सौंदर्यीकरण के अलावा डेढ़ करोड़ की लागत से वॉटर ट्रीटमेंट प्लान भी लगाया जाना है जिसमे शहर का गंदा पानी साफ होकर तालाब में जाएगी, किंतु इनका कार्यकाल खत्म हो जाने के कारण सौंदर्य करण का कार्य सही तरीके से नहीं हो पा रही है, जिसका अफसोस इन्होंने कई बार जताया हैं किंतु इनके 5 साल के कार्यकाल में 2 साल कोरोना प्रभावित रहने के बावजूद सिर्फ 3 साल में इन्होंने विकास की लंबी लकीर खींची है।

उपलब्धियां

1. बुंडू नगर पंचायत क्षेत्र में लगभग 600 प्रधानमंत्री आवास का निर्माण
2. गरीब और विस्थापितों के लिए 40 फ्लैट का निर्माण
3. बुंडू नगर पंचायत के लोगों को जाम से मुक्ति दिलाने के लिए बजरंग बली मंदिर के निकट 2.75 करोड़ की लागत से वेंडर मार्केट बनवाया
4. बुंडू के स्लम बस्ती फुलवार टोली, बाजार टांड़, और उरांव टोली में लाखों की लागत से सामुदायिक शौचालय का निर्माण
5. नगर पंचायत क्षेत्र के विभिन्न चौक चौराहों का सुंदरीकरण
6. बुंडू की प्राकृतिक जल स्त्रोत रानी चुवा का 65 लाख रुपये में सुंदरीकरण
7. घर-घर से कचरा उठाने की व्यवस्था
8. नगर पंचायत क्षेत्र के पानी के नलों में मीटर
9. पुरे नगर पंचायत क्षेत्र में स्ट्रीट लाइट
10. बच्चों के मनोरंजन के लिए पार्क का निर्माण
11. पुराना बाजार टोली में मछली पार्क का निर्माण
12. पांच करोड़ की लागत से भकुआडीह में बिरसा मुंडा पार्क निर्माणाधीन
13. महिला समिति के लिए लोन की सुविधा प्रदान कर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया
14. नगर पंचायत क्षेत्र के सभी सड़कों का पक्कीकरण
15. खुले नाली में स्लैब लगवाया
16. रॉकी सिनेमा हॉल के रोड का चौड़ीकरण कर रोड को दुरुस्त करवाया
17. नगर पंचायत क्षेत्र के सभी हाट बाजारों का ठेका स्थानियों को दिलवाया
18. मछुआरों के लिए सात हापा तालाब का सुंदरीकरण व जीर्णोद्धार
19. शव ले जाने के लिए शव वाहन की व्यवस्था
20. राजेश उरांव के कार्यकाल के दौरान बुंडू नगर पंचायत को तीन बार राष्ट्रपति के हाथों पुरस्कृत किया गया
21. दो साल कोरोना काल के समय भी लोगों की सहायता के लिए तत्पर थे
22. कार्यकाल में लगभग 45 करोड़ का कार्य किया गया

समाज सेवा ही जीवन का लक्ष्य

लक्ष्य... जो काम करना है

1. बुंडू नगर पंचायत क्षेत्र में पार्किंग की व्यवस्था करवाना
2. टाउन हॉल के तर्ज पर एक वृहद मैरेज हॉल बनवाना
3. बड़ा तालाब को पर्यटन हब की तर्ज पर विकसित कर वहां बोटिंग की व्यवस्था करना
4. बुंडू के ग्रामीण इलाके से सुर्य मंदिर तक अलग से रोड बनवाना
5. बुंडू को माडल टाउन की तर्ज पर विकसित करना
6. बुंडू को जिला का दर्जा दिलाने की दिशा में सकारात्मक प्रयास करेंगे
7. बुंडू नगर पंचायत क्षेत्र में पानी की समस्या न हो इसके लिए कांची नदी में 23 करोड़ की लागत से बियर बांध बनवाना
8. बुंडू मे युवाओं के लिए एक स्टेडियम का निर्माण
9. अस्पतालों में स्वास्थ्य व्यवस्था को सुदृढ़ बनाना
10. शिक्षा के क्षेत्र में रहेगा फोकस
11. लोगों को आर्थिक स्थिति से मजबूत करने की दिशा में काम करेंगे

राजनीति सत्ता पाने का अवसर नहीं सेवा करने का सर्वोच्च माध्यम है

राजेश उरांव
(बुंडू नगर पंचायत अध्यक्ष)

ADVERTORIAL : SWARUP BHATTACHARJEE

आजाद सिपाही
रांची, गुरुवार, 06 मार्च, 2025
www.azadsipahi.in

बिहार में राजद और कांग्रेस के बीच शुरू हो गयी खटपट

■ तेजस्वी के सीएम फेस पर कांग्रेस ने उठाया सवाल

■ राहुल गांधी ने बिहार के लिए अलग प्लानिंग कर राजद को दे दी चुनौती

बिहार में इस साल के अंत में विधानसभा चुनाव होने वाला है, लेकिन राजनीतिक सरगर्मी अभी से तेज हो गयी है। एक तरफ जहां एनडीए ने यह साफ कर दिया है कि उसका चेहरा नीतीश कुमार ही होंगे, वहीं महागठबंधन में तलवार खिंचती हुई नजर आ रही है। महागठबंधन में मुख्यमंत्री चेहरे को लेकर अब बयानबाजी शुरू हो गयी है। कांग्रेस पार्टी ने तेजस्वी के सीएम फेस पर कांग्रेस ने सवाल उठाया है, तो वहीं दूसरी तरफ राजद ने यह साफ कर दिया है कि तेजस्वी यादव के नेतृत्व में ही चुनाव लड़ा जायेगा। कांग्रेस का कहना है कि जिस पार्टी के पास अधिक विधायक होंगे, सीएम उसका ही होगा, यानी तेजस्वी यादव को अभी से सीएम का चेहरा घोषित नहीं किया जा सकता। कांग्रेस के इस बयान पर राजद का कहना है कि सीटों की बात नहीं है। यदि इंडी गठबंधन को बहुमत मिला, तो तेजस्वी ही बिहार की कमान संभालेंगे। इंडी गठबंधन के इन दो प्रमुख सहयोगियों के बीच शुरू हुई खटर-पटर की गूंज विधानसभा में भी सुनाई पड़ी, जब तेजस्वी यादव ने अपने भाषण में राज्य में कांग्रेस शासनकाल की गड़बड़ियों को उठाया और कांग्रेस को आड़े हाथों लिया। इसके जवाब में कांग्रेस की तरफ से अब बिहार के लिए अलग प्लानिंग तैयार कर राहुल गांधी ने राजद के सामने बड़ी चुनौती पेश कर दी है। राहुल गांधी ने तेजस्वी के सामने पप्पू यादव और कन्हैया कुमार को खड़ा कर राजद की रणनीति को करारा झटका दिया है। बिहार की राजनीति में वैसे तो चुनाव तक कई मोड़ आयेंगे, लेकिन शुरूआत में ही राजद और कांग्रेस के बीच का यह टकराव दूरगामी असर पैदा करेगा। क्या है बिहार में राजद और कांग्रेस का विवाद और क्या है दोनों पार्टियों की सियासी रणनीति, बता रहे हैं **आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह।**

राकेश सिंह

बिहार में इस साल विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। इसे लेकर सत्तारूढ़ एनडीए और विपक्षी इंडी गठबंधन की तैयारियां शुरू हो गयी हैं। एनडीए की चुनावी गाड़ी जहां पटरी पर दौड़ती नजर आ रही है, वहीं इंडी गठबंधन की गाड़ी अभी से ही डगमगाने लगी है। इस गठबंधन के दो प्रमुख घटक, राजद और कांग्रेस के बीच अभी से ही खटर-पटर शुरू हो गयी है। यह खटर-पटर सीट शेयरिंग से लेकर सीएम फेस तक को लेकर शुरू हुई है। राजद ने तेजस्वी यादव के नेतृत्व में चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी है, तो वहीं कांग्रेस ने कहा है कि जिस पार्टी को सबसे अधिक सीटें मिलेंगी, सीएम उसका ही होगा। तेजस्वी को अभी से सीएम फेस बताना सही नहीं है। इसके अलावा कांग्रेस ने बिहार की 70 सीटों पर प्रत्याशी उतारने की बात कह दी है। इस चुनावी माहौल में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने कांग्रेस और वर्तमान नीतीश सरकार पर निशाना साध कर आग में घी डाल दिया है। तेजस्वी ने 1990 से पहले के कांग्रेस शासनकाल और उसके बाद के लालू-राबड़ी राज की तुलना करते हुए वर्तमान सरकार की आलोचना की। उन्होंने छपरा के चुल्हाई तेली कांड का उदाहरण देते हुए सामाजिक न्याय के मुद्दे को भी उठाया।

क्या कहा तेजस्वी ने

तेजस्वी यादव ने कांग्रेस के साथ गठबंधन की अटकलों के बीच कांग्रेस के 70 सीटों पर चुनाव लड़ने के दावे पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। इसकी बजाय उन्होंने 1990 से पहले के कांग्रेस शासन पर सवाल उठाकर सबको चौंका दिया। तेजस्वी यादव ने 1990 के पहले और बाद के बिहार की स्थिति की तुलना की। उन्होंने अपने पिता और राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव के शासनकाल को समाज के अंतिम व्यक्ति को आवाज देने वाला राज बताया। उन्होंने कहा कि पिछड़े, अति पिछड़े और दलित विधायक-एमएलसी, सांसद और आयोगों के चेयरमैन और सदस्य बनाये गये। तेजस्वी ने इस दौरान कांग्रेस शासनकाल सवाल उठाते हुए कहा कि उसने बिहार को क्या दिया, लोगों को यह पता है।

सियासी गलियारों में हलचल

तेजस्वी के विधानसभा में दिये गये इस बयान और कांग्रेस द्वारा 70 सीटों पर चुनाव लड़ने की मांग पर राजद की चुप्पी चुनावी गठबंधन को लेकर कई सवाल खड़े कर रही है। तेजस्वी यादव के इस बयान से राजनीतिक गलियारों में हलचल मच गयी है। कांग्रेस ने उनके बयान पर सीधे कोई टिप्पणी तो नहीं की है, लेकिन बताया जाता है कि पार्टी आलाकमान इस पर गंभीर है।

राहुल गांधी हुए एक्टिव

बिहार की ताजा राजनीतिक स्थिति के मद्देनजर अब यह तय हो गया है कि राहुल गांधी का पूरा फोकस अब बिहार पर ही रहने वाला है। लोकसभा चुनाव के बाद हुए हरियाणा और महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की कोशिश और प्रदर्शन को देखते हुए 2024 के आखिर तक लगने लगा था कि राहुल गांधी अगर चाहें तो 2025 यूं ही गुजार सकते हैं और पूरी एनर्जी अगले आम चुनाव की तैयारी में लगा सकते हैं, क्योंकि दिल्ली और बिहार चुनाव में कांग्रेस को कुछ खास हासिल होने के कम ही चांस थे। दिल्ली चुनाव के नतीजों को नंबर के नजरिये से देखें तो कांग्रेस जीरो बैलेंस अकाउंट वाली ही लगती है, लेकिन राजनीति के हिसाब से देखें तो कांग्रेस लड़ती हुई नजर आने लगी है। दिल्ली चुनाव में कांग्रेस को कुछ न मिलकर भी बहुत कुछ मिला है और सबसे बड़ा हासिल तो कांग्रेस को खोखला कर देने वाली आम आदमी पार्टी की हार है। वास्तव में दिल्ली चुनाव ने हरियाणा, जम्मू-कश्मीर और महाराष्ट्र की हार से डगमगा चुके कांग्रेस के आत्मविश्वास को वापस दिला दिया है और कांग्रेस की बिहार की टीम की बातों और सक्रियता से तो ऐसा ही लगता है कि वह लालू और तेजस्वी यादव के राजद को कोई खास भाव देने वाली नहीं है। कांग्रेस ने लालू परिवार को साफ कर दिया है कि वह राजद की बी-टीम बिल्कुल नहीं है।

क्या बिहार में कांग्रेस दिल्ली से बेहतर कर सकेगी

बिहार में कांग्रेस के लिए दिल्ली से बेहतर स्कोप है। दिल्ली की तरह वह बिहार से ऑल-आउट नहीं हुई है। नंबर तो उत्तर प्रदेश में भी दो विधायकों तक पहुंच गया है, प्रियंका गांधी जैसी बड़ी नेता के हद से ज्यादा एक्टिव होने के बावजूद - लेकिन बिहार में यूपी के मुकाबले कांग्रेस बेहतर पोजीशन में अब भी है। ऐसी स्थिति में कांग्रेस ने बिहार का पूरा मामला राहुल गांधी को संभालने के लिए दे दिया है। कृष्णा अल्लावरु को प्रभारी बना कर राहुल गांधी ने खुद के एक्टिव होने का संकेत भी दे दिया है।

बिहार के लिए अलग प्लानिंग

राहुल गांधी ने अपनी टीम के साथ बिहार की तमाम परिस्थितियों का आकलन किया है। बताया जाता है कि उन्होंने बिहार के लिए अलग प्लानिंग कर राजद के सामने बड़ी चुनौती पेश कर दी है। इस प्लानिंग के तहत अब कांग्रेस बिहार में पप्पू यादव-रंजीता रंजन और कन्हैया कुमार को आगे बढ़ाने में लग गयी है। राहुल गांधी जानते हैं कि पप्पू यादव और कन्हैया कुमार को लेकर लालू यादव सहज नहीं हैं। असल में लालू यादव नहीं चाहते थे कि किसी भी सूरत में कन्हैया कुमार और पप्पू यादव कांग्रेस में शामिल हों। कन्हैया कुमार के मामले में तो उनकी नहीं चली, लेकिन पप्पू यादव के केस में तेजस्वी यादव का विरोध भारी पड़ा। राहुल गांधी जानते हैं कि ये दोनों चेहरे लालू यादव-तेजस्वी यादव के लिए पीड़ादायक हैं। राहुल गांधी ने साल के शुरू में ही ताबड़तोड़ बिहार दौराकर लालू यादव और तेजस्वी यादव को कांग्रेस का इरादा जता दिया है, उनकी बिहार टीम भी लगता है जैसे कहर ढा रही है। नये प्रभारी कृष्णा अल्लावरु भी पटना में जमे हुए हैं। लगातार कांग्रेस नेताओं के साथ मीटिंग कर रहे हैं और समझा रहे हैं कि आने वाले विधानसभा चुनाव में क्या और कैसे करना है। इसके अलावा अब चर्चा है कि भारत जोड़ो यात्रा की तर्ज पर राहुल गांधी की बिहार यात्रा के बारे में भी सोचा जा रहा है। सोचने में क्या है, अमल में भी आये तब तो। यात्रा तो दिल्ली में भी हुई थी, लेकिन तब राहुल गांधी झांकने तक नहीं गये थे। क्या पता, बिहार का प्लान कुछ और हो। बिहार में तो नीतीश कुमार, तेजस्वी यादव और यहां तक कि नये प्लेयर प्रशांत किशोर भी यात्रा कर रहे हैं।

सेल अधिग्रहित भूमि पर बसे गांवों में सुविधाएं बहाल करने की सरकार करेगी पहल : हेमंत सोरेन

बोकारो विधायक श्वेता सिंह ने विस्थापितों की बदहाली का मामला उठाया

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। बोकारो विधायक श्वेता सिंह ने विधानसभा में सेल द्वारा अधिग्रहित भूमि पर बसे पुराने गांवों में बुनियादी सुविधाओं की कमी का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि विस्थापित ग्रामीणों को अब तक मूलभूत सुविधाएं नहीं मिल पायी हैं, जिससे वे खानाबदोश जैसी जिंदगी जीने को मजबूर हैं। इन गांवों को पंचायत सूची में शामिल नहीं किया गया है, जिससे 50-60 हजार की आबादी

सरकारी योजनाओं से वंचित है।

इस मुद्दे पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने जवाब देते हुए कहा कि इन गांवों को पंचायती राज व्यवस्था में शामिल करने के लिए केंद्र सरकार से बातचीत करनी होगी। हालांकि, सरकार अधिग्रहित गांवों में बुनियादी सुविधाएं बहाल करने के लिए प्रतिबद्ध है और इसके लिए जल्द ही सेल प्रबंधन से चर्चा की जायेगी। मुख्यमंत्री ने बताया कि सेल के अधिकारी उनसे मुलाकात करने आ रहे हैं और अधिग्रहित इलाकों के रखरखाव व सुविधाओं की बहाली को लेकर उनसे बातचीत की जायेगी। झरिया विधायक रागिनी सिंह ने सदन में धनबाद नगर निगम में शामिल 27 गांवों को अलग करने की मांग उठायी। उन्होंने कहा कि इन गांवों को निगम क्षेत्र में शामिल किये हुए 15 साल हो गये हैं। लेकिन अब तक यहां बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध नहीं करायी गयी हैं। इस पर जवाब देते हुए विभागीय मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने कहा कि गांवों को निगम क्षेत्र से बाहर करना समाधान नहीं है, बल्कि सरकार की प्राथमिकता वहां आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराना होगा। उन्होंने आश्वासन दिया कि सरकार इस दिशा में जल्द कदम उठायेगी।

बाबूलाल ने पथ निर्माण विभाग की पारदर्शिता पर उठाये सवाल, सूची नहीं मिलने पर जतायी नाराजगी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। विधायक और पूर्व भाजपा अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने विधानसभा में पथ निर्माण विभाग से जुड़े सवाल उठाते हुए 2020-21 से 2024-25 तक के सभी स्थानांतरित पदों की सूची उपलब्ध कराने की मांग की। इसके साथ ही उन्होंने उन सड़कों की सूची भी मांगी, जिन्हें पथ निर्माण विभाग को हस्तांतरित किया गया है।

हालांकि विभाग की ओर से

दिये गये लिखित जवाब में सूची संलग्न करने की बात कही गयी थी, लेकिन सूची उपलब्ध नहीं करायी गयी। इस पर नाराजगी जताते हुए बाबूलाल ने कहा कि सभी विधायकों को इस जानकारी का अधिकार है, लेकिन विभाग गुमराह करने का प्रयास कर रहा है। उन्होंने इसे गलत परिपाटी करार देते हुए सदन से संज्ञान लेने की मांग की। इस पर जवाब देते हुए विभागीय मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने कहा कि यह एक लिपिकीय त्रुटि हो सकती है और जल्द ही सभी सदस्यों को पूरी सूची उपलब्ध करा दी जायेगी।

विधानसभा में गूंजा 1.36 लाख करोड़ का मामला, कल्पना बोलीं-लेकर रहेंगे बकाया

नीरा यादव बोलीं-किस पर है बकाया, जनता को ना करें गुमराह

झारखंड विधानसभा के बजट सत्र के दौरान सत्ता पक्ष और विपक्ष में तीखी बहस

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। मूल बजट पर दूसरे दिन वाद-विवाद के दौरान 1.36 लाख करोड़ रुपये बकाया के मामले पर सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच तीखी बहस हुई। इस दौरान झामुमो विधायक कल्पना सोरेन ने दो टूक कहा कि 1.36 लाख करोड़ लेकर रहेंगे। जनता लड़ाई के लिए तैयार है। इस पर भाजपा विधायक नीरा यादव ने कहा कि जनता को गुमराह ना करें। यह बतायें कि पैसे की मांग आखिर किससे हो रही है। अगर केंद्र के पास बकाया है तो विपक्ष हर तरह से सहयोग के लिए तैयार है, लेकिन यहां तो पब्लिक सेक्टर वाली कंपनियों का मामला है।

बकाया राशि के मसले पर क्या बोलीं कल्पना सोरेन : झामुमो विधायक कल्पना सोरेन ने कहा कि बता दीजिए कि 1.36 लाख करोड़ कब हमको देंगे। आप जो भी इंवेस्टमेंट कर रहे हैं, चाहे वो रोड या ट्रेन हो। आपका इंटेंशन है यहां का खजाना ले जाना। कौन-कौन रास्ता से खजाना ले जाना चाहते हैं। अगर कोई नया रास्ता अख्तियार किया है तो बतायें। हवाई जहाज के माध्यम से खजाना ले जायेंगे तो पहले बकाया 1.36 लाख करोड़ दीजिए। नहीं तो झारखंड अपनी लड़ाई लड़ने के लिए तैयार हो गया है। झामुमो विधायक कल्पना सोरेन ने कहा कि 1.36 लाख करोड़ लेकर रहेंगे। यह झारखंड का पैसा है। भाजपा ने यहां 16 से 18 साल राज किया है। इसके लिए कोर्ट से रोड तक लड़ाई लड़ने के लिए तैयार हैं।

दरअसल, गिरिडीह में 4 मार्च को स्थापना दिवस के दिन सीएम हेमंत सोरेन कह चुके हैं कि झारखंड की अपनी जमीन, अपनी इज्जत, घर का जल अगर यहां से बाहर जायेगा तो सिर्फ यहां के विधायक नहीं, बल्कि यहां की जनता लड़ने के लिए तैयार है।

किससे वसूलना है बकाया : डॉ नीरा यादव

वहीं भाजपा विधायक डॉ नीरा यादव ने कहा कि माननीय सदस्या को विश्वास दिला दें कि अगर झारखंड का एक रुपया भी बकाया है तो हम सभी विपक्ष के लोग साथ आयेंगे, लेकिन आप स्पष्ट बतायें कि क्या झारखंड का पैसा केंद्र सरकार के पास बकाया है या कंपनियों के पास। पूरे आंकड़े के साथ बतायें। झारखंड की जनता को गुमराह करने का काम ना करें। अगर बकाया है तो वो सरकारी उपक्रमों से जुड़ा हुआ है।

बकाया पर राजनीति हो रही है : नवीन जयसवाल

इसपर भाजपा विधायक नवीन जयसवाल ने पूछा कि अगर बकाया है तो क्या वो राशि केंद्र सरकार देगी या पब्लिक सेक्टर वाली कंपनियां जैसे सीसीएल, बीसीसीएल, सेल देगी। अगर पैसे की लड़ाई पब्लिक सेक्टर से है तो उसके लिए केंद्र को कैसे जिम्मेवार ठहरा सकते हैं। इसके लिए ट्रिब्यूनल, हाइकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट है। लड़ाई पीएसयू से है और राजनीति केंद्र सरकार को लेकर हो रही है। नवीन जयसवाल ने कहा कि इसपर राजनीति क्यों हो रही है। क्या इसी वजह से 450 रुपये में सिलेंडर नहीं दिया जा रहा है। क्या इस राशि के नाम पर मंईयां सम्मान योजना बंद हो जायेगी।

www.epaper.azadsipahi.in

06 मार्च, 2025
फाल्गुन, शुक्ल पक्ष, सप्तमी
संवत 2081
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

रांची
गुरुवार, वर्ष 10, अंक 137

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

लखनऊ के कोर्ट ने राहुल गांधी पर पेशी से गायब रहने के कारण 200 रुपये का जुर्माना लगाया

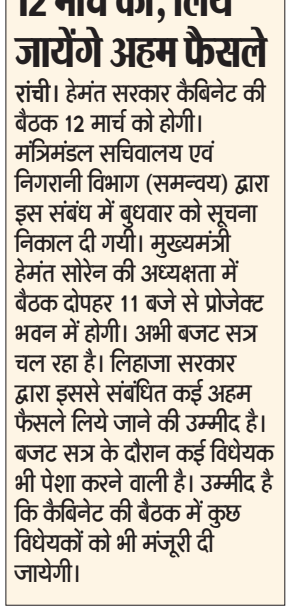

न्यूज रील्स

कैबिनेट की बैठक 12 मार्च को, लिये जायेंगे अहम फैसले

रांची। हेमंत सरकार कैबिनेट की बैठक 12 मार्च को होगी। मंत्रिमंडल सचिवालय एवं निगरानी विभाग (समन्वय) द्वारा इस संबंध में बुधवार को सूचना निकाल दी गयी। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की अध्यक्षता में बैठक दोपहर 11 बजे से प्रोजेक्ट भवन में होगी। अभी बजट सत्र चल रहा है। लिहाजा सरकार द्वारा इससे संबंधित कई अहम फैसले लिये जाने की उम्मीद है। बजट सत्र के दौरान कई विधेयक भी पेशा करने वाली है। उम्मीद है कि कैबिनेट की बैठक में कुछ विधेयकों को भी मंजूरी दी जायेगी।

नवचयनित 49 प्रशिक्षण अधिकारियों को मिला नियुक्ति पत्र

दक्षता है, तो रोजगार खुद आपके दरवाजे पर आयेगा : हेमंत सोरेन

- मुख्यमंत्री ने आइटीआइ संस्थानों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का पाठ्यक्रम शामिल करने पर दिया बल

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के हाथों 49 नव चयनित प्रशिक्षण पदाधिकारियों को जब नियुक्ति पत्र मिला, तो उनके चेहरे की मुस्कान देखते ही बन रही थी। खुशियों से भरा यह अवसर था, झारखंड मंत्रालय में श्रम, प्रशिक्षण, नियोजन एवं कौशल विकास विभाग द्वारा आयोजित नियुक्ति पत्र वितरण समारोह का। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि नियुक्तियों का यह कारवां बढ़ता रहेगा। युवाओं को रोजगार से जोड़कर राज्य को नयी ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए हमारी सरकार प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हुनर का कोई मोल नहीं होता है। यह अनमोल है। अगर आपके पास हुनर हो, तो आपको रोजगार के लिए दौड़ने की जरूरत नहीं है। रोजगार खुद आपके दरवाजे पर आयेगा, क्योंकि हुनरमंद को हर कोई अपने साथ जोड़कर रखना चाहता है। यही वजह है कि हमारी सरकार राज्य के नौजवानों के कौशल विकास के लिए कई कदम उठा रही है। अब नौजवानों के प्रशिक्षण के लिए टेक्नोलॉजी पर विशेष जोर दिया जा रहा है, क्योंकि तकनीक के जरिये ही आज के युवा आगे बढ़ सकेंगे।

एक नये सफर की हो रही शुरुआत: मुख्यमंत्री ने नव चयनित प्रशिक्षण अधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज से सरकार की एक अभिन्न अंग के रूप में जिम्मेदारियों से भरे नये सफर की आप शुरुआत कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि आप प्रशिक्षण देकर युवाओं के हुनर को इस तरह से निखारेंगे कि उन्हें रोजगार के लिए मुश्किलों का सामना नहीं करना पड़ेगा। उन्हें रोजगार के भरपूर अवसर प्राप्त होंगे। वे अपने हुनर तथा क्षमता की बदौलत देश -विदेश में मान-सम्मान और गर्व के साथ कार्य कर अपने परिवार और राज्य का नाम आगे बढ़ायेंगे।

एआइ से खुद को अलग नहीं रख सकते: मुख्यमंत्री ने कहा कि आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) हमारे जीवन का अहम हिस्सा बनता जा रहा है। एआइ के जरिये तकनीक काफी आगे बढ़ चुका है। आज कृषि हो या उद्योग अथवा कोई और क्षेत्र, हर जगह एआइ का इस्तेमाल तेज होता जा रहा है। एआइ से अब आप अपने को अलग नहीं रख सकते हैं। ऐसे में हमारे नौजवान एआइ के क्षेत्र में आगे बढ़ें, इसके लिए आइटीआइ संस्थानों के पाठ्यक्रम में इसे शामिल करने की जरूरत है।

प्रखंड स्तर पर कौशल विकास की है व्यवस्था: मुख्यमंत्री ने कहा कि युवाओं के कौशल विकास के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को अब प्रखंड स्तर पर ही कौशल विकास का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उन्हें प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहन राशि भी दी जा रही है। मेरा नौजवानों से आग्रह है कि वे कौशल विकास प्रशिक्षण केंद्र में आयें और अपने को दक्ष बनायें। आपकी दक्षता आपके करियर को नयी दिशा देगी।

एक-एक कड़ी को जोड़ने का हो रहा प्रयास

मुख्यमंत्री ने कहा कि क्षेत्र भ्रमण के दौरान कई बार पॉलिटेक्निक संस्थानों के विद्यार्थियों ने मुलाकात कर पठन-पाठन एवं प्रशिक्षण को लेकर हो रही समस्याओं से अवगत कराया था। इसी बात को संज्ञान में लेकर आइटीआइ संस्थानों को मजबूत और संसाधनयुक्त बनाने का कार्य चल रहा है। इसी कड़ी में आइटीआइ संस्थानों में पढ़ाई और प्रशिक्षण की बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित करने की दिशा में प्रशिक्षण पदाधिकारियों की नियुक्ति हुई है।

प्रशिक्षण में नयी-नयी तकनीकों के इस्तेमाल पर जोर

हेमंत सोरेन ने कहा कि आज तेजी से तकनीकें बदल रही हैं। औद्योगिक जगत में अत्याधुनिक मशीनों का इस्तेमाल हो रहा है। मजदूरों के कार्य भी मशीनों के जरिये हो रहे हैं। ऐसे में अगर समय के अनुरूप आप अपने हुनर को नहीं निखारेंगे, तो जमाने से काफी पीछे रह जायेंगे। रोजगार प्राप्त करना आपके लिए बड़ी चुनौती बन जायेगी। हमारा प्रयास है कि नयी-नयी तकनीकों के माध्यम से आपको प्रशिक्षण मिले, ताकि रोजगार के रास्ते आपके लिए हमेशा खुले रहें।

स्टार्टअप शुरू करने के लिए तैयार करें

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में हम एक ऐसी व्यवस्था बनाने का प्रयास कर रहे हैं, जहां युवाओं को कौशल विकास का प्रशिक्षण देकर ना सिर्फ उन्हें रोजगार से जोड़ा जाये, बल्कि उनके हुनर को इस तरह से निखारने का प्रयास हो रहा है कि वे एक उद्यमी के रूप में आगे आकर अपना स्टार्टअप स्थापित कर सकें। इससे ना सिर्फ वे रोजगार प्राप्त करेंगे, बल्कि अन्य लोगों को भी रोजगार से जोड़ने में सफल होंगे। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार युवाओं का कौशल विकास के साथ उनके रोजगार के लिए भी कार्य कर रही है। कैंपस प्लेसमेंट और रोजगार मेला तथा कई अन्य माध्यमों से पिछले वर्ष 50 हजार से अधिक युवाओं को देश-विदेश के संस्थानों में सम्मानजनक रोजगार उपलब्ध कराया गया। इस अवसर पर श्रम मंत्री संजय प्रसाद यादव, मुख्य सचिव अलका तिवारी, मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव अविनाश कुमार समेत अन्य अधिकारी मौजूद थे।

विधानसभा बजट सत्र : सत्ता पक्ष के विधायकों ने ही सरकार को घेरा

पेयजल एवं स्वच्छता विभाग में 100 करोड़ रुपये के घोटाले पर हंगामा

- मंत्री ने मांगा सात दिन का समय कार्रवाई का दिया आश्वासन

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड विधानसभा के बजट सत्र के सातवें दिन कांग्रेस विधायक प्रदीप यादव ने पेयजल एवं स्वच्छता विभाग में 100 करोड़ रुपये के घोटाले का मुद्दा उठाया। खास बात यह रही उनका साथ सत्ता पक्ष के अन्य सदस्यों ने भी दिया। इसके बाद विभागीय मंत्री और सदन के सदस्यों के बीच जमकर खींचतान हुई। अंत में विभाग के प्रभारी मंत्री प्रभारी मंत्री योगेंद्र प्रसाद ने कहा कि चलते सत्र में इसकी जांच करा कर सदन को अवगत कराया जायेगा। उन्होंने सात दिन का वक्त मांगा।

वित्त विभाग की जांच रिपोर्ट में आया मामला: विधायक प्रदीप यादव ने सवाल किया कि स्वर्णरेखा परियोजना के अधीन शीर्ष कार्य प्रमंडल में फर्जी खाता खोलकर करोड़ों रुपये की फर्जी निकासी का मामला वित्त विभाग की जांच रिपोर्ट में आया है। रांची और लोहरदगा में कार्यपालक अभियंता ने एलएंडटी कंपनी की जगह रोकड़पाल के खाते में बिल भुगतान कर राशि की बंदरबांट की है। इस मामले में मुख्य अभियंता प्रभात कुमार सिंह, कार्यपालक अभियंता चंद्रशेखर समेत अन्य अभियंताओं के खिलाफ एफआइआर दर्ज होनी चाहिए।

स्टीफन, हेमलाल और रामेश्वर ने भी सरकार को घेरा: इस पर सत्ता पक्ष की ओर से झामुमो विधायक स्टीफन मरांडी ने कहा कि कार्यपालक अभियंता को बचाने की साजिश चल रही है। वहीं, कांग्रेस विधायक रामेश्वर उरांव ने कहा कि कार्रवाई को तीन तरीके से पेश किया जाता है। पहला 'फंसा दो', दूसरा 'धंसा दो' और तीसरा 'दूध का दूध और पानी का पानी' कर दो। उन्होंने कहा कि इस मामले में 'धंसा दो' वाला काम हो रहा है। इसका मतलब है कि अधिकारी को बचाया जा रहा है। पूरे मामले को सिर्फ संतोष कुमार रोकड़पाल पर एफआइआर कर मामले को समाप्त नहीं किया जा सकता। इस पर झामुमो विधायक मथुरा प्रसाद महतो और झामुमो विधायक हेमलाल मुर्मू ने प्रदीप यादव का पक्ष लेते हुए कहा कि विभागीय जांच का मतलब लीपापोती है। इसलिए प्राथमिकी होनी चाहिए, क्योंकि इस मामले में सिर्फ रोकड़पाल संतोष कुमार पर कार्रवाई की गयी है। जब वित्त विभाग ने सभी को दोषी पाया है, तो कार्रवाई एक पर क्यों।

भाजपा ने ली चुटकी: इस बीच पूरे मामले में चुटकी लेते हुए भाजपा विधायक नवीन जयसवाल ने कहा कि यदि सत्ता पक्ष के विधायकों को दोषियों पर कार्रवाई करने में इतनी मशक्कत करनी पड़ रही है, तो विपक्ष द्वारा उठाये गये मुद्दों पर कार्रवाई करने में क्या स्थिति होगी।

स्पीकर ने सात दिन के लिए प्रश्न स्थगित किया

प्रभारी मंत्री द्वारा एफआइआर नहीं कराने पर प्रदीप यादव ने कहा कि ऐसे में वह सदन में धरना पर बैठ जायेंगे। वहीं, हेमलाल मुर्मू ने कहा कि बिना कार्यपालक अभियंता के रोकड़पाल गबन नहीं कर सकता है। प्रभारी मंत्री के रुख से लग रहा है कि वह कार्यपालक अभियंता को बचाने की कोशिश कर रहे हैं। उनकी नीयत पर सवाल उठता है। इस पर प्रभारी मंत्री योगेंद्र प्रसाद ने कहा कि चलते सत्र में जांच कर सदन को अवगत कराया जायेगा। देर तक चली बहस में प्रभारी मंत्री ने कहा कि सात दिन के भीतर कार्रवाई कर अवगत कराया जायेगा। इस पर प्रदीप यादव ने आसन से आग्रह किया कि इस प्रश्न को सात दिन के लिए स्थगित कर दिया जाये। इसके बाद स्पीकर रबींद्र नाथ महतो ने इस प्रश्न को सात दिन के लिए स्थगित कर दिया। अब इस प्रश्न पर सात दिन के बाद चर्चा होगी।

भाजपा विधायक दल के नेता के चुनाव के लिए दो पर्यवेक्षकों की नियुक्ति

- केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव और ओबीसी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ के लक्ष्मण पर्यवेक्षक बने

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड विधानसभा में भाजपा विधायक दल के नेता के चुनाव के लिए भाजपा संसदीय बोर्ड ने दो केंद्रीय पर्यवेक्षकों की घोषणा कर दी है। केंद्रीय वन, पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव और ओबीसी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सांसद डॉ के लक्ष्मण पर्यवेक्षक बनाये गये हैं। राष्ट्रीय मुख्यालय प्रभारी एवं सांसद अरुण सिंह ने बुधवार को इससे संबंधित पत्र जारी किये। गौरतलब है कि झारखंड विधानसभा का बजट सत्र जारी है और प्रदेश भाजपा की ओर से अब तक नेता प्रतिपक्ष फाइनल नहीं हो सका है।

चाइबासा में आइइडी ब्लास्ट में तीन जवान घायल

- सीआरपीएफ के सर्च ऑपरेशन के दौरान हादसा
- रांची के राज अस्पताल में चल रहा इलाज, डीजीपी देखने पहुंचे

आजाद सिपाही संवाददाता

चाइबासा। पश्चिमी सिंहभूम जिले के सारंडा के जंगल में नक्सलियों की ओर से लगाया गया आइइडी ब्लास्ट कर गया है। इस आइडी ब्लास्ट में बटालियन 197 के सहायक कमांडेंट जीजे साईं, हवलदार सह रेडियो ऑपरेटर वीटी राव के अलावा कांस्टेबल धर्मेंद्र घायल हो गये हैं। जानकारी के मुताबिक आइइडी ब्लास्ट की यह घटना झारखंड-ओडिशा बॉर्डर के बालिबा और बाबुडेरा जंगल में हुई।

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार मंगलवार से एक विशेष संयुक्त अभियान पश्चिमी सिंहभूम जिले के छोटानागरा एवं जराइकेला थाना के सीमावर्ती जंगली और पहाड़ी इलाकों में शुरू किया गया है। इसी के तहत बुधवार सुबह 8:40 बजे छोटानागरा थाना अंतर्गत बालिबा के आसपास आइइडी विस्फोट हुआ। वहीं रास्ते में गड्ढा करके स्पाइक होल (गड्ढे में लगा लोहे का तीर) बनाया गया था। इन दोनों की चपेट में तीन जवान आ गये। सभी सीआरपीएफ के 197 बटालियन के हैं। घायल जवानों की गंभीर स्थिति को देखते हुए उन्हें बेहतर इलाज के लिए रांची एयरलिफ्ट किया गया। उन्हें घटनास्थल से हेलिकॉप्टर के जरिये रांची एयरपोर्ट लाया गया। उसके बाद ग्रीन कॉरिडोर बना कर सभी जवानों को रांची के राज अस्पताल लाया गया, जहां सभी का इलाज किया जा रहा है। सभी जवानों की स्थिति स्थिर है।

डीजीपी अनुराग गुप्ता पहुंचे अस्पताल

अस्पताल में इलाजरत जवानों को हाल पूछने डीजीपी अनुराग गुप्ता भी पहुंचे। उन्होंने जवानों का हौसला बढ़ाया। साथ ही कहा कि राज्य में नक्सली अपनी अंतिम सांसें गिन रहे हैं। जो आइइडी ब्लास्ट हुआ है वह काफी पुराना है। साथ ही कहा कि अभी यहां जवानों का इलाज चल रहा है। अगर जरूरत पड़ी तो दूसरे जगह भी उन्हें ले जाया जायेगा।

कन्नड़ एक्ट्रेस एयरपोर्ट पर 15 किलो सोने के साथ गिरफ्तार

बेंगलुरु। बेंगलुरु इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर कन्नड़ एक्ट्रेस रान्या राव को 3 मार्च की देर शाम डायरेक्टरेट ऑफ रेवेन्यू इंटेलिजेंस (डीआरआइ) ने 14.8 किलो सोने के साथ गिरफ्तार किया। इसकी जानकारी बुधवार को सामने आयी है। रान्या कर्नाटक पुलिस हाउसिंग कॉरपोरेशन के डीजीपी रामचंद्र राव की सौतेली बेटी है। उन्होंने कन्नड़ फिल्मों माणिक्य और पाटकी में काम किया है। कोर्ट ने उन्हें 14 दिनों की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। डीआरआइ अधिकारियों के मुताबिक रान्या राव दुबई से एमिरेट्स फ्लाइट से भारत लौटी थीं। सुरक्षा एजेंसियां पहले से ही उनकी एक्टिविटी पर नजर रख रही थीं, क्योंकि वह पिछले 15 दिनों में चार बार दुबई जा चुकी थीं। रान्या के अपने कपड़ों में सोना छिपाए हुई थीं। जिसकी कीमत 12.56 करोड़ रुपये है। इसके अलावा पुलिस ने उसके घर पर भी रेड की। वहां से 2 करोड़ कीमत का सोना और 2 करोड़ रुपये कैश बरामद हुआ।

केंद्र ने केदारनाथ और हेमकुंड साहिब रोप-वे को मंजूरी दी

- केदारनाथ में रोप-वे से 36 मिनट में होगी 9 घंटे की यात्रा

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। केंद्र ने केदारनाथ धाम और हेमकुंड साहिब के लिए रोप-वे प्रोजेक्ट को मंजूरी दे दी। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि अभी जो यात्रा 8-9 घंटे में पूरी होती है, वह घटकर 36 मिनट की हो जायेगी। इसमें 36 लोगों के बैठने की क्षमता होगी। राष्ट्रीय रोपवे विकास कार्यक्रम के तहत उत्तराखंड में सोनप्रयाग से केदारनाथ तक (12.9 किमी) और गोविंदघाट से हेमकुंड साहिब जी तक (12.4 किमी) का रोपवे बनेगा। नेशनल हाइवे लॉजिस्टिक मैनेजमेंट इसे बनायेगा। केदारनाथ में बनने वाला रोपवे सबसे एडवांस्ड ट्राई केबल डिटेचेबल गोंडोला तकनीक वाला होगा। इससे हर घंटे 1800 और हर दिन 18 हजार तीर्थ यात्रियों को पहुंचाया जायेगा। बताते चलें कि केदारनाथ जाने में एक तरफ से कम से कम 9 घंटे का समय लगता है। रोपवे बन जाने के बाद यह यात्रा 36 मिनट में होगी। केदारनाथ मंदिर तक की यात्रा गौरीकुंड से 16 किमी की कठिन चढ़ाई है। अभी इसे पैदल, पालकी, टट्टू और हेलिकॉप्टर से पूरा किया जाता है।

उधर, गोविंदघाट से हेमकुंड साहिब तक 12.4 किमी रोपवे बनेगा। इसमें 2,730.13 करोड़ रुपये खर्च होंगे। रोपवे से हर घंटे 1100 और हर दिन 11 हजार यात्रियों को ले जाया जायेगा। हेमकुंड साहिब उत्तराखंड के चमोली जिले में है। इसकी समुद्र तल से ऊंचाई 15 हजार फीट है। यहां स्थापित गुरुद्वारा मई से सितंबर के बीच साल में लगभग 5 महीने के लिए खुलता है। हर साल लगभग 2 लाख तीर्थयात्री यहां आते हैं।

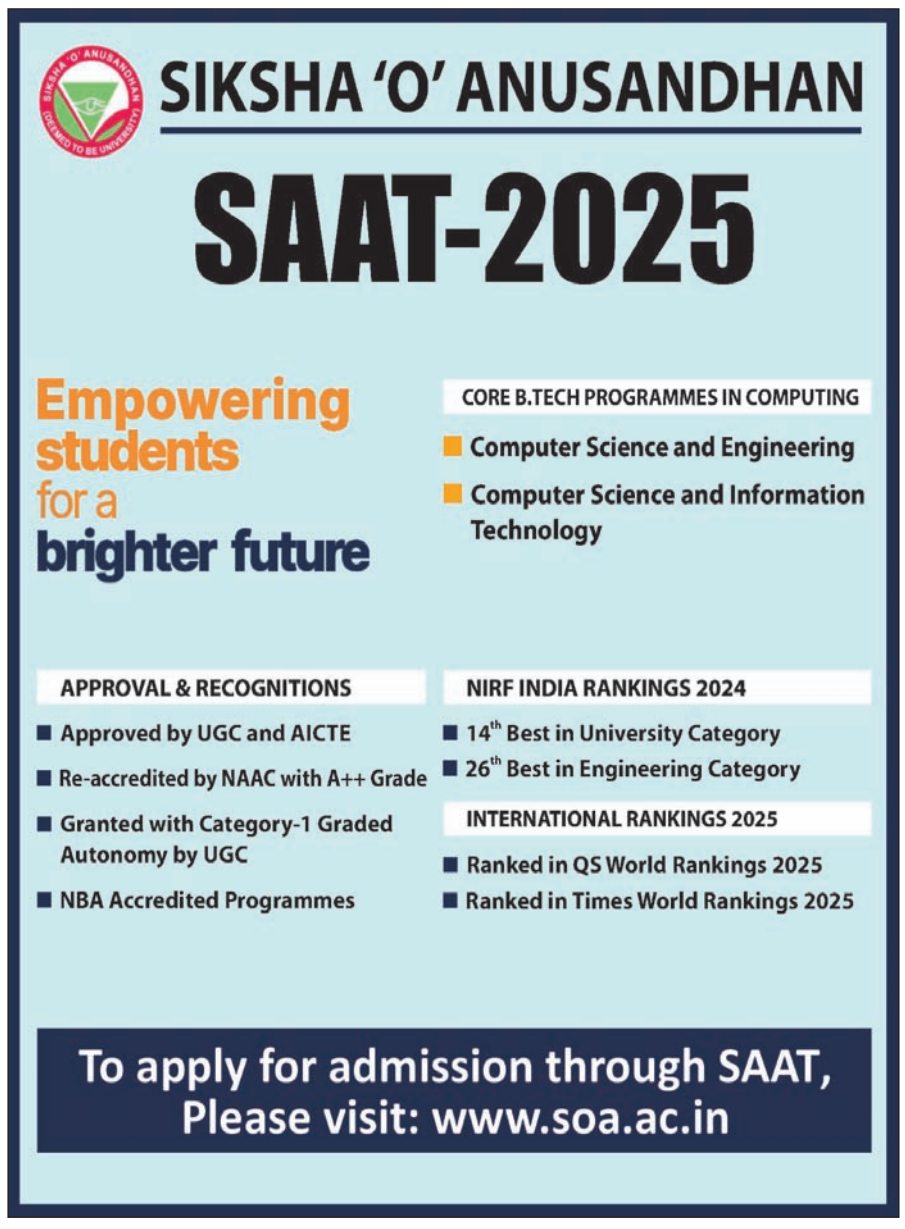

आजाद सिपाही
रांची, गुरुवार, 06 मार्च, 2025
www.azadsipahi.in
04

केंद्र सरकार झारखंड के साथ सौतेला व्यवहार कर रही : राधाकृष्ण किशोर

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड सरकार द्वारा तीन मार्च को पेश किये गये आम बजट पर सदन में दो दिनों तक चर्चा हुई। इस चर्चा में 15 सदस्यों ने भाग लिया। इस दौरान सदस्यों के सुझाव, आपत्ति और प्रतिक्रियाओं पर जवाब देते हुए वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार झारखंड के साथ सौतेला व्यवहार कर रही है। उन्होंने कहा कि केंद्रीय करों में राज्य की हिस्सेदारी कोई भीख नहीं है। यह झारखंड का संवैधानिक अधिकार है। उन्होंने कहा कि अब तक अनुदान की केवल 5736 करोड़ की राशि ही राज्य को प्राप्त हुई है। इतना ही नहीं इसमें लगातार कमी की जा रही है। जल जीवन मिशन का 6000 करोड़ के लिए हम बैठे हैं, लेकिन केंद्र अपने हिस्से की छह

हजार करोड़ की राशि नहीं दे रहा। वृद्धावस्था पेंशन, विधवा पेंशन मद की 141 करोड़ की राशि नहीं दे रहा। इस कारण अक्टूबर माह से पेंशन का भुगतान प्रभावित है। इतना ही नहीं केंद्र मनरेगा के मजदूरी मद में 500 करोड़ और मैटेरियल मद की 600 रुपये करोड़ की राशि नहीं दे रहा है। दूसरी ओर भाजपा के सदस्य केंद्र से राज्य को सहयोग किये जाने की बात करते हैं। आज पहली बार भाजपा विधायक सरकार पर विभिन्न तरह के आरोप लगाते हुए सदन का बहिष्कार भी किये। बजट पर चर्चा के दौरान भाजपा विधायक नीरा यादव की बात खत्म होते ही, भाजपा विधायक सदन से बाहर निकल गये। हालांकि भाजपा के सहयोगी जदयू, एलजेपी और आजसू के विधायक सदन में ही बैठे रहे और अपनी अपनी बात कही। उन्होंने कहा कि ये एलपीजी सिलेंडर पर सब्सिडी का सवाल खड़ा करते हैं। हम पूछते हैं कि उज्ज्वला योजना के तहत 38.49 लाख रुपये से बांटे गये चूल्हों का क्या हुआ। मोमेंटम झारखंड पर खर्च की गयी एक सौ करोड़ की राशि का क्या हुआ। 210 एमओयू हुए लेकिन 131 कंपनियां पीछे हट गयीं। 35 कंपनियों को पानी, बिजली और जमीन नहीं मिली।

अनुसूचित जाति की हितैषी होने का केवल ढिंढोरा पीटती है भाजपा

राधाकृष्ण किशोर ने कहा कि भाजपा केवल अनुसूचित जातियों के हितैषी होने का ढिंढोरा पीटती है। इनका काम केवल उनके घर में खाना खाकर दिखावा करने भर होता है। पूर्व मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा के कार्यकाल में 2008 में अनुसूचित जाति सलाहकार परिषद के गठन की अधिसूचना जारी हुई। नियमावली भी बनी लेकिन परिषद का गठन नहीं हुआ। वर्तमान सरकार ने इसे मूर्त रूप देने का फैसला किया है।

विधायक श्वेता सिंह ने सदन में बोकारो डीसी की शिकायत की

संसदीय कार्य मंत्री ने संज्ञान लिया, कहा- कार्रवाई होगी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। कांग्रेस विधायक श्वेता सिंह ने बोकारो डीसी की शिकायत सदन के अंदर सूचना के माध्यम से की। विधायक ने स्पीकर रबींद्रनाथ महतो के जरिये सदन को बताया कि उनके साथ फोन पर बोकारो डीसी ने बदतमीजी की है। उन्होंने मांग की है कि ऐसे अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई हो। इसपर चंदनकियारी के विधायक उमाकांत रजक ने श्वेता सिंह का साथ दिया। रजक ने कहा कि बोकारो डीसी बहुत ही उद्दंड हैं। हम लोग जनप्रतिनिधि हैं। हमारा विशेषाधिकार है।

कार्रवाई होगी, किसी का अपमान बर्दाश्त नहीं : श्वेता सिंह और उमाकांत रजक की शिकायत पर स्पीकर रवींद्रनाथ महतो ने कहा कि संसदीय कार्य मंत्री ने संज्ञान ले लिया है। सभी के सम्मान की रक्षा होगी। जिसके

बाद राधाकृष्ण किशोर ने श्वेता सिंह से कहा कि जिस तरीके से आपने शिकायत की है। यह प्रतीत हो रहा है कि आप हर्ट हुई हैं। पक्ष हो या विपक्ष। सभी का विशेषाधिकार है और सबकी विशेषाधिकार की रक्षा होगी। कार्रवाई होगी।

महत्वपूर्ण खबरें

अपना घर आश्रम में मंदबुद्धि निराश्रित प्रभुजी को कराया गया भोजन

रांची (आजाद सिपाही)। मंगल राधिका सदानंद सेवाधाम पुंदाग के प्रांगण में सद्गुरु कृपा अपना घर आश्रम (सत्य-प्रेम सभागार) में बुधवार को 37 मंदबुद्धि दिव्यांग निराश्रित प्रभु एवं सेवादार साथियों के बीच अन्नपूर्णा सेवा भोजन प्रसादी का वितरण किया गया। 19 से 28 फरवरी तक 10 दिनों में लगभग 1880 निराश्रित प्रभुजी एवं उनकी देखभाल करने वाले सेवादार साथियों के बीच अन्नपूर्णा सेवा भोजन प्रसाद का वितरण किया गया। इस पुनीत कार्य को सर्वेश कुमार, प्रेमचंद मिश्रा, अंकित अग्रवाल, आकांक्षा अग्रवाल, मनोज कुमार, मदन प्रसाद सोनी, राहुल कुमार, मधु छावनिका, अंशु अभिषेक, ऋषि कुमार, ज्ञानचंद शर्मा, नवीन मोदी के सौजन्य से सभी निराश्रित प्रभुजी को भोजन प्रसादी खिलाकर सेवा की गयी। सभी ने ट्रस्ट के सदस्यों को बहुत बहुत धन्यवाद एवं अपना अमूल्य आशीर्वाद दिया। अन्नपूर्णा सेवा के पुनीत कार्य में ट्रस्ट के अध्यक्ष डुंगरमल अग्रवाल, उपाध्यक्ष निर्मल जालान, राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल सचिव मनोज कुमार चौधरी संस्था के वरिष्ठ सदस्य पूर्णमल सर्राफ, चिरंजीलाल खंडेलवाल, सुरेश अग्रवाल, सज्जन पाड़िया,नंद किशोर चौधरी, संजय सर्राफ, विशाल जालान, पवन कुमार पोद्दार सहित अन्य सदस्य उपस्थित थे।

समीर मोहंती ने केंद्र पर साधा निशाना, कहा-

विपक्ष को समझ आ गया है कि राज्य का विकास हेमंत ही करेंगे

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड विधानसभा में बुधवार को बजट पर चर्चा के दौरान समीर मोहंती ने बजट के समर्थन में बोलते हुए कहा कि विपक्ष ने अपने आचरण में बदलाव लाया है। अब विपक्ष भी समझ गया है कि राज्य का विकास हेमंत सोरेन ही कर सकते हैं। केंद्र पर निशाना साधते हुए कहा कि केंद्र ने राजनीतिक रोटी सेंकने का काम किया।

कभी राम मंदिर तो कभी प्रयागराज कर देश को विचलित करने का काम किया। अमृत महोत्सव की बात करने से क्या अमृत काल मिल गया। अगर प्रजा

दुखी हो तो देश के राजा को नरक में जगह मिलेगी। हेमंत सोरेन में हिम्मत है कि अंगूठा छाप वाले को भी पैसा देने का काम कर रहे हैं।

बजट सत्र के दौरान होली पर्व का पूर्व घोषित अवकाश एक दिन और बढ़ा

होली का अवकाश 12 से 16 मार्च की जगह 12 से 17 मार्च तक रहेगा

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। झारखंड विधानसभा के बजट सत्र के दौरान होली पर्व के लिए पूर्व से 12 मार्च से 16 मार्च तक घोषित अवकाश को एक दिन और बढ़ा दिया गया है। बुधवार को स्पीकर रवींद्रनाथ महतो की अध्यक्षता में हुई कार्य मंत्रणा समिति की बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि षष्ठम विधानसभा के वर्तमान बजट सत्र में अब होली का अवकाश 12 से 16 मार्च की जगह 12 से 17 मार्च तक रहेगा। 17 मार्च के लिए पूर्व से घोषित कार्य सूची

22 मार्च को होगा। पहले शनिवार होने की वजह से 22 मार्च को अवकाश घोषित था। कार्यमंत्रणा समिति की बैठक में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, संसदीय कार्य मंत्री राधाकृष्ण किशोर, कांग्रेस विधायक दल के नेता प्रदीप यादव, माले विधायक अरूप चटर्जी, लोजपा (आर) के विधायक, जनार्दन पासवान, भाजपा विधायक डॉ नीरा यादव, कल्पना सोरेन, मथुरा महतो, बसंत सोरेन मौजूद थे।

अखिल भारतीय हास्य कवि सम्मेलन 12 को

रांची (आजाद सिपाही)। रांची में कवि सम्मेलन आयोजन समिति की ओर से 12 मार्च की रात 9 बजे से हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा। हरमू रोड स्थित मारवाड़ी भवन में होली के अवसर पर होने वाले आयोजन को लेकर कवि सम्मेलन आयोजन समिति के अध्यक्ष अशोक नारसरिया और मुख्य संयोजक सुरेश चंद्र अग्रवाल ने बुधवार को बताया कि इस वर्ष भी उत्साह एवं उमंग के पावन पर्व होली के अवसर पर कवि सम्मेलन आयोजित की जायेगा। इसमें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के ख्याति प्राप्त हास्य कवि सुनील पॉल (लाफ्टर चैलेंजर), ठहाकों के सरदार जानी बैरागी, हास्य व्यंग कवि रमेश मुस्कान, इटावा वीर रस के कवि गौरव चौहान, श्रृंगार रस की प्रसिद्ध कवयित्री डॉ. भुवन मोहिनी और हास्य-व्यंग्य के कवि शशिकांत यादव पहुचेंगे। उन्होंने बताया कि इस बार आयोजन में समिति की ओर से चार नये सदस्यों अंजय सरावगी, हरिशंकर कनोडिया, निर्भय शंकर हरित एवं चंद्र प्रकाश धेलिया को जोड़ा गया है। वहीं समिति के सचिव अनिल कुमार अग्रवाल ने बताया कि कवि सम्मेलन में प्रवेश नि:शुल्क है और महिलाओं के बैठने की विशेष व्यवस्था की गयी है। दर्शकों के लिए एलइडी टीवी भी मैदान में लगाये जायेंगे।

स्पीकर की मनमानी के चलते भाजपा ने किया वॉकआउट : बाबूलाल

सत्ता पक्ष के इशारे पर विपक्ष की बातों को दबाने की साजिश की जा रही है

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने कहा है कि विधानसभा अध्यक्ष सदन को मनमाने ढंग से चलाना चाहते हैं। सत्ता पक्ष को बोलने में तरजीह दी जाती है, आसन की ओर से ज्यादा समय दिये जाते हैं। उन्होंने कहा कि वहीं जब विपक्ष के सदस्य बोलने के लिए खड़े होते हैं तो बार-बार टोका-टोकी की जाती है। बाबूलाल मरांडी ने ये बातें बुधवार को विधानसभा परिसर में मीडिया से बात करते हुए कहीं। उन्होंने कहा कि भाजपा की विधायक नीरा यादव जब सदन में बोल रही थीं तो सत्ता पक्ष के विधायकों ने टोका-टोकी की, लेकिन यह यह दुर्भाग्यजनक है

कि टोका-टोकी करने वाले सदस्यों को आसन से संरक्षण प्राप्त हुआ। बाबूलाल ने कहा कि नीरा यादव ने स्पीकर से टोका-टोकी में बर्बाद समय के बदले समय की मांग की तो अध्यक्ष ने अस्वीकृत कर दिया। यह पूरी तरह से मनमानी है और सत्ता पक्ष के इशारे पर विपक्ष की बातों को दबाने की साजिश है। इसे बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि भाजपा के विधायकों ने इस मुद्दे पर विरोध दर्ज करते हुए सदन से वॉकआउट किया।

झामुमो की ओर से खनिजों की नाकेबंदी की घोषणा के सवाल पर मरांडी ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि यह झामुमो की पुरानी आदत है। ये सब केवल कोयले की अवैध ढुलाई के लिए महज दिखावा है। उन्होंने कहा कि प्रतिदिन धनबाद, बोकारो से 400 से 500 ट्रक कोयले की अवैध ढुलाई हो रही है। इसे राज्य सरकार के इशारे पर पुलिस प्रशासन का पूरा संरक्षण प्राप्त है। वहीं उन्होंने केंद्र सरकार पर बकाये की बात पर कहा कि बार बार ब्रेकअप मांगने के बाद भी झामुमो यह नहीं बताता है कि कब का कितना बकाया है। उन्होंने कहा कि आज जिस कांग्रेस पार्टी की गोद में बैठकर झामुमो खेल रहा है, खा रहा है, ये सब उसी कांग्रेस पार्टी की देन है। राज्य में चाहे सीसीएल, बीसीसीएल, एचइसी के विस्थापितों की समस्या हो इसके समाधान के लिए कांग्रेस पार्टी ने 60 वर्षों के शासन में कोई चिंता नहीं की। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार राज्य की समस्याओं के समाधान के लिए तत्पर है, लेकिन कांग्रेस झामुमो को समाधान की चिंता नहीं। इन्हें राज्य को लूटने का केवल अवसर चाहिए।

साहित्योत्सव में शामिल होंगे डॉ बीरेंद्र कुमार महतो

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली की तरफ से रविंद्र भवन, दिल्ली में 7 से 12 मार्च तक एशिया का सबसे बड़ा साहित्योत्सव आयोजित किया जा रहा है। इस आयोजन में एशिया के 500 से अधिक साहित्यकार भागीदारी करेंगे। उत्सव के दौरान साहित्य की अलग-अलग विधाओं पर लगभग 150 से अधिक आयोजन होंगे। ये आयोजन सभी 24 भारतीय भाषाओं के होंगे। एशिया के इस बड़े आयोजन में रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय के नागपुरी विभाग के प्राध्यापक डॉ बीरेंद्र कुमार महतो

को भी आमंत्रित किया गया है। डॉ महतो नागपुरी भाषा में अपनी बातें रखेंगे। गौरतलब हो कि डॉ महतो पिछले वर्ष भी साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित विश्व के सबसे बड़े साहित्योत्सव में भी भाग ले चुके हैं।

छात्रों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया

रांची (आजाद सिपाही)। बुधवार को राम लखन सिंह यादव कॉलेज में एनएसएस छात्रों द्वारा सात दिनों से अपने द्वारा साफ-सफाई पौधारोपण नशामुक्ति आदि कार्य का विवरण दिया गया। एनएसएस के आरयू प्रभारी ब्रजेश मिश्रा, राम लखन सिंह यादव कॉलेज के प्राचार्य डॉ बिष्णुचरण महतो, संतोष महतो ने छात्रों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। डॉ नीतू, डॉ मनीष टुडू, डॉ आरती, डॉ कांति, डॉ अजीत मुंडा, संजय तिर्की, रवि वर्मा, निशा कुमारी आदि उपस्थित थे।

अंतरराष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम का आयोजन

रांची (आजाद सिपाही)। डोरंडा कॉलेज एनएसएस इकाई द्वारा बुधवार को अंतरराष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें भाषण एवं नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ राजकुमार शर्मा मुख्य अतिथि के तौर पर मौजूद थे। मंगलवार को हुई प्रतियोगिताओं के विजेता और बुधवार के विजेताओं को कल छह मार्च रांची विश्वविद्यालय में होने वाले कार्यक्रम में हिस्सा लेंगे। एनएसएस कार्यक्रम पदाधिकारी प्रो कंचन मुंडा एवं डॉ एमलिन केरकेट्टा की देखरेख में कार्यक्रम आयोजित हुए। जिसमें एनएसएस वॉलिंटियर्स रौनक जमील कंचन संकल्प अविनाश जरीन खुशी संध्या इत्यादि मौजूद थे।

सेंट जेवियर्स कॉलेज में 'मीठे पानी के मोती संवर्धन' विषय पर इंटरएक्टिव सत्र

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। अर्थ ऑब्जर्वेशन एंड कंजर्वेशन सोसाइटी (इओसीएस), सेंट जेवियर्स कॉलेज, रांची ने आइक्यूएसी के सहयोग से कॉलेज परिसर में 'मीठे पानी के मोती संवर्धन' पर एक इंटरएक्टिव सत्र का आयोजन किया। मोती पालन के एड-ऑन सर्टिफिकेट कोर्स और अन्य विभागों के विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। भद्राज मोती फार्मिंग और ट्रेनिंग सेंटर, रामनगर, पश्चिम चंपारण, बिहार से आमंत्रित मोती संवर्धन उद्यमी नितिन भारद्वाज और कृतिका भारद्वाज ने छात्रों को मीठे पानी के मोती संवर्धन के महत्वपूर्ण पहलुओं और इसकी वर्तमान समय में उपयोगिता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कॉलेज के रजिस्ट्रार फादर डॉ प्रभात सोरेंग ने विद्यार्थियों को संबोधित किया और आमंत्रित वक्ताओं का स्वागत किया। पूरा सत्र प्राणिशास्त्र विभाग के डॉ रितेश कुमार शुक्ला के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। अंत में अनुष्का चौधरी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

वन नेशन, वन इलेक्शन पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

परिचर्चा सत्र में विद्यार्थियों ने विषय से जुड़े प्रश्न पूछे और अपने दृष्टिकोण साझा किये

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। बुधवार को फैकल्टी ऑफ लीगल स्टडीज के द्वारा वन नेशन, वन इलेक्शन विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन बहुउद्देश्यीय हॉल में किया गया। कार्यशाला के मुख्य वक्ता सह विशिष्ट अतिथियों-राजीव कुमार-प्रांत प्रचार प्रमुख, राष्ट्रीय स्वयंसवक संघ, जाट शंकर चौधरी, पूर्व आइएएस एवं राजीव रंजन मिश्रा, सामाजिक कार्यकर्ता और पूर्व संगठन सचिव, एबीवीपी का स्वागत कुलपति प्रो डॉ एसपी अग्रवाल ने पुष्पगुच्छ और स्मृति चिह्न भेंट कर किया। इसके बाद मुख्य वक्ताओं ने कार्यशाला के विभिन्न सत्रों में संवैधानिक एवं

कानूनी पहलुओं, प्रशासनिक एवं राजनीतिक प्रभावों, आर्थिक प्रभावों और व्यावहारिक चुनौतियों पर गहन चर्चा की। कार्यशाला का उद्देश्य भारत में एक साथ चुनाव कराने की संभावना, इसकी संवैधानिक एवं प्रशासनिक चुनौतियों, राजनीतिक प्रभाव और आर्थिक लाभों पर विचार-विमर्श करना था।

विशेषज्ञों ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि यह प्रणाली लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को सुदृढ़ कर सकती है, इसके क्रियान्वयन के लिए व्यापक विचार-विमर्श और संवैधानिक संशोधनों की आवश्यकता होगी। एक राष्ट्रीय बहस आवश्यक है, जिसमें सभी हितधारकों की राय ली जाये और देशहित में उचित निर्णय लिया जाये। इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के विधि विशेषज्ञ, शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया। छात्रों ने कार्यशाला में सक्रिय भागीदारी निभाई और अपने विचार प्रस्तुत किये। परिचर्चा सत्र में विद्यार्थियों ने विषय से जुड़े प्रश्न पूछे और अपने दृष्टिकोण साझा किये।

कार्यशाला के समापन पर राजीव रंजन मिश्रा ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि इस प्रकार की चर्चाएं जागरूकता बढ़ाने और लोकतांत्रिक प्रक्रिया को और अधिक सशक्त बनाने में सहायक होंगी।

लालपुर थानेदार ने बुलेट में मॉडिफाइड साइलेंसर के खिलाफ चलाया अभियान

रांची (आजाद सिपाही)। लालपुर थाना ने मोहराबादी इलाके में मॉडिफाइड साइलेंसर लागकर चलने वालों के खिलाफ अभियान चलाया है। इस दौरान 5 बुलेट को मोहराबादी में पकड़ा गया। वहीं, सैकड़ों गाड़ियों की जांच भी हुई है। इससे पूर्व परिवहन विभाग की ओर से पहले बुलेट में लगे मॉडिफाइड साइलेंसर की डेसीमल जांच हुई। इसमें सबसे ज्यादा आवाज और डेसीमल में अधिक होने वाले साइलेंसर को खुलवाया और गाड़ी को जब्त किया गया है। इतना ही नहीं, गाड़ी मालिकों को सख्त हिदायत दी गयी कि अगली बार से पकड़ाने पर सख्त कानूनी कार्रवाई के लिए तैयार रहेंगे।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
198000 Subscribers
VIEWERSHIP 3 Crore 90 lakh+
12 Crore + Watch Time (min)
YouTube Channel
1 Channel
आजाद सिपाही Subscribe NOW

भाजपा रांची महानगर की पूरी कमेटी ने छावा फिल्म देखी

भारतीय इतिहास को फिल्मों के माध्यम से नयी पीढ़ी तक पहुंचाना आवश्यक: बाबूलाल

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। भाजपा के सभी विधायक और रांची महानगर कमेटी के सदस्य बुधवार को भारतीय संस्कृति संघर्ष और इतिहास पर निर्मित छावा फिल्म देखने सिनेमा हाल पहुंची। भाजपा रांची महानगर के अध्यक्ष वरुण साहू की अध्यक्षता में फिल्म छावा को देखने के सुजाता सिनेमा हॉल पहुंची। इस अवसर पर मुख्य रूप से उपस्थित भारतीय जनता पार्टी झारखंड प्रदेश के अध्यक्ष और झारखंड के प्रथम मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने कहा कि भारत का इतिहास बहुत ही सुदृढ़ समृद्ध और संघर्ष पूर्ण रहा है। भारत के प्रत्येक नागरिक को भारतीय पूर्वजों द्वारा किये गये संघर्षों की जानकारी होनी बहुत आवश्यक है। भारतीय इतिहास पर बनी यह फिल्म छावा नयी पीढ़ी को यह बताने का कार्य कर रही है कि हमारी संस्कृति को बचाये रखने के लिए हमारे पूर्वजों ने कितनी कुर्बानियां दी हैं। रांची महानगर के अध्यक्ष वरुण साहू ने कहा कि सिनेमा समाज और इतिहास का दर्पण होती हैं। हमें अपने पूर्वजों द्वारा किये गये त्याग से सौहार्द और एकता सीखना चाहिए और समाज और संस्कृति को मजबूत बनाना चाहिए। इस अवसर पर मुख्य रूप से केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ, राज्यसभा सांसद आदित्य साहू, रांची विधायक सीपी सिंह, हटिया विधायक नवीन जयसवाल, भाजपा के समस्त विधायक के साथ बलराम सिंह, जितेंद्र वर्मा, राजू सिंह, अनीता वर्मा, संजीव चौधरी, सुरेश प्रसाद, विनय सिंह, बालसई महतो, पूनम जयसवाल, विकास रवि, अश्वनी सुखीजा, सोनू सिंह, प्रीति सिन्हा, रोमित नारायण सिंह, पायल सोनी, ओम प्रकाश पांडेय, सुवेश पांडेय, अशोक मिश्रा, सूर्य प्रताप, विनोद महतो, सुजीत शर्मा, ऋषि कक्कड़, आनंद कुमार, इंद्रजीत यादव, पीयूष विजयवर्गीय , पप्पू कुमार, राम मनोज साहू, रामजी प्रसाद, राम लगन राम, रणधीर सिंह, सुभाष अग्रवाल सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

हर्बल गुलाल की गुणवत्ता बनाये रखें : कंचन सिंह

कंचन सिंह ने बुंडू में पलाश हर्बल गुलाल उत्पादन इकाई का किया निरीक्षण

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, जेएसएलपीएस कंचन सिंह ने बुधवार को रांची जिले के बुंडू प्रखंड स्थित पलाश हर्बल गुलाल उत्पादन इकाई का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने उत्पादन प्रक्रिया का निरीक्षण किया और गुणवत्तापूर्ण एवं त्वरित उत्पादन सुनिश्चित करने के निर्देश दिये।

कंचन सिंह ने कहा कि हर्बल गुलाल की गुणवत्ता बनाये रखना सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए, ताकि उपभोक्ताओं को शुद्ध और सुरक्षित उत्पाद उपलब्ध हो। उन्होंने सुझाव दिया कि विभिन्न प्रकार के फूलों और प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग कर हर्बल गुलाल के और अधिक रंग विकसित किये जायें, जिससे उत्पाद की विविधता बढ़े और इसकी बाजार मांग में वृद्धि हो। साथ ही, उन्होंने उत्पादों की एकसमान ब्रांडिंग और पैकेजिंग सुनिश्चित करने के निर्देश दिये।

होली के त्योहार को ध्यान में रखते हुए सखी मंडल से जुड़ी महिलाएं 12 जिलों में हर्बल गुलाल का निर्माण कर रही हैं। इस के लिए वे पलाश के फूल, पालक, चुकंदर, तुलसी ऑयल परफ्यूम, गुलाब जल आदि केमिकल फ्री प्राकृतिक उत्पादों का उपयोग कर रही हैं, जिससे ये गुलाल त्वचा के लिए सुरक्षित रहते हैं। निरीक्षण के दौरान जेएसएलपीएस के जिला एवं राज्य स्तरीय अधिकारी और सखी मंडल से जुड़ी महिलाएं भी उपस्थित रहीं।

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से बुधवार को झारखंड मंत्रालय में स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) के अध्यक्ष- सह -प्रबंध निदेशक अमरेंदु प्रकाश, बोकारो स्टील प्लांट, (बीएसएल) के डायरेक्टर -इन- चार्ज बीरेंद्र कुमार तिवारी और माइंस (सेल, बोकारो) के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर विकास मनवटी ने मुलाकात की। मुख्यमंत्री के साथ उनकी यह शिष्टाचार भेंट थी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव अविनाश कुमार भी मौजूद थे।

झारखंड सरकार का बड़ा फैसला: एमपीडब्ल्यू कर्मियों के मानदेय में 5000 रुपये की बढ़ोतरी

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड सरकार ने राज्य के स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत मल्टी पर्पस वर्कर्स (एमपीडब्ल्यू) के मानदेय में बड़ी वृद्धि करते हुए 5000 रुपये की बढ़ोतरी का एलान किया है। अब एमपीडब्ल्यू कर्मियों को 25000 रुपये मानदेय मिलेगा, जिसका एरियर 1 सितंबर 2024 से प्रभावी होगा। इस फैसले से प्रदेश के लगभग 1800 एमपीडब्ल्यू कर्मियों में खुशी की लहर दौड़ गयी है। स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी ने इस अवसर पर कहा कि ये सभी कर्मचारी जान हथेली पर रखकर जनता की सेवा कर रहे हैं। हमारी सरकार उनकी मेहनत और समर्पण का पूरा सम्मान करती है। एमपीडब्ल्यू कर्मियों ने सरकार के इस फैसले पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि लंबे समय से वेतन बढ़ोतरी की मांग कर रहे थे। इस निर्णय से एमपीडब्ल्यू कर्मियों में उत्साह है। जल्द ही वे मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और स्वास्थ्य मंत्री डॉ इरफान अंसारी को सम्मानित करने की योजना बना रहे हैं। सरकार की यह पहल झारखंड में स्वास्थ्य सेवाओं को और सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

राजू राम ने सरकार का आभार जताया

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड सरकार ने एक ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए अनुसूचित जाति एवं जनजाति सलाहकार परिषद की स्थापना करने का फैसला किया है। यह निर्णय मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर के नेतृत्व में लिया गया है। इस निर्णय का स्वागत करते हुए, रांची महानगर कांग्रेस कमेटी अनुसूचित जाति विभाग के चेयरमेन राजू राम ने मुख्यमंत्री और वित्त मंत्री को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह निर्णय झारखंड में पिछड़े वर्ग के लोगों के विकास को बढ़ावा देगा। यह परिषद अनुसूचित जाति और जनजाति के लोगों के हितों की रक्षा और उनके विकास के लिए काम करेगी। यह निर्णय झारखंड में सामाजिक न्याय और समानता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

रिम्स पीजी में फिजियोलॉजी विभाग की टॉपर बनीं डॉ रूपम

रांची (आजाद सिपाही)। डॉ रूपम रिम्स पीजी (एमडी) में फिजियोलॉजी विभाग की टॉपर बनीं हैं। 71.13 प्रतिशत अंक एमडी फिजियोलॉजी में प्राप्त कर गोल्ड मेडलिस्ट हुई हैं। डॉ रूपम मूलतः गोमिया की रहने वाली हैं और अभी झारखंड सरकार में चिकित्सा पदाधिकारी के रूप में गिरिडीह के जामुआ में पदस्थापित हैं। डॉ रूपम ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता और पति गौतम तिवारी को दिया है। उनकी इस उपलब्धि पर उनके परिवार और मित्रों ने बधाई दी है। डॉ रूपम की सफलता ने झारखंड के युवाओं के लिए एक नयी प्रेरणा का स्रोत बनाया है। उनकी मेहनत और समर्पण ने उन्हें इस मुकाम तक पहुंचाया है।

इग्नू का 38वां दीक्षांत समारोह संपन्न

समारोह दिल्ली इग्नू मुख्यालय के साथ-साथ 39 केंद्रों पर भी आयोजित

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) का 38वां दीक्षांत समारोह संपन्न हुआ। इस समारोह में कुल 10684 छात्र डिग्री के लिए योग्य थे, जिनमें स्नातकोत्तर में 5202, स्नातक में 4128, डिप्लोमा में 857 और सर्टिफिकेट में 497 थे। बुधवार को आयोजित दीक्षांत समारोह दिल्ली इग्नू मुख्यालय के साथ-साथ 39 क्षेत्रीय केंद्रों पर भी आयोजित किया गया।

दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि डॉ धर्मेंद्र प्रधान, शिक्षा मंत्री भारत सरकार नयी दिल्ली ने मुख्यालय में दीक्षांत भाषण दिया। उन्होंने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के योगदान की प्रशंसा की और कहा कि यह विश्वविद्यालय 2035 तक 50 प्रतिशत सकल नामांकन अनुपात के लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। बुधवार को रांची केंद्र में आयोजित दीक्षांत समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो सुनील चंद्र दुबे शामिल हुए। इग्नू क्षेत्रीय केंद्र रांची के वरिष्ठ निदेशक डॉ एस मोहंती ने कहा कि इग्नू ने वर्षों से जनता की शिक्षण आकांक्षाओं को पूरा करने में योगदान दिया है। उन्होंने संस्थान और शिक्षार्थियों के बीच की दूरी को कम करने के लिए तकनीकी उपायों को अपनाने की भी चर्चा की। इस समारोह में नीतेश कुमार महतो को राजनीति शास्त्र में स्नातक के लिए गोल्ड मेडल दिया गया। उन्हें नयी दिल्ली मुख्यालय में डिग्री एवं मेडल दी गयी।

रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ के आवास पर होली मिलन समारोह 9 मार्च को

हास्य मेव जयते रांची का होली पर कई सांस्कृतिक कार्यक्रम

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। आगामी रविवार नौ मार्च को हास्य मेव जयते, रांची के सानिध्य में होली मिलन समारोह सहित सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन रखा गया है। हास्य मेव जयते, रांची के मुख्य संरक्षक केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ हैं। समिति के अध्यक्ष मुकेश काबरा ने बताया हमारे अभिवावक संजय सेठ की अध्यक्षता में यह कार्यक्रम पिस्कामोड़ के केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ के आवास पर रखा गया है।

इस अवसर पर 9 मार्च रविवार को होली का रंगारंग कार्यक्रम, रंगारंग सांस्कृतिक प्रोग्राम सहित भजनों के आनंद संग होली के गीत सहित हास्य कविताओं का हम सभी आनंद उठा सकेंगे। यह आयोजन पूर्वाह्न 11 बजे से अपराह्न दो बजे तक चलेगा। इस अवसर पर मोटे अनाज के बयंजन का भी लुपत हम उठा सकेंगे। बाहर के कलाकारों द्वारा नृत्यनाटिका संग होली के रंगारंग कार्यक्रम भी पेश किये जायेंगे। इस अवसर पर कई मुख्य व विशिष्ट अतिथियों को भी आमंत्रित किया गया है। आयोजन की तैयारी में नीरज कुमार, राज वर्मा, मनोज तिवारी, प्रमोद सारस्वत, संजय पोद्दार, सुरेश पांडे, ललन श्रीवास्तव, संतोष सेठ, कमलजीत सिंह, शंटी, ऐश्वर्य सेठ, आनंद श्रीवास्तव, नीतू सिंह, कुमुद झा, संजय जयसवाल, नीरज चौधरी सहित काफी संख्या में लोग लगे हुए हैं।

रक्षा राज्यमंत्री से मिले राजेंद्र प्रसाद

परिसीमन कराने और विधानसभा-लोकसभा सीटों को बढ़ाने को लेकर सौंपा मांग पत्र

राज्य की वर्तमान राजनीति परिस्थितियों पर हुई विस्तार से चर्चा

रक्षा राज्यमंत्री ने राजेंद्र प्रसाद को शॉल ओढ़ा कर किया सम्मानित

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। मूलवासी सदान मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद ने बुधवार को रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ से रांची स्थित उनके आवास पर मुलाकात की और परिसीमन कराने, लोकसभा-विधानसभा की सीटों को बढ़ाने को लेकर भारत सरकार से पहल करने का आग्रह किया। राजेंद्र प्रसाद ने रक्षा राज्यमंत्री को ओबीसी फर्जीवाड़ा सर्वेक्षण, पेसा कानून और पंचायत चुनावों में मूलवासी सदानों को अधिकारों से किस तरह वंचित किया गया, इन सभी बातों से अवगत कराया।

राजेंद्र प्रसाद और रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ के बीच झारखंड की वर्तमान राजनीतिक परिस्थितियों पर विस्तार से चर्चा हुई। वार्ता में मूलवासी सदान मोर्चा के मीडिया प्रभारी विशाल कुमार सिंह भी शामिल थे। रक्षा राज्यमंत्री संजय सेठ ने मूलवासी सदान मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद को इस अवसर पर अपने आवास पर शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

दूसरे सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड ने साउथ अफ्रीका को 50 रन से हराया

चैंपियंस ट्रॉफी फाइनल में भारत का मुकाबला न्यूजीलैंड से होगा

एजेंसी

लाहौर। न्यूजीलैंड ने चैंपियंस ट्रॉफी फाइनल में प्रवेश कर लिया है, जहां उसका सामना भारतीय टीम से दुबई के मैदान पर 9 मार्च को होगा। बुधवार को लाहौर में न्यूजीलैंड ने दूसरे सेमीफाइनल में साउथ अफ्रीका को 50 रन से हराया।

363 रन का टारगेट चेज कर रही अफ्रीकी टीम 9 विकेट पर 312 रन ही बना सकी। कप्तान मिचेल सैंटनर ने 3 विकेट झटके। मैट हेनरी और ग्लेन फिलिप्स को 2-2 विकेट मिले। एक-एक विकेट माइकल ब्रेसवेल और मिचेल सैंटनर को मिले। साउथ अफ्रीका से डेविड मिलर ने शतक बनाया। उन्होंने 67 बॉल पर सेंचुरी जड़ी। कप्तान टेम्बा बावुमा (56 रन) और रासी वान डर डसन (69 रन) ने अर्धशतक बनाये।

कीवियों की ओर से रचिन रवींद्र (108 रन) और केन विलियम्सन (102 रन) ने शतकीय पारियां खेलीं, जबकि डेरिल मिचेल (49 रन) और ग्लेन फिलिप्स (49 रन) फिफ्टी बनाने से चूक गये। लुंगी एनगिडी ने 3 विकेट, रबाडा को 2 विकेट और वायन मुल्डर को एक विकेट मिला।

झारखंड होमगार्ड, अग्निशमन विभाग की आज से खेलकूद प्रतियोगिता

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड होमगार्ड एवं अग्निशमन विभाग की छह मार्च से खेलकूद प्रतियोगिता शुरू होगी। तीन दिनों तक चलने वाले इस प्रतियोगिता के उद्घाटन समारोह में राज्यपाल संतोष गंगवार शामिल होंगे। वहीं इस प्रतियोगिता के समापन समारोह में सीएम हेमंत सोरेन शामिल होंगे। धुर्वा स्थित होमगार्ड मैदान में प्रतियोगिता आयोजित किया जायेगा। इस प्रतियोगिता में 450 प्रतिभागी भाग लेंगे। प्रतियोगिता के अंतर्गत 10 खेलों का आयोजन किया जायेगा। जिसमें एथलेटिक्स, फुटबॉल और वॉलीबॉल शामिल है।

पूर्व मध्य रेल
ई-निविदा सूचना

मंडल रेल प्रबंधक (वाणिज्य)/पूर्व मध्य रेल/धनबाद द्वारा निम्नलिखित कार्य के निष्पादन के लिए ई–निविदा आमंत्रित की जाती है।

ई–निविदा सं. C-710-TKS-2-GCT-25, कार्य का नाम, स्थान तथा समापन अवधि : टोकीसूद–2–(TKS) स्टेशन पर गति शक्ति मल्टी–मॉडल कार्गो टर्मिनल (जीसीटी) का पूरी तरह से रेलवे भूमि पर पैंतीस वर्ष (35 वर्ष) अर्थात 420 महीने की अवधि के लिए विकास। **टोकीसूद स्टेशन पर गति शक्ति मल्टी–मॉडल कार्गो टर्मिनल (जीसीटी) के विकास का लगभग लागत :** रू. 44,41,56,224/–, **ब्याने की राशि :** रू. 4,44,15,700/–, **निविदा बंद होने एवं खुलने की तारीख तथा समय :** ई–निविदा बंद होने की तारीख 26.03.2025 को 15.00 बजे, ई–निविदा खुलने की तारिख 26.03.2025 को 15:30 बजे के बाद। **वेबसाईट, का विवरण: http://www.ireps.gov.in**

ई–निविदा के तहत मैनुअल प्रस्ताव स्वीकार नहीं की जाएगी।

रेल प्रशासन के पास किसी/समस्त प्रपत्र को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित रहेगा।

मंडल रेल प्रबंधक (वाणिज्य)
पूर्व मध्य रेल/धनबाद

पीआर/2239/डीएचएन/सीओएमएल./टी/24–25/36

दक्षिण पूर्व रेलवे, निविदा

मंडल रेल प्रबंधक/इंजीनियरिंग/चक्रधरपुर द्वारा भारत के राष्ट्रपति की ओर से तथा उनके नाम पर निम्नलिखित कार्यों के लिए खुली ई-निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं: **क्रम सं. 1; निविदा सूचना संख्या: सीकेपी-साउथ-24-25-52; कार्य का नाम:** वरिष्ठ मंडल इंजीनियर (दक्षिण) /चक्रधरपुर के अधीन सहायक मंडल अभियंता/चाईबासा के अधिकार क्षेत्र में राजखरसावां जंक्शन-डांगोवापोसी के बीच आरबोके-3, 13, 15, 29 और 36 तथा डांगोवापोसी-पाड़ा पहाड़ जंक्शन के बीच आरबोके-47 के मौजूदा लो हाइट सबवे (एलएचएस) के सुधार कार्य, जिसमें विंग वॉल, साइड ड्रेन, सेस मरम्मत, बोल्डर पिचिंग, जल निकासी सुधार कार्य आदि शामिल हैं; **निविदा मूल्य:** ₹ 1,79,09,731.59; **बयाना राशि:** ₹ 2,39,600.00; **निविदा खुलने की तिथि:** 24.03.2025। **क्रम सं. 2; निविदा सूचना संख्या: सीकेपी-वेस्ट-24-25-50; कार्य का नाम:** (1) एसएसई (पी.वे.)/झारसुगुड़ा के अधिकार क्षेत्र में धारुडिही-धूतरा के बीच डाउन लाइन में 1.417 टीकेएम के लिए ट्रैक नवीनीकरण (टीआरआर-पी); (2) एसएसई (पी.वे.)/झारसुगुड़ा के अधिकार क्षेत्र में धारुडिही-बागडिही के बीच डाउन लाइन में 1.5 टीकेएम के लिए ट्रैक नवीनीकरण (टीआरआर-पी); (3) एसएसई (पी.वे.)/झारसुगुड़ा के अधिकार क्षेत्र में धारुडिही-बागडिही के बीच डाउन लाइन में 1.502 टीकेएम के लिए ट्रैक नवीनीकरण (टीआरआर-पी); (4) एसएसई (पी.वे.)/राजगंगपुर के अधिकार क्षेत्र में एसईजे का नवीनीकरण; (5) सहायक मंडल अभियंता/झारसुगुड़ा के अधिकार क्षेत्र में टर्न आउट हिस्से का बैलास्ट नवीनीकरण; (6) एसएसई (पी.वे.)/झारसुगुड़ा के अंतर्गत विविध पी.वे. फिटिंग का नवीनीकरण; **निविदा मूल्य:** ₹ 1,11,35,782.97; **बयाना राशि:** ₹ 2,05,700.00; **निविदा खुलने की तिथि:** 28.03.2025। **निविदा प्रपत्र की लागत:** 0.00 (दोनों निविदाओं के लिए)। निविदाओं को वेबसाइट www.ireps.gov.in पर देखा जा सकता है। निविदाकार/बोलीदाताओं के पास कक्षा-III डिजिटल सिग्नेचर प्रमाणपत्र होना अनिवार्य है एवं उन्हें आईआरईपीएस पोर्टल पर पंजीकृत होना चाहिए। केवल पंजीकृत निविदाकार/बोलीदाता ही ई-निविदा प्रक्रिया में भाग ले सकते हैं। ई-निविदा में भाग लेने के समय सभी प्रासंगिक दस्तावेज अपलोड करना अनिवार्य है। किसी भी स्थिति में इस कार्य के लिए मैनुअल निविदा स्वीकार नहीं की जाएगी और उसे नजरअंदाज कर दिया जाएगा। **नोट:** ई-निविदा प्रपत्र सभी निविदाकारों को निःशुल्क प्रदान किए जाएंगे। (रेलवे बोर्ड का पत्र संख्या: 2020/सीई-I/सीटी/3ई/जीसीसी/पॉलिसी, दिनांक: 16.07.2020)।
(PR-1203)

सांसदों ने आधारभूत संरचनाओं के विकास पर जोर दिया

सोनपुर मंडल संसदीय समिति की बैठक

महाप्रबंधक छत्रसाल सिंह ने सांसदों के बहुमूल्य सुझावों के लिए आभार जताया

आजाद सिपाही संवाददाता

हाजीपुर। बुधवार को सोनपुर मंडल की मंडल संसदीय समिति की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता सारण के सांसद राजीव प्रताप रूडी द्वारा की गयी। बैठक में सभी सांसद द्वारा जनहित से जुड़े मुद्दे एवं रेल के सर्वांगीण विकास हेतु अपने-अपने सुझावों को रखा गया। इस अवसर पर पूर्व मध्य रेल के महाप्रबंधक छत्रसाल सिंह, सोनपुर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक विवेक भूषण सूद सहित मुख्यालय एवं सोनपुर मंडल के सभी उच्चाधिकारी उपस्थित थे।

इस बैठक में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री रामनाथ ठाकुर, केंद्रीय जल शक्ति राज्य मंत्री राज भूषण चौधरी, भागलपुर के सांसद अजय कुमार मंडल, वैशाली की सांसद वीणा देवी एवं समस्तीपुर की सांसद शांभवी उपस्थित थीं। इनके अलावा केंद्रीय कपड़ा मंत्री, भारत सरकार गिरिराज सिंह के प्रतिनिधि प्रभाकर कुमार राय, खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री, भारत सरकार चिराग पासवान के प्रतिनिधि अवधेश कुमार सिंह, गृह राज्य मंत्री भारत सरकार नित्यानंद राय के प्रतिनिधि शिव कुमार सिंह, सांसद राजेश वर्मा के प्रतिनिधि पवन जायसवाल एवं सांसद तारिक अनवर के प्रतिनिधि, सिमरणजीत सिंह उपस्थित थे।

सांसद एवं उनके प्रतिनिधियों ने रेल विकास और यात्री सुविधाओं में और वृद्धि एवं उसे सुदृढ़ करने के संबंध में बहुमूल्य सुझाव दिये। सांसद द्वारा आधारभूत संरचनाओं के विकास से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता से पूरा करने पर बल दिया गया। भविष्य की कार्य योजनाओं पर भी चर्चा हुई। साथ ही बैठक में कुछ ट्रेनों के विभिन्न स्टेशनों पर ठहराव पर भी चर्चा हुई।

इसके पूर्व बैठक के प्रारंभ में महाप्रबंधक छत्रसाल सिंह ने सांसद एवं सांसद के प्रतिनिधि का स्वागत किया। महाप्रबंधक ने सोनपुर मंडल द्वारा यात्री सुविधा, आधारभूत संरचनाओं के विकास आदि के क्षेत्र में किये गये कार्यों एवं नयी परियोजनाओं से सांसद को अवगत कराया। महाप्रबंधक ने सांसदों के बहुमूल्य सुझावों के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह सुझाव हमें भविष्य में रेल विकास कार्यों की रूप-रेखा तय करने में काफी सहायक सिद्ध होगा।

रेलवे बोर्ड ने विभागीय पदोन्नति के लिए केंद्रीकृत सीबीटी पर निर्णय लिया, पारदर्शिता सुनिश्चित होगी

नयी दिल्ली (आजाद सिपाही)। रेलवे बोर्ड द्वारा बुधवार को एक उच्च स्तरीय बैठक आयोजित की गयी। जिसमें यह निर्णय लिया गया कि सभी विभागीय पदोन्नति परीक्षाएं अब रेलवे भर्ती बोर्ड (आरआरबी) द्वारा केंद्रीयकृत कंप्यूटर आधारित परीक्षा (सीबीटी) के माध्यम से करायी जायेंगी। सभी जोनल रेलवे एक परीक्षा कैलेंडर तैयार करेंगे और सभी परीक्षाएं इसी कैलेंडर के आधार पर आयोजित की जायेंगी। यह निर्णय रेलवे भर्ती बोर्ड (आरआरबी) द्वारा हाल के वर्षों में निष्पक्ष, पारदर्शी और अत्यधिक सराही गयी परीक्षाओं के सफल संचालन के लंबे अनुभव के आधार पर लिया गया है। 2015 से अब तक 7 करोड़ से अधिक उम्मीदवारों की कंप्यूटर आधारित परीक्षाएं आयोजित की जा चुकी हैं, जिनमें कोई पेपर लीक, प्रतिरूपण, रिमोट लॉग-इन, या जासूसी उपकरणों के उपयोग की घटनाएं सामने नहीं आयीं।

आइएएस छवि रंजन की आपत्ति पर ईडी का जवाब- भ्रष्टाचार सरकारी दायित्व नहीं

रांची (आजाद सिपाही)। इनफोर्समेंट डाइरेक्टोरेट (ईडी) ने रांची के पूर्व डीसी छवि रंजन की अपील पर अदालत को बताया है कि भ्रष्टाचार (मनी लॉन्ड्रिंग) सरकारी काम की जिम्मेदारी में शामिल नहीं है। इसलिए सरकार से अभियोजन स्वीकृति लेना जरूरी नहीं है। मालूम हो कि सेना की जमीन की खरीद-बिक्री के मामले में गिरफ्तार रांची के पूर्व डीसी छवि रंजन ने हाइकोर्ट में याचिका दाखिल कर कहा है कि उनके खिलाफ मुकदमा चलाने के लिए अभियोजन की स्वीकृति नहीं ली है। याचिका में छवि रंजन ने कहा है कि सुप्रीम कोर्ट ने मनी लॉन्ड्रिंग के एक मामले में हाल ही में यह फैसला दिया है। पीएमएलए के मामलों में सरकारी कर्मचारियों के खिलाफ मुकदमा चलाने के लिए सरकार से अभियोजन की स्वीकृति लेना जरूरी है।

AFFIDAVIT

As per Affidavit Ref. No. 197 date 05.03.2025, I Rumana Tabassum C/o W/o Sayed Reyaz irfan, Resident of Nisant Compound, Bariyatu, Road, Near Government Girls High School. Bariyatu, PO+PS-Bariyatu, District- Ranchi, State - Jharkhand - 834009, do hereby solemnly affirm and declare the statement made here in below are true to the best of my knowledge, information and belief.-
1. That i am citizen of India.
2- That i am living at my above mentioned address.
3. That my Genuine and Correct Name is RUMANA TABASSUM and my genuine and correct date of birth 04/02/1962 which is mentioned in my Aadhar Vide Aadhar No. 4815 3387 4201.
4. That in my HDFC LIFE, POLICY, Policy No.- 17620219 my name is written as TABASSUM IRFAN and my date of birth is written as 1st day of January 1972 which is absolutely. wrong.
5. That RUMANA TABASSUM and TABASSUM IFRAN, is the Same and, and One Person Which is my name.
6. That my statements furnished above are true.

अनिवार्य है यह आजादी

सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को दो अलग-अलग मामलों में जो कहा, वह अभिव्यक्ति की आजादी से जुड़े संवैधानिक और लोकतांत्रिक मूल्यों के लिहाज से खासा अहम है। शीर्ष अदालत ने कहा कि आजादी के 75 साल हो गए हैं। कम से कम अब तो पुलिस को स्वतंत्र अभिव्यक्ति का मर्म समझना चाहिए। सुप्रीम कोर्ट की इस बात का संदेश बिल्कुल स्पष्ट है।

कविता पर एफआइआर : इनमें से एक मामला कांग्रेस सांसद इमरान प्रतापगढ़ी से जुड़ा था। उनकी एक कविता पर गुजरात पुलिस ने एफआइआर दर्ज की थी। गुजरात हाइकोर्ट ने भी इस मामले में जांच की जरूरत बताते हुए पुलिस कार्रवाई की पुष्टि की थी। इसे देखते हुए सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी मायने रखती है कि एफआइआर दर्ज करने से पहले संबंधित अधिकारियों को कविता पढ़नी चाहिए थी। कविता नफरत और हिंसा की नहीं, इंसाफ और इश्क की बात करती है।

अश्लीलता के बरक्स अभिव्यक्ति : रणवीर इलाहाबादिया से जुड़े अश्लीलता के आरोपों पर भी सुप्रीम कोर्ट ने बेहद संतुलित लेकिन धारदार टिप्पणी करते हुए स्पष्ट किया कि न तो अश्लीलता के लिए कोई गुंजाइश छोड़ी जानी चाहिए और न ही इसे अभिव्यक्ति की आजादी की राह में आने देना चाहिए। रणवीर इलाहाबादिया को पॉडकास्ट जारी रखने की इजाजत देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि वह नैतिकता और अश्लीलता की सीमा को लांघने की गलती न करें।

जहां सोशल मीडिया जैसे मंचों के बेजा इस्तेमाल की प्रवृत्ति बढ़ी है, वहीं शासन प्रशासन की ओर से इन्हें रोकने की कोशिशों में भी अक्सर अति-उत्साह की झलक मिलती है। इससे नागरिकों के अभिव्यक्ति के अधिकार का उल्लंघन होता है।

सेंसरशिप नहीं, मानदंड : सुप्रीम कोर्ट ने सोशल मीडिया से जुड़े मंचों के दुरुपयोग पर चिंता से सहमति जताते हुए भी सेंसरशिप और नॉर्म (मानदंड) के बीच के फर्क को रेखांकित किया। उसका कहना था कि सरकार को इस संबंध में गाइडलाइंस लाने चाहिए, लेकिन ऐसा करते हुए यह भी ध्यान में रखना जरूरी है कि वे अभिव्यक्ति की आजादी पर गैरजरूरी पाबंदियों का रूप न ले लें।

सबके लिए संदेश : सुप्रीम कोर्ट के इस सख्त रुख की अहमियत इसलिए भी बढ़ जाती है, क्योंकि यह ऐसे समय सामने आया है, जब देश में दोनों तरह का विचलन काफी बढ़ा हुआ दिख रहा है। जहां सोशल मीडिया जैसे मंचों के बेजा इस्तेमाल की प्रवृत्ति बढ़ी है, वहीं शासन प्रशासन की ओर से इन्हें रोकने की कोशिशों में भी अक्सर अति-उत्साह की झलक मिलती है। इससे नागरिकों के अभिव्यक्ति के अधिकार का उल्लंघन होता है। शीर्ष अदालत ने याद दिलाया है कि इस अधिकार का ख्याल रखा जाये।

अभिमत
आजाद सिपाही

समूचा विश्व आश्चर्य से देख रहा है कि किस प्रकार एक सीमित स्थान पर करोड़ों लोग अपनी सनातन संस्कृति के भिन्न-भिन्न रूपों के साथ समागम करते हैं। इतने विशाल समागम को लगातार लगभग 45 दिन संचालित करना प्रशासनिक दृष्टि से भी कोई सरल कार्य नहीं था, परंतु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के स्वयं संस्कारित जड़ों से जुड़ाव के कारण ही यह विशाल प्रशासनिक कार्य संभव हो पाया।

जड़ों से जुड़ाव कलियुग की सभी समस्याओं का समाधान

अविनाश राय खन्ना

मेरा देशवासियों से निवेदन है कि संपूर्ण मानव जाति की जड़ें वैदिक यज्ञ संस्कृति से जुड़ी हुई हैं, परंतु जहां-जहां समाज इस वैदिक संस्कृति से कटा हुआ दिखायी देता है, वहां शांति की कल्पना करना व्यर्थ है। सुख, शांति, प्रेम, सद्भाव और समृद्धि के लिए आवश्यक है कि मनुष्य अपनी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक जड़ों को यज्ञ संस्कृति में ढूंढने की कोशिश करे और उनके साथ जुड़े।

13 जनवरी, 2025 से उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में इस बार के महाकुंभ ने नक्षत्रों की दशा के अनुसार 144 वर्ष बाद भारत की धार्मिक जनता को संगम में स्नान करने के बहाने समूचे भारत की धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक परम्पराओं और साधुओं-संतों की तपस्याओं की साक्षात अनुभूति प्राप्त करने का अवसर दिया।

समूचा विश्व आश्चर्य से देख रहा है कि किस प्रकार एक सीमित स्थान पर करोड़ों लोग अपनी सनातन संस्कृति के भिन्न-भिन्न रूपों के साथ समागम करते हैं। इतने विशाल समागम को लगातार लगभग 45 दिन संचालित करना प्रशासनिक दृष्टि से भी कोई सरल कार्य नहीं था, परंतु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के स्वयं संस्कारित जड़ों से जुड़ाव के कारण ही यह विशाल प्रशासनिक कार्य संभव हो पाया। हाल ही में मुझे पंडित मदन मोहन मालवीय के जयंती समारोह में उन्हीं के एक शिष्य तपोनिष्ठ श्रीगणेश के द्वारा हरिद्वार में स्थापित सप्त ऋषि आश्रम में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस आश्रम में मैंने एक प्राचीन वृक्ष के दर्शन किये, जो धरती से लगभग एक फुट ऊपर से गिर चुका है, परन्तु उसके दूसरे छोर पर हरे-हरे पत्तों की कई शाखाएं थीं। इस दृश्य को देख कर मेरे मन में यह निश्चित सिद्धांत स्मरण में आया कि टूटने के बावजूद भी यदि कोई वृक्ष अपनी जड़ से जुड़ा रहता है, तो वह टेढ़ी-मेढ़ी अवस्था में हरा-भरा और फलदार बना रह सकता है।

जड़ों से जुड़ाव ही कलियुग की सारी समस्याओं का समाधान दे सकता है।

परमात्मा के द्वारा मनुष्य की उत्पत्ति से पहले ही सारी सृष्टि का निर्माण कर दिया गया था। इस सृष्टि में एक तरफ जीव-जंतु तथा पक्षी आदि थे, तो दूसरी तरफ अनेकों प्रकार के वृक्ष, वनस्पतियां आदि थीं। इन सभी जीवों और वृक्ष-वनस्पतियों को अलग-अलग प्रकृति के अनुसार निर्धारित नियमों के अंतर्गत उत्पन्न करके पालन-पोषण तक की व्यवस्था की गयी। प्रकृति कहते ही इसी को हैं, जो अपने निर्धारित नियमों के अनुसार संचालित होती है। सृष्टि की रचना के बाद मानव की उत्पत्ति करके उसे एक स्वतन्त्र बुद्धि दी गयी। मनुष्य का यह कर्तव्य था कि वह स्वयं परमात्मा के साथ जुड़ा रह कर इस प्रकृति का अपने पालन-पोषण के लिए लाभ प्राप्त करता। इस वैदिक दर्शन को ही वैदिक विवेक कहा जाता है कि हम सृष्टि से उतना ही प्राप्त करें, जितने हमारे पालन-पोषण के लिए आवश्यक हो। इससे अधिक संग्रहण का हमारे जीवन में लेश मात्र भी महत्व नहीं है, क्योंकि मृत्यु के समय हमारे द्वारा संग्रहीत किया गया एक कण भी हमारे साथ नहीं जा सकता।

सभी मनुष्यों को यह सिद्धांत आवश्यक रूप से स्मरण रहना चाहिए कि यदि हम अपनी जड़ों के साथ जुड़े रहेंगे तो हमारे जीवन में कष्टों, विवादों और विनाश की संभावना बहुत कम हो जायेगी। सांकेतिक रूप से अग्नि में समिधा और सामग्री के साथ घी की आहुतियां देना यज्ञ कहलाता है। इस प्रक्रिया में भी अक्सर मंत्रों के साथ 'इदम् न मम्' का उच्चारण किया जाता है। इसका अर्थ यह है कि हवन में चढ़ाये गये पदार्थ मेरे नहीं हैं। यह सभी पदार्थ अग्नि अर्थात भगवान के ऊर्जा रूप से प्राप्त हुए हैं। यहां तक कि हमारा आहार और समूचा जीवन भी भगवान से प्रतिक्षण मिलने वाली ऊर्जा से चलता है। इस जीवन में हमारा अपना तो कुछ भी नहीं है।

वास्तव में हमारा व्यक्तिगत अस्तित्व भी मूलतः भगवान की ही देन है। सामाजिक रूप से यज्ञ का यही अर्थ निकलेगा कि हमें केवल अपने लिए ही नहीं, अपितु दूसरों के लिए भी जीना है। यज्ञ का अर्थ है त्याग, परोपकार, बांट कर खाना, दान की प्रवृत्ति, सबकी सहायता के लिए तत्पर रहना, सबके लाभ और कल्याण के लिए कार्य करना, सब पर दया करना और सबसे प्रेम करना। इस वैदिक संस्कृति को ही संपूर्ण गीता का सिद्धांत माना जाता है, जो हमें प्रेरणा देती है कि हम बिना किसी प्रतिफल और कामना के सबके प्रति समर्पित भाव से सेवा में जीवन बितायें। प्रत्येक कर्म का प्रतिफल तो प्राकृतिक रूप से परमात्मा का ऊर्जा रूप स्वयं ही निर्धारित करता है और प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार सुख अथवा दुख के रूप में प्राप्त होता है। हमारे गुरुओं का संदेश था- 'नाम जपो, किरत करो, वंड के छको'। अगर आज भी सारा समाज इस संदेश को अपना ले तो हम सब और पूरा देश समृद्धि की तरफ बढ़ने लगेंगे।

सरकारों के संचालन के लिए राजनेताओं की होड़ सारे भ्रष्टाचार की जननी बनती जा रही है। यह भ्रष्टाचार कार्यपालिका और न्यायपालिका को भी अपने दायरे में समेट लेता है। किंतु समाज की इस व्यापक दुर्दशा के बावजूद कुछ गिने-चुने लोग जीवन को यज्ञ की संस्कृति से जोड़ कर यह सिद्ध करने में सफल हो जाते हैं कि वे आज भी वैदिक जड़ों से जुड़े हुए हैं और हमें अपनी जड़ों से जुड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। राजनीतिक दलों, सामाजिक और धार्मिक संस्थानों की जड़ें उनके संस्थापकों के विचारों और सिद्धान्तों में जुड़ी होती हैं, जैसे भाजपा की जड़ें आरएसएस के मिशन में स्थापित हैं, जिनसे आज तक भाजपा लगातार जुड़ कर ही चल रही है। कांग्रेस की जड़ें स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ी थीं, परंतु कांग्रेस आज अपनी उन जड़ों को भूल चुकी है।

मेरा देशवासियों से निवेदन है कि संपूर्ण मानव जाति की जड़ें वैदिक यज्ञ संस्कृति से जुड़ी हुई हैं, परंतु जहां-जहां समाज इस वैदिक संस्कृति से कटा हुआ दिखायी देता है, वहां शांति की कल्पना करना व्यर्थ है। सुख, शांति, प्रेम, सद्भाव और समृद्धि के लिए आवश्यक है कि मनुष्य अपनी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक जड़ों को यज्ञ संस्कृति में ढूंढने की कोशिश करे और उनके साथ जुड़े। जड़ों से जुड़ाव ही कलियुग की सारी समस्याओं का समाधान दे सकता है।

(लेखक : पूर्व सांसद हैं।)

कोल्हान की खबरें

बहरागोड़ा कॉलेज में अंग्रेजी विषय पर पीजी की पढ़ाई शुरू हो : समीर मोहंती

बहरागोड़ा (आजाद सिपाही)। झारखंड विधानसभा बजट सत्र में विधायक समीर मोहंती ने बहरागोड़ा कॉलेज में अंग्रेजी विषय पर पीजी की पढ़ाई शुरू करने का मुद्दा उठाया। उन्होंने बताया 50 किमी के दायरे में यह एकमात्र कॉलेज है। जहां स्नातक स्तर पर अंग्रेजी विषय की पढ़ाई होती है। लेकिन पीजी की सुविधा उपलब्ध नहीं है। उन्होंने कहा हर साल करीब 100 विद्यार्थी उच्च शिक्षा से वंचित रह जाते हैं। विधायक ने सरकार से बहरागोड़ा कॉलेज में अंग्रेजी विषय में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम जल्द शुरू करने की मांग की। ताकि स्थानीय विद्यार्थियों को आगे की शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हो सके।

रंग लायी आरटीआइ कार्यकर्ता सदन ठाकुर की पहल

शहर में अवैध पार्किंग शुल्क वसूली पर प्रशासन की सख्ती

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। शहर के आरटीआई कार्यकर्ता सदन ठाकुर ने बीते दिनों शहर में अवैध पार्किंग शुल्क वसूली और आम नागरिकों के साथ दुर्व्यवहार करने के मामले में डीसी से शिकायत की थी। जानकारी मिलने पर बढ़ती घटनाओं के मद्देनजर प्रशासन ने सख्त कदम उठाने का निर्णय लिया। पार्किंग वसूली कर्मचारियों की पहचान सुनिश्चित करने के लिए अब सभी अधिकृत पार्किंग कर्मियों के लिए ड्रेस और पहचान पत्र (आइ-कार्ड) अनिवार्य कर दिये गये।

हाल ही में अपराधी तत्वों द्वारा अवैध पार्किंग शुल्क वसूली और नागरिकों के साथ मारपीट की घटनाओं की शिकायतें प्राप्त हुई थीं। इन घटनाओं में अवैध स्थानों पर पार्किंग बनाकर, बिना नंबर और अधिकारी के हस्ताक्षर वाली रसीदें देकर, नागरिकों से जबरन शुल्क वसूला जा रहा था। शिकायतकताओं ने दूरभाष पर जमशेदपुर अक्षेस और मानगो अक्षेस को सूचित किया। लेकिन उचित कार्रवाई न होने के कारण ये समस्याएं बनी रहीं। जिले में डीसी के डोकेट संख्या-2452 पर 13 फरवरी को दिये गये सूचना के अनुसार इन शिकायतों पर त्वरित और प्रभावी कार्रवाई करने के निर्देश दिये गये। विशेष पदाधिकारी, अधिसूचित क्षेत्र समिति, जमशेदपुर और जुगसलाई और उप नगर आयुक्त मानगो जमशेदपुर को आदेशित किया गया। वे सुनिश्चित करें ताकि सभी पार्किंग वसूली कर्मचारी निर्धारित ड्रेस और वैध पहचान पत्र धारण करें। यह कदम सरकार के राजस्व की हानि को रोकने और नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए उठाया गया। प्रशासन नागरिकों से अपील करता है यदि वे किसी भी अवैध पार्किंग शुल्क वसूली या दुर्व्यवहार की घटना का सामना करते हैं, तो तुरंत संबंधित अधिकारियों को सूचित करें। सभी अधिकृत पार्किंग स्थलों पर कर्मचारियों की पहचान स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होगी। जिससे नागरिक आसानी से वैध और अवैध वसूली के अंतर समझ सके। प्रशासन नागरिकों की सुरक्षा और सुविधा के लिए प्रतिबद्ध है। इस दिशा में आवश्यक सभी कदम उठाये जा रहे हैं।

देश-विदेश की खबरों के लिए क्लिक करें
www.azadsipahi.in

ब्रह्मानंद नारायणा अस्पताल ने टीइवीएआर प्रक्रिया से वृद्ध महिला की बचायी जान

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। ब्रह्मानंद नारायणा अस्पताल, जमशेदपुर ने एक 56 वर्षीय महिला मरीज पर सफलतापूर्वक दुर्लभ और जीवनरक्षक थोरैसिक एंडोवास्कुलर एओर्टिक रिपेयर (टीइवीएआर) प्रक्रिया को अंजाम दिया। मरीज एक बड़े एओर्टिक एन्यूरिज्म से पीड़ित थी, जो एक संभावित घातक स्थिति है।

मरीज को लंबे समय से खांसी, सांस लेने में कठिनाई और सीने में दर्द की शिकायत थी। जांच के बाद, उन्हें गंभीर हाइपरटेंशन (उच्च रक्तचाप), एनीमिया, हाइपोथायरायडिज्म और अत्यधिक बढ़ी हुई महाधमनी (एओर्टा) की समस्या पायी गयी। उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए, उन्हें तुरंत कैथ लैब में स्थानांतरित किया गया, जहां आपातकालीन टीइवीएआर प्रक्रिया की गयी।

टीइवीएआर एक मिनिमली इनवेसिव (कम आक्रामक) प्रक्रिया है, जो ओपन-हार्ट सर्जरी का एक बेहतर विकल्प है। इस प्रक्रिया में एक छोटे ग्रोइन चीरा (ग्रोइन कट) के माध्यम से स्टेंट ग्राफ्ट (फैब्रिक से ढका हुआ धातु का ट्यूब) को महाधमनी में डाला गया। इमेजिंग गाइडेंस की मदद से इसे सही स्थान पर स्थापित किया गया, जिससे कमजोर धमनियों को मजबूती मिली और फटने से रोका गया। प्रक्रिया के दौरान मरीज को दो यूनिट रक्त चढ़ाया गया और उनकी रक्तचाप एवं अन्य जरूरी स्वास्थ्य संकेतक स्थिर हो गए। प्रक्रिया के बाद किए गए इकोकार्डियोग्राफी परीक्षण ने सफल उपचार की पुष्टि की, और उन्हें स्थिर स्थिति में अस्पताल से छुट्टी दे दी गयी।

जमशेदपुर में स्वच्छ जल और स्वच्छता की बदहाली पर भाजपा नेता का प्रहार

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। झारखंड गठन के 25 वर्षों बाद भी जमशेदपुर और उसके शहरी इलाकों विशेष रूप से मानगो, जुगसलाई, बागबेड़ा और परसुडीह में स्वच्छ जल और स्वच्छता की घोर कमी है। बुधवार को गंभीर स्थिति को देखते हुए लेकर भाजपा के प्रदेश मंत्री नंदजी प्रसाद ने जिला प्रशासन और स्थानीय निकायों पर जोरदार हमला बोला।नंदजी प्रसाद ने आरोप लगाया स्वच्छ जल और स्वच्छता के नाम पर करोड़ों रुपए का घोटाला हो रहा है। पूरे वर्ष लोगों को स्वच्छ पानी नहीं मिल पा रहा है। गंदगी के कारण नागरिक विभिन्न बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं। उन्होंने प्रशासन पर भ्रष्टाचार में लिप्त रहने और जनता की समस्याओं से मुंह मोड़ने का आरोप लगाया। भाजपा नेता ने कहा सफाई कर्मियों की नियुक्ति

केवल कागजों पर होती है।जितने सफाई कर्मियों की संख्या रोस्टर में दर्ज है। उसका 25% भी जमीन पर काम नहीं करता। इसके बावजूद हर महीने लाखों रुपए का गबन किया जाता है। जिससे पूरे शहर में गंदगी का अंबार लगा रहता है। इसी तरह जल संकट के नाम पर भी बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार हो रहा है। पुराने टैंकरों की मरम्मत कर या नए टैंकरों को भाड़े पर लेकर जल आपूर्ति का दिखावा किया जा रहा है। आने वाले समय में जल संकट बढ़ने पर भ्रष्टाचार का यह खेल और बड़े स्तर पर चलेगा।

केंद्र सरकार की योजनाओं को दिखाया जा रहा ठेंगा

भाजपा नेता ने आरोप लगाया केंद्र सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्वच्छता मिशन और ₹हर घर स्वच्छ जल₹ योजना को स्थानीय प्रशासन ठेंगा दिखा रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सपने को जमशेदपुर प्रशासन चकनाचूर कर रहा है।

भ्रष्टाचार के खिलाफ जन आंदोलन की चेतावनी

नंदजी प्रसाद ने स्पष्ट किया भाजपा भ्रष्टाचार को बर्दाश्त नहीं करेगी। भाजपा कार्यकर्ता जनता के साथ मिलकर प्रशासन की पोल खोलेंगे और स्थायी समाधान के लिए जन आंदोलन छेड़ेंगे। उन्होंने जनता से आह्वान किया वे इस लड़ाई में भाजपा का साथ दें। स्वच्छ जल व स्वच्छता के अधिकार की मांग करें।

तिरुपति बालाजी मंदिर की तर्ज पर विकसित होगा दलमा शिव मंदिर : मंगल कालिंदी

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। झारखंड विधानसभा बजट सत्र में जुगसलाई विधायक मंगल कालिंदी ने दलमा पहाड़ स्थित प्राचीन 'दलमा बाबा' शिवमंदिर को तिरुपति बालाजी मंदिर के तर्ज पर विकसित करने की मांग सरकार के समक्ष रखी। विधायक ने बताया प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु मंदिर में दर्शन और पूजन के लिए आते हैं। विशेषकर महाशिवरात्रि और श्रावण के महीनों में यहां अत्यधिक भीड़ होती है। मंदिर तक पहुंचने के लिए केवल एक ही सड़क है। जिसकी स्थिति काफी खराब है।साथ ही श्रद्धालुओं और पर्यटकों के ठहरने की समुचित व्यवस्था नहीं होने पर कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। श्री कालिंदी ने सुझाव देते हुए कहा यदि दलमा पहाड़ को तिरुपति बालाजी मंदिर के तर्ज पर विकसित किया जाये, तो इससे श्रद्धालुओं और पर्यटकों को सुविधाएं मिलेंगी। साथ ही पर्यटन के माध्यम से ग्रामीणों को रोजगार के अवसर भी प्राप्त होंगा। विधायक मंगल कालिंदी ने सरकार से आग्रह किया दलमा शिवमंदिर को तिरुपति बालाजी मंदिर की तरह विकसित करने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएं। ताकि क्षेत्र का समग्र विकास हो सके और श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं मिल सकें।

डीएमओ की बालू माफियाओं पर कार्रवाई

सरायकेला (आजाद सिपाही)। जिले में अवैध बालू खनन, परिवहन और भंडारण थमने का नाम नहीं ले रहा। ईचागढ़ थाना क्षेत्र में बालू माफियाओं के हौसले इतने बुलंद हो गए की अब वे दिनदहाड़े नदियों से अवैध खनन कर रहे हैं। इस बीच जिला खनन पदाधिकारी ज्योति शंकर सतपति ने अवैध खनन पर नकेल कसने के लिए छापेमारी अभियान तेज कर दी। बुधवार को जिला खनन पदाधिकारी ने ईचागढ़ थाना क्षेत्र के छोटचुनचुनरिया में औचक छापेमारी की। इस दौरान अवैध बालू का परिवहन कर रहे चार ट्रैक्टर जब्त किये गये। उन्हें ईचागढ़ थाना को सौंपकर अग्रेतर कार्रवाई के निर्देश दिये। जिला खनन विभाग द्वारा अब तक हजारों सीएफटी अवैध बालू जब्त किया जा चुका है। हाल ही में 17,500 सीएफटी बालू के अवैध भंडारण को जब्त किया गया था।

क्रॉस ने वीबीडीए को गाड़ी दी

आजाद सिपाही संवाददाता

आदित्यपुर। इंडस्ट्रियल एरिया स्थित क्रॉस लिमिटेड कंपनी ने सीएसआर के तहत वॉलंट्रीज ब्लड डोनर्स एसोसिएशन को 11.25 लाख मूल्य की बोलेरो गाड़ी प्रदान की। कंपनी के निदेशक मंडल द्वारा गाड़ी की पूजा-अर्चना के बाद चाबी और संबंधित दस्तावेज वीबीडीए के प्रतिनिधियों को सौंप दिये। इस अवसर पर मुख्य अतिथि निदेशक क्रॉस लिमिटेड अनीता राय, निदेशक कुणाल राय, वीबीडीए प्रतिनिधि में संस्थापक सुनील मुखर्जी, सचिव कमल घोष,सदस्य प्रदीप घोषाल शामिल रहे। निदेशक कुणाल राय ने कहा हमारी कंपनी सामाजिक कल्याण के प्रति समर्पित और जागरूक है। हमें विश्वास है इस गाड़ी के माध्यम से वीबीडीए अपने महत्वपूर्ण कार्यों को और अधिक गति प्रदान कर सकेगा। इस अवसर पर सुरेशबाबू, रमाकांत गिरी, बिनोद आर्या, धीरेन्द्र जेना, पवन मैहर, देबोलिना कर्मकार, आकांक्षा, स्वीटी, पदमा, राजेश प्रधान,पियूष कुमार, सत्या किशोर शामिल रहे।

विधायक सत्येंद्र तिवारी ने जल जीवन मिशन में हुए भ्रष्टाचार का मामला उठाया

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। गढ़वा विधानसभा क्षेत्र के विधायक और झारखंड विधानसभा के सामान्य प्रयोजन समिति के सभापति सत्येंद्र नाथ तिवारी ने बुधवार को झारखंड विधानसभा में केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजना 'जल जीवन मिशन' में कथित तौर पर हुए भारी भ्रष्टाचार का मामला उठाते हुए झारखंड सरकार पर कड़ा प्रहार किया।

गढ़वा विधायक ने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार ने झारखंड के सभी घरों को शुद्ध पेयजल मुहैया कराने के लिए जल जीवन मिशन योजना के माध्यम से हजारों करोड़ रुपये झारखंड को दिया लेकिन झारखंड की महागठबंधन की सरकार ने उस पैसे का जमकर लूट खसोट किया, जिसकी वजह से आज झारखंड के करोड़ों लोग शुद्ध पेयजल से वंचित रह गये।

श्री तिवारी ने कहा कि पेयजल विभाग ने जल जीवन मिशन के तहत केंद्र से मिले पैसे का बंदरबांट करने के लिए गलत कागजात पर संवेदको को कार्य दिया। संवेदक को लाभ पहुंचाने हेतु कार्य आवंटित करने के बाद बीच में पुराने नियम को बदलकर नया नियम बना दिया गया, जिसकी वजह से योजना धरातल पर नहीं उतर पायी। कई जगहों पर तो संवेदक के द्वारा घरों में नल तो लगा दिया लेकिन उसमें पानी देने के लिए बोरिंग की व्यवस्था नहीं की गयी। कुछ जगहों पर सिर्फ बोरिंग करके छोड़ दिया गया लेकिन नल नहीं लगाया गया। कहीं-कहीं स्टील स्ट्रक्चर खड़ा करके बाकी का कार्य अधूरा छोड़ दिया गया, जिसकी वजह से झारखंड में योजना अभी तक अधूरी है। सत्येंद्र तिवारी ने कहा कि झारखंड की महागठबंधन की सरकार केंद्र सरकार के द्वारा मिले हजारों करोड़ रुपये का उपयोगिता प्रमाण पत्र भी ससमय केंद्र सरकार को नहीं दे पा रही है। जिससे साफ प्रतीत होता है कि जल जीवन मिशन योजना में झारखंड सरकार ने बहुत बड़ा घोटाला किया है। इस घोटाले में सरकार में शामिल लोग और वरिष्ठ प्रशासनिक पदाधिकारी भी शामिल है। इन संवेदनहीन लोगों की वजह से आज झारखंड के लाखों घरों तक शुद्ध पेयजल नहीं पहुंच पा रहा है।

मेराल के गोदाम से एक करोड़ का खाद्यान्न गायब, सहायक प्रभारी के खिलाफ एफआइआर

डीसी के निर्देश पर सीओ सह प्रभारी एमओ ने 2765.84.862 क्विंटल खाद्यान्न (चावल, गेहूं) गोदाम में कम होने पर दर्ज करायी प्राथमिकी

प्राथमिकी दर्ज होने पर थाना पुलिस हुई रेस, पीओ और गवाह का नाम दर्ज कर शुरू की जांच

आजाद सिपाही संवाददाता

मेराल। गढ़वा डीसी शेखर जमुआर के निर्देश पर सीओ सह प्रभारी एमओ यशवंत नायक ने मेराल के सहायक गोदाम प्रबंधक सह जनसेवक दीपक चंचल पर 2765.84.862 क्विंटल खाद्यान्न (चावल, गेहूं) का गबन करने के आरोप में मेराल थाना में प्राथमिकी दर्ज करायी गयी है। उक्त खाद्यान्न का सरकारी कीमत लगभग एक करोड़ रुपये से अधिक बतायी जा रही है। सीओ द्वारा प्राथमिकी के लिए थाना में दिये गये आवेदन पत्र में कहा गया है कि 4 मार्च को उपायुक्त द्वारा सूचित किया गया कि जिला आपूर्ति पदाधिकारी गढ़वा के द्वारा 21 मार्च को मेराल गोदाम की जांच की गयी। जांच के क्रम में लगभग 2765.84.862 क्वीं० कम खाद्यान्न (चावल गेहूं) गोदाम में पाया गया। उक्त के आलोक में प्रभारी सहायक गोदाम प्रबंधक से स्पष्टीकरण की गई। प्राप्त स्पष्टीकरण स्वीकार्य नहीं है। प्रथमदृष्ट्या प्रतीत होता है कि उपरोक्त खाद्यान्न गबन (कालाबाजारी) की गयी है। इसके जिम्मेवार दिपक चंचल, जनसेवक सह प्रभारी सहायक गोदाम प्रबंधक मेराल के विरूद्ध भारतीय न्याय संहिता की सुसंगत धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज करते हुए कृत कार्रवाई की प्रति उपलब्ध करायी जाये। सीओ के आवेदन पर मेराल थाना में भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज करने के बाद थाना पुलिस गबन के इस बड़े केश में रेस हो गयी है। थाना प्रभारी विष्णु कांत एवं केश के अनुसंधान कर्ता पुलिस अवर निरीक्षक चेतन कुमार सिंह गोदाम पर पहुंचकर पीओ तथा गवाह का नाम दर्ज करने के बाद जांच पड़ताल शुरू कर दिया है।

गढ़वा विधायक के सवाल पर हुई कार्रवाई

जानकारी के अनुसार गोदाम में खाद्यान्न कम होने का मामला चार माह पूर्व तब उजागर हुई थी जब गोदाम का प्रभार दूसरे जन सेवक को दी गयी। प्रभार का अदला बदली होने पर खाद्यान्न का मिलान किया गया तो करीब 23000 क्विंटल खाद्यान्न कम होने की लिखित जानकारी सीओ सह प्रभारी एमओ को दी गयी। जानकारी मिलते ही उन्होंने उक्त प्रतिवेदन को डीसी गढ़वा को अग्रसारित कर दी गयी। तब दीपक चंचल द्वारा हिसाब में गड़बड़ी होने का हवाला दिया गया। इसी तरह दो माह बीत जाने के बाद पुन: सहायक गोदाम प्रबंधक का प्रभार दीपक चंचल को दे दिया गया ताकि हिसाब किताब का ठीक से मिलन हो सके। दोबारा प्रभार मिलने के तीन माह बीत जाने के बाद डीएसओ द्वारा की गयी भंडारण पंजी तथा गोदाम में पड़े खाद्यान्न का मिलान करने पर 2765.84.862 क्वीं० कम खाद्यान्न (चावल गेहूं) पाया गया। इसकी जानकारी मिलने पर विधायक सत्येंद्र नाथ तिवारी द्वारा विधानसभा में किए गए सवाल पर कार्रवाई करते हुए गढ़वा डीसी द्वारा सीओ को प्राथमिकी दर्ज करने का निर्देश दिया गया।

भवनाथपुर जिप सदस्य ने मंत्री से मिल कर क्षेत्र में जन कल्याणकारी योजनाओं को पूरा कराने की मांग की

भवनाथपुर (आजाद सिपाही)। जिला परिषद सदस्य रंजनी शर्मा नें राज्य के ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग के मंत्री दीपिका पांडे सिंह को 16 सूत्री मांग पत्र सौपी है। उन्होंने मंत्री से सभी मांगो पर सहानुभूति पूर्वक विचार करते हुए करने की मांग की है। सौंपे गये के मांग पत्र में भवनाथपुर मार्केट में मार्केट कंप्लेक्स निर्माण कराकर रोजगार उपलब्ध कराया जाय, रोहिनियां में प्राथमिक स्वास्थ्य भवन का निर्माण कराया जाय, रोहिनियां में डॉ भिम राव अंबेदकर खेल मैदान में विवाह मंडप एवं सामुदायिक भवन निर्माण कराया जाय, बरवारी में विवाह मंडप और सामुदायिक भवन निर्माण, चपरी में विवाह मंडप निर्माण, अधौरा में माड़र महारानी के परिसर में विवाह मंडप आदि निर्माण कराये जाने की मांग शामिल है।

समाजसेवी मजिद राय का निधन

मजिद राय (फाइल फोटो)

रंका (आजाद सिपाही)। रंका अनुमंडल प्रखंड मुख्यालय के थाना मोड़ निवासी समाजसेवी मजिद राय का निधन बुधवार को रांची के वेदांता अस्पताल में ईलाज के दौरान हो गयी। मजिद राय पिछले कई सालों से बीमार चल रहे थे। जौहरी के नमाज के बाद उन्हें रंका कर्बला में मिट्टी दिया जायेगा। उनके निधन पर रंका सदर शोएब खलीफा, समिनुद्दीन खलीफा, हाजी हुसैन अंसारी, श्याम सुंदर प्रसाद, विजय कुमार चंद्रवंशी, धर्मेंद्र पाठक, महेंद्र साव शौंडिक सहित झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता पदाधिकारी कार्यकर्ताओं ने गहरा शोक व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना की है।

सात दिवसीय कार्यक्रम कलश यात्रा के साथ प्रारंभ

विशुनपुरा (आजाद सिपाही)। पलामू प्रमंडल में एकलौता विशुनपुरा प्रखंड के पोखरा चौक स्थित प्रसिद्ध शेषशैया भगवान श्री विष्णु मंदिर के 19वां वार्षिकोत्सव का सात दिवसीय कार्यक्रम बुधवार को कलश यात्रा के साथ प्रारंभ हो गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि पूर्व विधायक राज राजेंद्र प्रताप देव (बड़े राजा) ने पूजा अर्चना और फीता काटकर सोभायात्रा के साथ कलश यात्रा का शुभारंभ किया। इस मौके पर विष्णु मंदिर विकास समिति के अध्यक्ष नारायण शर्मा, सचिव गौरीशंकर गुप्ता, कोषाध्यक्ष ज्वाला प्रसाद गुप्ता, उपकोषाध्यक्ष ललन प्रसाद गुप्ता, उपसचिव प्रभु राम सहित कमिटी के सभी सदस्य एवं बड़ी संख्या में हजारो श्रद्धालु साामिल थे।

सगमा प्रखंड में झामुमो की पंचायत स्तरीय कमिटी का गठन

सगमा (आजाद सिपाही)। प्रखंड में झामुमो का पंचायत स्तरीय कमिटी का गठन संपन्न। उक्त कमिटी का गठन सगमा प्रखंड चुनाव प्रवेक्षक सुदेश्वर राम के देख रही में सर्वसमित के माध्यम से प्रखंड के सभी पांचों पंचायत के लिए अध्यक्ष सचिव कोषाध्यक्ष के साथ अन्य पदों पर चयन किया गया। जिसमें कटहर कला पंचायत में अध्यक्ष के रूप में मांडू बैठा सचिव राकेश पांडेय कोषाध्यक्ष कामेश्वर राम को बनाया गया, जबकि सगमा पंचायत के लिए अध्यक्ष राजेश कुमार यादव सचिव के रूप में रमन भुइयां तथा कोषाध्यक्ष के लिए उमाशंकर पासवान का नाम शामिल है। इसी प्रकार सोनडिहा पंचायत में अध्यक्ष विजय यादव सचिव अजय राम कोषाध्यक्ष के लिए श्रीकांत यादव का नाम शामिल है।

गढ़वा जिला अधिवक्ता संघ का चुनाव संपन्न, भृगु नाथ बने अध्यक्ष

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। गढ़वा जिला अधिवक्ता संघ का चुनाव संपन्न हो गया, जिसमें भृगु नाथ चौबे अध्यक्ष और मृत्युंजय कुमार तिवारी महासचिव निर्वाचित हुए। अध्यक्ष पद पर भृगु नाथ चौबे ने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी गौतम कृष्ण सिंह को 8 मतों से पराजित किया। उन्हें 144 मत मिले, जबकि गौतम कृष्ण सिंह को 136 मत प्राप्त हुए।

उपाध्यक्ष पद के लिए 6 प्रत्याशी मैदान में थे, जिसमें सच्चिदानंद शुक्ला ने 81 मत पाकर जीत दर्ज की। उन्होंने अपने प्रतिद्वंदी जितेंद्र तिवारी (77 मत) को 4 मतों से हराया। अन्य प्रत्याशियों में अशोक कुमार को 39, दीपक कुमार को 8, देवेंद्र प्रजापति को 42 और धीरेंद्र कुमार चौबे को 27 मत मिले।

महासचिव पद पर मृत्युंजय तिवारी ने 123 मत प्राप्त कर बड़ी जीत दर्ज की। उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी परेश कुमार तिवारी (100 मत) को 23 मतों से हराया। महासचिव पद के अन्य प्रत्याशी जितेंद्र कुमार को 57 और शशि मनी पांडे को 1 मत मिला।

कोषाध्यक्ष पद पर गरीबुल्लाह अंसारी ने 141 मत पाकर जीत दर्ज की। उन्होंने अवध किशोर चौबे (137 मत) को 4 मतों से हराया। सहायक पद पर रवि शंकर प्रसाद ने 1 मत से जीत दर्ज की।

संयुक्त सचिव-1 पद पर ओम प्रकाश चौबे विजयी रहे, जिन्होंने 142 मत प्राप्त कर देवदत्त चौबे (109 मत) को 33 मतों से हराया। संयुक्त सचिव-2 पद पर प्रवीण कुमार पांडे ने 108 मत प्राप्त कर सोमनाथ विश्वकर्मा (104 मत) को 4 मतों से हराया।

कार्यकारिणी सदस्य पद के लिए अमरेंद्र कुमार (167 मत), राजीव कुमार पांडे (192 मत), कृष्ण कुमार मेहता (156 मत), सत्यनारायण कुमार सिन्हा (183 मत) और परमानंद कच्छप (132 मत) निर्वाचित हुए। मतगणना के बाद सफल प्रत्याशियों को प्रमाण पत्र वितरित किया गया। चुनाव पदाधिकारी सतीश मिश्रा ने सभी विजयी प्रत्याशियों को बधाई देते हुए संघ को नयी ऊंचाइयों तक पहुंचाने का आह्वान किया।

उपायुक्त और पुलिस अधीक्षक ने बड़गढ़ प्रखंड का किया दौरा

नक्सल मुक्त बूढ़ा पहाड़ क्षेत्र के टेहरी समेत अन्य पंचायतों के विकास कार्यों का लिया जायजा

उपायुक्त और पुलिस अधीक्षक ने क्षेत्र के लोगों की समस्याएं भी सुनी और समाधान का दिया भरोसा

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। गढ़वा जिले के अति सुदूरवर्ती नक्सल मुक्त बूढ़ा पहाड़ क्षेत्र में चलाये जा रहे विभिन्न योजनाओं एवं विकासात्मक कार्यों के संचालन से अवगत होने एवं क्षेत्र के आम जनमानस की समस्याओं का समुचित समाधान के उद्देश्य से आज उपायुक्त गढ़वा शेखर जमुआर और पुलिस अधीक्षक दीपक कुमार पांडे ने संयुक्त रूप से बरगढ़ प्रखंड के सुदूरवर्ती क्षेत्र बूढ़ा पहाड़ के टेहरी पंचायत का दौरा किया। इस दौरान बूढा पहाड़ विकास परियोजना को लेकर बरगढ़ प्रखंड अंतर्गत बूढ़ा पहाड़ क्षेत्र के टेहरी पंचायत समेत अन्य के विकास कार्यों की उपायुक्त शेखर जमुआर ने समीक्षा किया। क्षेत्र के लोगों की समस्या सुनी एवं सरकार द्वारा संचालित सभी विकास योजनाओं से ग्रामीणों को आच्छादित करने की बात कही। उपायुक्त श्री जमुआर द्वारा उक्त क्षेत्रों के योग्य लोगों को विभिन्न सरकारी योजनाओं यथा- मनरेगा, आवास, सर्वजन पेंशन, केसीसी, वन अधिकार पट्टा, बाल विकास, शिक्षा, स्किम कम्पलीसन, स्वास्थ्य, पोषण व आधार सीडिंग, पेयजल, विद्युत समेत अन्य योजनाओं से शत प्रतिशत आच्छादित करने की बात कही गयी। पुलिस अधीक्षक श्री पांडे ने कहा कि बूढ़ा पहाड़ पूर्व में नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में आता था, जिसे जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन तथा सीआरपीएफ बलों द्वारा अब पूर्णतः नक्सलमुक्त कराकर भयमुक्त वातावरण की मिसाल दी गयी है। उन्होंने आमजनों समेत वहां पर रह रहे सुरक्षा बलों (सीआरपीएफ बटालियन) की समस्याओं से भी अवगत होने का कार्य किया।

आदिवासी महासभा ने सरकार से वन अधिकार कानून में सुधार लाने की मांग की

गढ़वा (आजाद सिपाही)। आदिवासी महासभा एवं सामुदायिक वन प्रबंधन संघ द्वारा विगत आठ दिनों से जारी पदयात्रा बुधवार को गढ़वा पहुंचा। पदयात्रा में शामिल लोगों ने डीएफओ एवं एसडीओ को मांगपत्र सौंपा। इसके पश्चात पैदल चलते हुए समाहरणालय पहुंचे तथा अपनी मांगों के समर्थन में प्रदर्शन किया। उन्होंने सरकारों के वन अधिकार कानून के प्रति नकारात्मक रवैया का विरोध किया तथा इसमें सुधार लाने की मांग की। मालूम हो कि आदिवासी महासभा एवं सामुदायिक वन प्रबंधन संघ से जुड़े लोगों ने इस मुद्दे को लेकर बड़गड़ से पदयात्रा शुरू की थी। इसमें बड़ी संख्या में आदिवासी समुदाय के लोग शामिल हुए। इस पदयात्रा का नेतृत्व सामुदायिक वन प्रबंधन संघ संयोजक मानिक चंद कोरवा ने किया। जबकि अखिल भारतीय आदिवासी महासभा के केंद्रीय सचिव फिलिप कुजूर भी इसमें शामिल हुए। पदयात्रा में मुख्य रूप से सुनील मिंज, जेम्स रेजंज, चैतू सिंह खरवार, कविता सिंह खरवार, मनरखन सिंह समेत बड़ी संख्या में महिला पुरूष और युवा शामिल हुए।

सर्वेश्वरी समूह का शिवलिंग और चरण पादुका स्थापना दिवस संपन्न

श्री बंशीधर नगर। श्री सर्वेश्वरी समूह नगर ऊंटारी में शिवलिंग एवं चरण पादुका स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ बुधवार सुबह 9 बजे समूह के सदस्यों के द्वारा सामूहिक सफल योनि का पाठ के साथ सम्पन्न हुआ। इसके पूर्व मंगलवार को पूज्य गुरुपद बाबा संभव राम जी ने समाधि स्थल पर विधिवत पूजा अर्चना कर 24 घंटे का अखंड कीर्तन का शुभारंभ किया। स्थापना दिवस के अवसर पर समूह सदस्यों के द्वारा दोपहर में सामूहिक भंडारा का आयोजन किया गया। जिसमें हजारों लोगों ने भंडारे में प्रसाद प्राप्त किया। श्री सर्वेश्वरी समूह शाखा नगर ऊंटारी ने शिवलिंग एवं चरण पादुका स्थापना दिवस के अवसर पर शाखा नगर ऊंटारी में 500 वृद्ध, असहाय ,विकलांग, महिलाओं के बीच साड़ी का वितरण किया। साड़ी वितरण कार्यक्रम का शुभारंभ शाखा के उपाध्यक्ष हेमंत प्रताप देव ने बाबा अघोरेश्वर महाप्रभु के चित्र पर विधिवत पूजा अर्चना कर किया। मौके पर प्रधान कार्यालय से आये हुए कौशल, टप्पू, शशि, आलोक, उपेंद्र नाथ शहदेव, शाखा के मंत्री आनंद जायसवाल, शारदा महेश प्रताप देव सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

पोषक क्षेत्र से बाहर आंगनबाड़ी निर्माण का विरोध, ग्रामीणों ने निर्माण स्थल बदलने की मांग

आजाद सिपाही संवाददाता

डंडई। डंडई प्रखंड के रारो गांव के उत्तर टोला के आंगनबाड़ी केंद्र पोषक क्षेत्र से बाहर व अनुपयोगी जगह पर बनाने का मामला प्रकाश में आया है। जिसको लेकर बुधवार को ग्रामीणों ने विरोध जताते हुए ग्रामीणों की मांग अनुरूप सर्वाधिक उपयुक्त स्थल पर आंगनबाड़ी केंद्र बनाने की मांग की है। ग्रामीण नसीम अंसारी, शमीम अहमद, रमेश राम, कमलेश राम, रमेश प्रजापति, विजय राम, असजद राजा सहित अन्य ग्रामीणों ने बताया कि रारो उत्तर टोला के आंगनबाड़ी केंद्र पोषक क्षेत्र से हटकर लगभग 2 से 2.5 किलोमीटर दूर कपरफूटा टोला डंडई के सीवान पर आंगनबाड़ी केंद्र का भवन निर्माण कराया जा रहा है। जो पोषक क्षेत्र से बहुत दूर है। जिससे पोषक क्षेत्र के लाभार्थी बच्चे, गर्भवती व धात्री महिलाए को आंगनबाड़ी केंद्र दूर होने के कारण वंचित होना पड़ेगा। बच्चों को आने जाने में काफी फजीहत झेलनी पड़ेगी। उसके आस पास खेत, तालाब व झाड़ियों का अंबार है। बरसात और गर्मी के मौसम में छोटे बच्चों को वहां आना जाना दुखदायी और खतरा भरा होगा। साथ ही ग्रामीणों ने बताया कि 2-3 वर्ष पहले भी अपने पोषक क्षेत्र के बीच में आंगनबाड़ी केंद्र का भवन निर्माण कराया गया था। और लेबल तक करके अधूरा पड़ा हुआ है। ग्रामीणों की मांग है की अभी बन रहे भवन के काम को रोकते हुए अधूरा पड़ा भवन के पास सी भवन का निर्माण कराया जाये या पोषक क्षेत्र में ही नये भवन का निर्माण कराया जाये। जिससे पोषक क्षेत्र के लाभार्थी लाभांवित होंगे। मुखिया प्रतिनिधि जितेंद्र कुमार ठाकुर ने बताया कि ग्रामीणों की शिकायत पर निरीक्षण करने किया था। गांव से लगभग 2 से 2.5 किलोमीटर पोषक क्षेत्र से दूर भवन का निर्माण कराया जा रहा है जो बिलकुल गलत है। ऐसे में लाभार्थी बच्चे, गर्भवती व धात्री महिलाए को वहां तक पहुंचने में काफी परेशानी होगी। इसको लेकर विभाग से शिकायत भी की गयी है। इधर मामले में पूछे जाने पर पर्यवेक्षिका मीना देवी ने बताया की ग्रामीणों की शिकायत मिली है जांच कर आगे की कार्रवाई की जायेगी।

टेंपो पलटने से छह बच्चे समेत कुल सात घायल

भवनाथपुर (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के मकरी बड़का अहरा के समीप एक टेंपू पलटने से छः स्कूली छात्र और एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। घायल छात्रों में दीपांजल कुमारी, काजल कुमारी, आंचल कुमारी, पियूष विश्वकर्मा, अंशु गुप्ता व लक्ष्मी कुमारी शामिल हैं, जो सभी सरस्वती शिशु विद्या मंदिर भवनाथपुर के छात्र हैं। इसके अलावा एक अन्य युवक अवधेश बैठा भी घायल हुआ है। सभी घायलों का इलाज सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में किया गया। घटना की जानकारी देते हुए छात्रों ने बताया कि टेंपू चालक के मोबाइल फोन पर बात करते समय चालक ने अपनी गाड़ी पर ध्यान नहीं दिया। इसके कारण टेंपू सड़क से नीचे उतरते हुए पलट गया। हादसे के बाद चालक घटना स्थल से फरार हो गया। घायलों को तत्काल मकरी मुखिया पति सह समाजसेवी धनंजय साह ने भवनाथपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया। जहां चिकित्सा नीतेश भारती और एस के सिंह द्वारा घायलों का इलाज किया गया। घायलों की स्थिति को देखते हुए डॉक्टरों ने उन्हें प्राथमिक उपचार के बाद आराम की सलाह दी। घटनास्थल की सुचना मिलने पर थाना के एस आई नारायण प्रसाद एवं दिनेश सिंह अस्पताल पहुंच कर जानकारी ली, वही पुलिस नें टेंपो को जब्त कर थाना ले आयी।

'कॉफी विद एसडीएम' परिचर्चा में क्षेत्र के 71 दिव्यांगजनों ने लिया भाग

दिव्यांगों ने खुलकर रखी समस्याएं, एसडीएम ने हरसंभव सहयोग का दिया भरोसा

'कॉफी विद एसडीएम' में कॉफी के साथ-साथ हमें अपनापन और प्यार भी मिला : दिव्यांगजन

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। अनुमंडल पदाधिकारी संजय कुमार ने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत अपने साप्ताहिक कार्यक्रम 'कॉफी विद एसडीएम' में गढ़वा अनुमंडल अंतर्गत विभिन्न प्रखंडों के दिव्यांगजनों को आज अपने यहां कॉफी पर आमंत्रित किया था। उनके इस आमंत्रण पर गढ़वा अनुमंडल क्षेत्र के अलावा कई आसपास के क्षेत्रों के तमाम दिव्यांग भाई बहन शामिल हुए। कार्यक्रम में प्रमुख आमंत्रित अतिथि के रूप में अन्य संबंधित विभागों के पदाधिकारी भी मौजूद थे। अधिकारियों ने आमंत्रित सदस्यों से संवाद कर उनसे जुड़ी कल्याणकारी योजनाओं संबंधी विस्तृत जानकारी दी।

संजय कुमार ने आमंत्रित सदस्यों की पारिवारिक पृष्ठभूमि के अलावा रोजमर्रा की जरूरतों और समस्याओं के बारे में भी पूछा, साथ ही उनसे पूछा गया कि वे दिव्यांग कल्याण की दिशा में प्रशासन से क्या अपेक्षाएं रखते हैं। बहुत ही मैत्रीपूर्ण माहौल में सभी की समस्यायें एक एक कर सुनने के उपरांत एसडीएम ने उन्हें हर संभव मदद का भरोसा दिलाया।

आमंत्रित सदस्यों की कई निजी समस्याओं को गंभीरता से सुनते हुए एसडीएम संजय कुमार ने जिले और प्रखंड के संबंधित पदाधिकारियों से बात कर कुछ समस्यायों का तो मौके पर ही निदान करवा दिया, जबकि शेष समस्याओं को अपने यहां दर्ज करते हुए दिव्यांग सदस्यों को आश्वस्त किया कि वे स्वयं पहल करते हुए उनकी समस्याओं के यथाशीघ्र निस्तारण का प्रयास करेंगे। इस दौरान दिव्यांग जनों ने कई रचनात्मक सुझाव भी दिये। कार्यक्रम के दौरान स्वास्थ्य विभाग से डॉक्टर संतोष मिश्रा व दिनेश उरांव मौजूद थे जिन्होंने दिव्यांगों के लिए रेलवे में रियायती टिकट, दिव्यांगता प्रमाणन बोर्ड, सर्टिफिकेट प्रक्रिया, आई कार्ड आदि को लेकर विस्तार से बताया तथा मौजूद सदस्यों की शंकाओं का समाधान किया। समाज कल्याण विभाग के प्रतिनिधि के रूप में प्रतिमा कुमारी मौजूद रहीं जिन्होंने दिव्यांगजनों को मिलने वाले विशेष सहायता यंत्रों जैसे व्हीलचेयर, हियरिंग एड आदि के बारे में जानकारी दी। सामाजिक सुरक्षा कार्यालय के शुग लाल ने पेंशन संबंधी प्रश्नों का उत्तर दिया।

देश-विदेश की खबरों के लिए क्लिक करें
www.azadsipahi.in

राँची समाहरणालय, राँची
(जिला भू-अर्जन शाखा)

आम सूचना

अरगोड़ा चौक से कटहल मोड़ तक भाया पुन्दाग पथ का चौड़ीकरण एवं मजबूतीकरण कार्य परियोजना अन्तर्गत मौजा-अरगोड़ा, पुन्दाग एवं गुटूवा में अधिग्रहित भूमि के विरूद्ध मुआवजा भुगतान हेतु विहित प्रपत्र में जिन हितबद्ध रैयतों द्वारा आवेदन अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में अबतक समर्पित नहीं किया गया है, वैसे हितबद्ध रैयतों को अंतिम अवसर के रूप में सूचित किया जाता है कि दिनांक-11.03.2025 तक मुआवजा हेतु विहित प्रपत्र में आवेदन राजस्व कागजातों के साथ समर्पित करें, अन्यथा मुआवजा राशि व्यवहार न्यायालय, राँची में जमा कर दी जाएगी, जिसकी सारी जवाबदेही संबंधित हितबद्ध रैयतों की होगी।

जिला भू-अर्जन पदाधिकारी,
राँची

PR 347816 Land Reforms(24-25).D

सांसद संजय सेठ ने रखी पीसीसी पथ की आधारशिला

आजाद सिपाही संवाददाता

मुरी। बुधवार को केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री सह रांची लोकसभा सांसद संजय सेठ ने सिल्ली मंडल के हलमाद शक्ति केंद्र में 400 फीट का पीसीसी का आधारशिला रखें। इस दौरान काफी संख्या में बीजेपी कार्यकर्ता उपस्थित हए, जिसमें पार्टी के रांची जिला ग्रामीण अध्यक्ष विनय महतो (धीरज), चोलाराम महतो, प्रहलाद महतो, कृष्ण सागर दुबे, संजय मंडल, बेलाराम बेदिया, सिल्ली मंडल अध्यक्ष अंबुज रजक, पृथ्वीपाल महतो, चितरंजन महतो आदि उपस्थित हुए।

छात्र की पिटाई के मामले की शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने की जांच

आजाद सिपाही संवाददाता

खूंटी। खूंटी प्रखंड के बगडू गांव में संचालित मॉडल स्कूल में कक्षा सात के छात्र की शिक्षक अशरफ परवेज द्वारा बेरहमी से की गई पिटाई के मामले की जांच करने के लिए मंगलवार को शिक्षा विभाग के अधिकारी स्कूल पहुंचे और पूरे मामले की जांच की। जांच के बाद विभाग को मारपीट मामले की सच्चाई पता चली। अधिकारियों को बताया गया कि मॉडल स्कूल में छात्र मोबाइल फोन लेकर जाते हैं, जिस पर लगाम लगाने के लिए स्कूल प्रशासन सख्त कदम उठाता है। इसी दौरान एक शिक्षक ने कक्षा सात के छात्र को अपने मोबाइल पर नागपुरी वीडियो देखते हुए देखा। इससे आक्रोशित शिक्षक अशरफ ने छात्र की बेरहमी से पिटाई कर दी थी। इससे उसके शरीर पर कई जख्म हो गए। छात्र ने अपने परिजनों के साथ थाने में शिक्षक के खिलाफ लिखित शिकायत की तथा सदर अस्पताल में इलाज कराया। घटना की जानकारी मिलने पर मंगलवार को जिला शिक्षा अधीक्षक अभय कुमार शील ने अस्पताल जाकर पीड़ित छात्र से घटना की जानकारी ली थी। बुधवार को जिला शिक्षा पदाधिकारी अपरूपा पॉल चौधरी, डीएसई अभय शील तथा एडीपीओ प्रदीप रवानी ने मॉडल स्कूल जाकर पूरे मामले की जांच की।

खनन विभाग ने बालू लदे चार ट्रैक्टर किये जब्त

ईचागढ़ (आजाद सिपाही)। ईचागढ़ थाना क्षेत्र में उपायुक्त और जिला खनन पदाधिकारी के निर्देश पर अवैध बालू परिवहन के खिलाफ औचक निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान चार बालू लदे ट्रैक्टर को जब्त किया गया। ईचागढ़ थाना को सौंप दिया गया। मिली जानकारी के अनुसार सिल्ली रांगामाटी सड़क पर झाड़ुआ मोड़ के पास चार ट्रैक्टर अवैध बालू लेकर जा रहा था, जहां खनन निरीक्षक समीर कुमार ओझा के द्वारा रोक कर चालान के संबंध में पुछ-ताछ किया गया। ट्रैक्टर में चालान नहीं दिखा पाने पर ट्रैक्टर को जब्त कर थाना को सौंप दिया गया। सैकड़ों ट्रैक्टर द्वारा अवैध बालू का परिवहन किया जा रहा है, जिससे सरकारी राजस्व का नुकसान हो रहा है। खनन निरीक्षक ने बताया कि अवैध बालू किसी भी हाल में चलने नहीं दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि ट्रैक्टर मालिक के खिलाफ मामला दर्ज किया जायेगा। उन्होंने कहा कि लगातार क्षेत्र में अवैध खनन और परिवहन के खिलाफ छापेमारी अभियान चलाया जा रहा है। कारवाई भी किया जा रहा है। मालूम हो कि ईचागढ़ थाना अंतर्गत विरडीह, जारगोडीह, बामुनडीह, खीरी,खोखरो, हाड़ात आदि क्षेत्र से प्रतिदिन सैकड़ों ट्रैक्टर और हाइवा से शहरी क्षेत्रों में अवैध बालू का परिवहन किया जाता है।

सैक्रेड हार्ट चर्च में मसीहियों ने विशेष मिस्सा अनुष्ठान के साथ राख बुध पर्व मनाया

मैकलुस्कीगंज (आजाद सिपाही)। मैकलुस्कीगंज स्थित सैक्रेड हार्ट चर्च में मसीहियों ने विशेष मिस्सा अनुष्ठान के साथ राख बुध पर्व मनाया। मसीहियो ने राख बुधवार की धर्मविधि के साथ मनाकर चालीसा काल की शुरूआत किया। पुरोहित देवनीश खेस ने विश्वासियों के माथे पर खजूर के राख का भस्म लगा कर चालीसा काल के उपवास में प्रवेश कराया। भस्म तिलक लगाने के उपरांत फादर खेस ने विश्वासियों को बाइबल के हवाले से यीशु के मानव मुक्ति के लिए किये गये बलिदान से रूबरू कराते हुए सेवा भावना व प्रेम का संकल्प दिलाया। इसलिए ईश्वर की उपासना करें। मौके पर तोबियस बाड़ा, संतोष भेंगरा, विन्सेंट खेस, पुष्पा खलखो, संजय खलखो, नैन्सी भेंगरा, अनिमा लकड़ा, निलम भेंगरा, सिस्टर जूली, सिस्टर जेमा, सिस्टर सूचिता, सिस्टर मनश्वेता, सिस्टर बीना, सिस्टर तेरेसा सहित बड़ी संख्या में मसीही समुदाय के लोग उपस्थित थे।

ग्रामीणों ने बैठक कर रामनवमी पूजा और सरहुल पूजा धूमधाम से मनाने का लिया निर्णय

खलारी (आजाद सिपाही)। रामनवमी मेला और सरहुल मेला को लेकर राय पंचायत के ग्रामीणो की बैठक बुधवार को राय पंचायत भवन में हुई। बैठक मे सर्वसम्मति प्रत्येक वर्ष कि भांति इस वर्ष भी रामनवमी पूजा एवं सरहुल पूजा पूरे धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया गया। साथ ही बैठक मे तीन अप्रैल को सरहुल पूजा महोत्सव के अवसर पर दोपहर दो बजे से अंबेडकर मैदान राय मे मेला का आयोजन और ढोल नगाड़े के साथ झारखंडी नृत्य और शाम 4 बजे से नागपुरी कार्यक्रम के आयोजन का निर्णय लिया गया। वहीं छह अप्रैल को रामनवमी पूजा पर शोभा यात्रा एवं झांकी निकाले जाने को भी तय किया गया। बैठक मे मुख्य रूप से विजय पहान उर्फ बैलून पहान, दुर्गा प्रसाद महतो, प्रदीप उरांव, राजेश कुमार महतो, शत्रुध्न नायक सहित अन्य ग्रामीण उपस्थित थे।

झामुमो पंचायत समितियों का गठन शीघ्र करें : जुबैर अहमद

खूंटी (आजाद सिपाही)। झामुमो के जिला कार्यालय में बुधवार को पार्टी कार्यकर्ताओं की हुई बैठक में सदस्यता अभियान की समीक्षा की गयी और पंचायत और प्रखंड कमेटियों के शीघ्र बठन करने का निर्णय लिया गया। मौके पर जिला संयोजक मंडली प्रमुख जबैरक अहमद ने सभी सदस्यों को निर्देश दिया कि पंचायत कमेटियों का गठन कर इसकी सूचना संयोजक मंडली को दें और सदस्यता रसीद जमा करें। बैठक की अध्यक्षता झामुमो जिला संयोजक प्रमुख जुबैर अहमद ने की। बैठक में जिला संयोजक मंडली सदस्य मकसूद अंसारी, सुशील पाहन, अमृत हेमरोम, भोलानाथ लाल, सुशांति कोनगाड़ी, शिशिर तोपनो, सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित थे।

बुंडू डीएसपीआफिस में सभी थानेदारों के साथ हुई क्राइम मीटिंग

बुंडू (आजाद सिपाही)। बुंडू डीएसपी ओमप्रकाश आफिस में सभी थानेदारों के साथ क्राइम मीटिंग हुई। जिसमें बुंडू डीएसपी सभी थानेदारों को अफीम की खेती को लेकर विशेष दिशा निर्देश दिया। डीएसपी ने बताया कि पूरे बुंडू अनुमंडल में पांच हजार एकड़ से अधिक अफीम की खेती को नष्ट किया गया है, और आगे भी नष्ट किया जायेगा। जेल से छूटने वाले अपराधियों पर कड़ी निगरानी रखने की बात भी कही गयी। मौके पर बुंडू थाना प्रभारी रामकुमार वर्मा, दसम फॉल थाना प्रभारी प्रशांत गौरव, तमाड़ थाना प्रभारी रोशन कुमार, राहे थाना प्रभारी यशवंत कुमार सिंह, सोनाहातु थाना प्रभारी चंदन कुमार, महिला थाना प्रभारी खुशबू वर्मा आदि उपस्थित हुए।

उपायुक्त ने किया खूंटी अंचल कार्यालय का निरीक्षण, दिये कई निर्देश

खूंटी (आजाद सिपाही)। नागरिकों को सुगम और पारदर्शी सेवा प्रदान कराने के उद्देश्य से उपायुक्त लोकेश मिश्रा ने बुधवार को खूंटी अंचल कार्यालय का निरीक्षण किया। दो घंटे से अधिक चले निरीक्षण में उपायुक्त ने अंचल कार्यालय में संचालित कार्यो की समीक्षा की और कई निर्देश दिये। उपायुक्त ने कार्यालय में कर्मियों की उपस्थिति, उनके कार्यों की प्रगति, भूमि जमाबंदी, दाखिल खारिज, सर्टिफिकेट से जुड़े मामलों के निष्पादन एवं अंचल से जुड़े विभिन्न कार्यों की समीक्षा की। निरीक्षण के क्रम में उपायुक्त ने संबंधित पदाधिकारियों एवं कर्मियों को निर्देशित किया कि वे कार्यालय में शत-प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित करें और अंचल में उत्तरदायित्व पूर्ण एवं ईमानदारी पूर्वक अपने कार्यों का निष्पादन करें। नागरिकों को सुगम और पारदर्शी सेवाएं प्रदान करना जिला प्रशासन की प्राथमिकता है, इसे हर हाल में सुनिश्चित करें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे नागरिकों की शिकायतों का शीघ्र समाधान करें। निरीक्षण के दौरान अपर समाहर्ता परमेश्वर मुंडा, अनुमंडल पदाधिकारी दीपेश कुमारी, अंचल अधिकारी एसपी आर्या और अन्य संबंधित पदाधिकारी, कार्यालय कर्मी उपस्थित थे।

डॉ भीमराव अंबेडकर जयंती कार्यक्रम को लेकर बैठक आज

खलारी (आजाद सिपाही)। डॉ भीमराव अंबेडकर पार्क डकरा में छह मार्च को संध्या 03 बजे से एसटी एससी ओबीसी एकता मंच के तत्वाधान में डॉ भीमराव अंबेडकर जंयती मनाने को लेकर बैठक आयोजित की गयी है। उक्त आश्य की जानकारी देते हुए मंच के अध्यक्ष देवपाल मुंडा ने बताया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 14 अप्रैल को डॉ भीमराव अंबेडकर पार्क डकरा में धुमधाम से डॉ भीमराव की जयंती मनायी जायेगी। उन्होने मंच के सभी पदाधिकारियों और सदस्यों को बैठक में अनिवार्य रूप से ससमय उपस्थित रहने का आग्रह किया है।

विकास मंत्री से कांग्रेस नेताओं ने की मुलाकात

खूंटी (आजाद सिपाही)। खूंटी के कांग्रेस नेताओं ने बुधवार को रांची में ग्रामीण विकास मंत्री दीपिका पांडेय से मुलाकात कर खूंटी जिले क ग्रामीण क्षेत्र की समस्याओं से उन्हें अवगत कराया। कांग्रेस नेताओं ने मंत्री को बताय कि आनेवाली भीषण गर्मी को देखते हुए पंचायती राज विभाग खूंटी द्वारा संचालित योजनाओं का अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने का आग्रह किया। उन्होंने सभी खराब चापानलों की जल्द से जल्द से मरम्मत कराने का आग्रह किया। मौके पर खूंटी जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष सुशील संगा, जिला महासचिव सयूम अंसारी, जीतवाहन महतो आदि मौजूद थे।

चौड़ा उर्दू के सहायक शिक्षक का निधन

ईचागढ़ (आजाद सिपाही)। कुकडू प्रखंड के उत्क्रमित मध्य विद्यालय चौड़ा उर्दू के सहायक शिक्षक मोहम्मद मुख्तार आलम की बुधवार को इलाज के दौरान मौत हो गयी। वह पिछले एक साल से बीमार थे। कुकडू प्रखंड के चौड़ा मांझी टोला निवासी दिवंगत मोहम्मद मुख्तार आलम अपने पीछे पत्नी और दो बच्चे छोड़ गये हैं। उनकी पत्नी पारा शिक्षक हैं। विद्यालय के प्रधानाध्यापक अब्दुल गफ्फार ने बताया कि मोहम्मद मुख्तार आलम वर्ष 2004 से पारा शिक्षक की नौकरी करते थे। 2015 में उनका चयन सरकारी सहायक शिक्षक के रूप में हुआ था। उनकी पहली पोस्टिंग रांची जिले के तमाड़ प्रखंड के रड़गांव में हुई थी। इसके बाद उनकी पदस्थापना कुकडू प्रखंड के उत्क्रमित मध्य विद्यालय चौड़ा उर्दू में हुई। तब से वह स्कूल में बच्चों को उर्दू पढ़ाते थे। उनके निधन की खबर मिलते ही पूरे शिक्षक समाज में शोक की लहर है।

मारे गये राजस्थान के व्यवसायी का सिर बरामद, दो गिरफ्तार

खूंटी (आजाद सिपाही)। राजस्थान के जोधपुर जिले के हिमोली गांव निवासी व्यवसायी पुखराज कुमार का सिर बुधवार को नामकुम थाना क्षेत्र के सुकरीडीह के पास एक झाड़ी से बरामद किया गया। इस मामले में सुकरी डीह गांव के आनंद और असीम नामक दो आरोपितों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। अन्य आरोपित फरार हैं। पुलिस ने आरोपितों के पास से कुछ रुपये भी बरामद किये हैं। ज्ञात हो कि 28 फरवरी को एक अज्ञात व्यक्ति का सिर विहीन शव मारंगहादा थाना क्षेत्र में मिला था। पुलिस के समक्ष रुपये के लिए हत्या की बात आरोपितों ने स्वीकारी है। गिरफ्तार आरोपितों ने बताया कि उन्होंने अन्य लोगों से मिलकर पोखराज की हत्या उसके 27 लाख रुपये लेने के लिए आनंद के घर में क थी। इस हत्याकांड में और कई लोग शामिल हैं, जिनकी पुलिस तलाश कर रही है। ज्ञात हो कि मृतक के भाई ने सिर कटी लाश की पहचान राजस्थान निवासी पोखराज के रूप में की गयी। यह पूरा मामला डोडा अफीम कारोबार से जुड़ा है। मामले की छानबीन में जुटी पुलिस हत्याकांड में शामिल आरोपितों को गिरफ्तार कर लूटे गये पैसों की बरामद करने में प्रयासरत है। सूत्रों ने बताया कि 27 फरवरी की रात रांची जिले के नामकुम थाना क्षेत्र के सुकरीडीह गांव में पोखराज की गला काटकर हत्या की गयी थी दो किमी दूर झाड़ीनुमा जगह पर गड्ढा खोदकर सिर को गाड़ दिया गया था। 28 फरवरी को खूंटी जिले के मारंगहादा थाना क्षेत्र अन्तर्गत कुजराम से चुकरू जानेवाला मार्ग पर जानुमडीह मंगुआरा के पास सिर विहिन शव को फेंक दिया था। खूंटी पुलिस ने हत्यारों को गिरफ्तार कर शव के सिर को बरामद कर लिया है। हालांकि पुलिस ने अभी तक मामले का खुलासा नहीं किया है। संभवतः गुरुवार को प्रेस कॉन्फ्रें में पुलिस इसका चुलासा कर सकती है। एफएसएल टीम लीडर ने बताया कि एक मानव सिर पाया गया है, जिसे गड्ढे में डालकर मिट्टी से ढंक दिया गया था। साथ ही हत्या में प्रयुक्त हथौड़ा और टांगी बरामद किया गया है, जिसे जांच के लिए लैब भेजा जायेगा और फिर आगे की कार्रवाई और अनुसंधान किया जायेगा

कर्रा अंचल कार्यालय में लगा राजस्व शिविर

खूंटी (आजाद सिपाही)। अंचल कार्यालय कर्रा में बुधवार को राजस्व शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न हल्कों के रैयतों को शुद्धिपत्र एवं पंजी दो में सुधार संबंधी प्रमाण पत्रों का वितरण किया गया। शिविर का संचालन अंचल अधिकारी वंदना भारती के नेतृत्व में किया गया। इस अवसर पर अंचल अधिकारी वंदना भारती ने कहा कि यह शिविर रैयतों की भूमि संबंधी समस्याओं के निराकरण और उनके दस्तावेजों के सत्यापन के लिए आयोजित किया गया है। उन्होंने उपस्थित रैयतों को अपने भूमि अभिलेखों को अद्यतन रखने और सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने के लिए आवश्यक प्रक्रियाओं की जानकारी दी। शिविर में संबंधित विभागीय कर्मियों ने रैयतों को राजस्व अभिलेखों में सुधार की प्रक्रिया, भूमि दस्तावेजों की शुद्धि तथा पंजी दो में संशोधन से जुड़ी आवश्यक जानकारियां दीं। शिविर में बड़ी संख्या में रैयतों ने भाग लिया और अपने दस्तावेज प्राप्त किये।

रोहिणी के दो कामगारों को दी गयी विदाई

खलारी (आजाद सिपाही)। रोहिणी परियोजना के दो कामगारो को विदाई दी गयी। सेवानिवृत्त इलेक्ट्रिशियन भीम सिंह एवं अरुण दुबे को एक कार्यक्रम आयोजित कर विदाई दी गयी। दामोदर नदी तट पर एक विदाई समारोह का आयोजन किया गया, जिसमे अधिकारी संदीप कुमार एवं प्रतीक कुमार ने दोनो सेवानिवृत्त कामगारो को माला पहनाकर एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। अधिकारियों ने सेवानिवृत्त कामगारो के स्वस्थ एव सुखमय जीवन की कामना की। इस मौके पर रामलाल, महेन्द्र प्रजापति, ध्वजा राम धोबी, चैतु, सुरेश साव, बिरसा, राजेंद्र मंडल, संदीप कुमार साहू, अनिल कुमार सेठी, बुधन सिंह आदि लोग उपस्थित थे।

राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ मगध संघमित्रा क्षेत्रीय समिति का हुआ गठन

खलारी (आजाद सिपाही)। राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ के सीसीएल मगध संघमित्रा क्षेत्र का क्षेत्रीय समिति का गठन किया गया है। नयी समिति को लेकर राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ के अध्यक्ष सह पूर्व सांसद चन्द्रशेखर दूबे द्वारा मगध संघमित्रा के महाप्रबंधक के नाम पत्र जारी उन्हे सचित कर दिया है। नयी गठित समिति में अध्यक्ष संतोष कुमार, उपाध्यक्ष दामोदर साहु, जमाल खान, खुशियाल साहु, शिवनारायण यादव, सचिव भानु प्रताप सिंह, सह सचिव बिनोद गंझू, अमित कुमार सिंह, शिव कुमार प्रसाद, बद्री साहु, संगठन सचिव बिरजू उरांव, कोषाध्यक्ष संतोष कुमार सिन्हा के अलावा कार्यसमिति सदस्यों में जलेश्वर साहु, सितन प्रजापति, समिर प्रसाद साहु, शिवनंदन साहु, महेंद्र गंझू, राम लखन साहु, अनिल साहु, राधे श्याम साहु, द्वारिका साहु, संतोष कुमार साहु, बसंत प्रसाद साहु को शामिल किया गया है। वहीं मगध संघमित्रा क्षेत्रीय समिति के गठन होने पर राकोमस नेता सह एनके एरिया अध्यक्ष बीएन पांडेय, एनके एरिया सचिव अब्दुल्ला अंसारी, ओम प्रकाश प्रजापति, सतीश पांडेय सहित अन्य यूनियन पदाधिकारी और सदस्य शामिल है।

गैंगस्टर अमन श्रीवास्तव को रिमांड पर लायी पुलिस

पतरातू (आजाद सिपाही)। कोर्ट के आदेश अनुसार पुलिस ने दो दिनों के रिमांड पर लेने के बाद होटवार जेल से अमन श्रीवास्तव को पतरातू सर्किल पुलिस ने गैंगस्टर अमन श्रीवास्तव को बुधवार रात 9:00 बजे कड़ी सुरक्षा के बीच पतरातू थाना पूछताछ के लिए लायी है। प्राप्त जानकारी के अनुसार बताया जाता है कि अमन श्रीवास्तव के खिलाफ रामगढ़ जिले के विभिन्न थानों में कई केस दर्ज हैं। इसलिए पुलिस द्वारा कई अपराधीक घटनाओं के संबंध में पूछताछ की जायेगी।

राज्य मंत्री ने चबूतरा निर्माण कार्य का किया शिलान्यास

सिकिदिरी (आजाद सिपाही)। केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने बुधवार को सिल्ली विधानसभा क्षेत्र का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने सुरसू पंचायत के हरजालुम में ढाई लाख रुपये की लागत से होने वाली चबूतरा निर्माण कार्य का शिलान्यास किया। इस अवशर पर उपस्थित ग्रामीणों को सम्बोधित किये एवं समस्याओं से अवगत हुए। उन्होंने समस्याओं का जल्द समाधान करने का आश्वासन दिया। केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ एवं ग्रामीण जिलाध्यक्ष विनय महतो धीरज का स्थानीय लोगों ने ढोल नगाड़ों के साथ जोरदार स्वागत किया। मौके पर बाबूलाल बड़ाइक, बसंत साहू, धर्मदेव रजवार, आनंद रजवार, संदीप रजवार,लक्ष्मीनारायण रजवार समेत सैकड़ों कार्यकर्ता एवं ग्रामीण मौजूद थे।

अजय कुमार भवन निर्माण विभाग के खलारी विधायक प्रतिनिधि हुए नियुक्त, लोगों ने दी बधाई

खलारी (आजाद सिपाही)। कांके विधायक सुरेश कुमार बैठा ने बुधवार को खलारी केडी प्रगति नगर निवासी अजय कुमार उर्फ बबलू को भवन निर्माण विभाग के लिए खलारी विधायक प्रतिनिधि नियुक्त किया है। अजय कुमार को विधायक सुरेश कुमार बैठा द्वारा जारी निनुक्ति पत्र कांग्रेस के जिला महासचिव राजेश सिंह मिंटू के द्वारा सौंपा गया। साथ ही आशा जताया गया कि अजय कुमार अपने कत्रव्यों को पूरी लगन एवं निष्ठा से पालन करेंगे और क्षेत्र में जनता के प्रति अपने कार्यों से विश्वास बनाये रखेंगे। वहीं खलारी प्रखंड के विधायक प्रतिनिधि नियुक्त होने पर बधाई देने वालों में कांग्रेस झारखण्ड प्रदेश लेबर सेल महासचिव राजन सिंह राजा, जिला महासचिव राजेश सिंह मिंटू, विधायक प्रतिनिधि मोनू रजक, प्रखंड अध्यक्ष साबीर अंसारी, तनवीर आलम रंजन सिंह बिट्टु, जहीर अंसारी सहित अन्य शामिल है।

मोहन नगर में युवती ने की आत्महत्या

घटना की जानकारी लेती हुए खलारी पुलिस

खलारी (आजाद सिपाही)। खलारी थाना क्षेत्र के मोहन नगर आवासीय कॉलोनी में 21 वर्षीय युवती अंनू कुमारी ने फांसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। मिली जानकारी के अनुसार घटना बुधवार सुबह करीब 11 बजे की है। मृतका के पिता अपनी बीमार पत्नी को इलाज के लिए सुबह 10 बजे केंद्रीय अस्पताल डकरा ले गये थे। दोपहर 12 बजे घर लौटे तो दरवाजा अंदर से बंद मिला। उन्होंने अपने बेटे को जानकारी दी। बेटे ने बाथरूम के रास्ते घर में दाखिल हुआ तो देखा कि उसकी बहन रसोई घर की छत में लगे पाइप से दुपट्टे के सहारे लटकी हुई थी। पड़ोसियों की मदद से उसे फंदे से उतारकर डकरा अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना पर पहुंची खलारी पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। आत्महत्या के कारणों का पता नहीं चल पाया है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया।

मैकलुस्कीगंज में सात मार्च से 10 मार्च तक होगा चार दिवसीय शिव प्रतिष्ठा रुद्र महायज्ञ

मैकलुस्कीगंज (आजाद सिपाही)। मैकलुस्कीगंज थाना परिसर में नवनिर्मित शिव मंदिर में चार दिवसीय शिव प्रतिष्ठात्मक रुद्र महायज्ञ का आयोजन सात मार्च से होगा। 10 मार्च को मूर्ति स्थापना, पूणार्हुति एवं भंडारे के साथ इसका समापन होगा। जिसका नेतृत्व आरा बिहार से आये वेदाचार्य जय प्रकाश पांडेय और दीनबंधू शास्त्री और उनके सहयोगी दिनेश पांडेय के द्वारा संपन्न कराया जायेगा। सात मार्च को मंदिर प्रतिष्ठा के शुभारंभ के रूप में कलश यात्रा निकाली जायेगी। जो मंदिर प्रांगन से कलश उठा कर दामोदर नदी से जल लेकर पुनः मंदिर तक पहुंचेंगी। मंदिर प्रतिष्ठा को लेकर भक्तों में गहरी आस्था और उत्साह देखा जा रहा है। आयोजन का अंतिम रूप देने के लिए पांच वेदी और पांच हवन कुंड के निर्माण कार्य तेज गति से चल रहे हैं। साथ ही मंडप का निर्माण भी अंतिम चरण में है। इस आयोजन को लेकर न केवल स्थानीय श्रद्धालु ही नहीं बल्कि आस-पास के गांवों के लोग भी विशेष रुचि ले रहे हैं। थाना प्रशासन और आयोजन समिति इसे सफल बनाने में पूरी तरह से जुटी हुई है, ताकि श्रद्धालु पूरे भक्तिभाव से इस महायज्ञ में भाग ले सकें।

झामुमो खलारी प्रखंड के संयोजक मंडली की बैठक में विश्रामपुर पंचायत कमेटी का गठन

आजाद सिपाही संवाददाता

अध्यक्ष सुषमा देवी और सचिव बलदेव गंझू बने

खलारी। विश्रामपुर पंचायत के बड़कीटांड में बुधवार को झारखंड मुक्ति मोर्चा खलारी प्रखंड के संयोजक मंडली की बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता संयोजक प्रमुख अनिल पासवान और संचालन चितरंजन सिंह ने किया। बैठक में संगठन के विस्तार को लेकर चर्चा किया गया। जिसके बाद पार्टी कार्यकर्ताओं द्वारा सदस्यता अभियान चलाया गया और सर्वसम्मति से विश्रामपुर पंचायत कमेटी का गठन किया गया। नव गठित पंचायत कमेटी में अध्यक्ष सुषमा देवी, उपाध्यक्ष सत्येंद्र कुमार, सचिव बलदेव गंझू, सह सचिव जगदीश भुईयां, कोषाध्यक्ष बबीता देवी के अलावा कार्यकारिणी सदस्यों को बनाया गया। बैठक में मुख्य रूप से अनिल पासवान, सुनील यादव, चितरंजन सिंह, छोटू राम, राजकुमार गंझू, अजीत चैहान, सुनीता देवी, कांता देवी सहित अन्य उपस्थित थे।

आजाद सिपाही
रांची, गुरुवार, 06 मार्च, 2025
www.azadsipahi.in
09

मजदूर के बेटे ने आइटीआइ ट्रेनिंग ऑफिसर बनकर कायम की मिशाल

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। दृढ़ इच्छाशक्ति और मन में संकल्प हो तो सफलता कदम चुमती है। गरीबी भी कभी बाधक नहीं बन सकती। इसे सार्थक और सच साबित कर दिखाया अनगड़ा के तुरूप के रहने वाले गरीब मजदूर नारायण साहू के बेटे सूरज कुमार साहू ने। अभावग्रस्त जिंदगी और विपरीत परिस्थितियों से जूझते हुए सूरज ने कभी हार नहीं मानी और कड़ी मेहनत, लगन और दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ आगे बढ़ते हुए आइटीआइ ट्रेनिंग ऑफिसर बनने के सपने को साकार किया। बतातें चलें कि पिता नारायण साहू पेशे से एक राजमिस्त्री हैं। दिन-रात मजदूरी कर अपने तीन बेटों को पढ़ाया। मां रेणु देवी ने भी बेटे की पढ़ाई में पूरा ध्यान दिया। सूरज ने प्रारंभिक शिक्षा जीपी हाईस्कूल हेसल से पूरी की है। माता-पिता बताते हैं कि सूरज आईटीआई में क्लास लेने के साथ ही प्रतियोगिता परीक्षा की भी तैयारी करते थे। इस दौरान भाई अजीत साहू और दीपू साहू ने हौसला बढ़ाया। सूरज ने अपनी इस कामयाबी के पीछे माता-पिता के वर्षों की कड़ी मेहनत और संघर्ष को श्रेय दिया। सूरज को झारखंड के श्रम नियोजन विभाग में प्रशिक्षण अधिकारी के पद पर नियुक्ति मिली है। इससे पहले सूरज डिपार्टमेंट ऑफ एटॉमिक एनर्जी के एनपीसीआईएल में प्रशिक्षु के रूप में कार्यरत थे। यहां उन्होंने तकनीकी क्षेत्र में अपने कौशल को विकसित किया। लेकिन मन में हमेशा आगे कुछ बड़ा करने का सपना था। जिसे ट्रेनिंग ऑफिसर बनकर सिद्ध कर दिया। इधर, सूरज को नियुक्ति पत्र मिलने पर परिवार सहित क्षेत्र में खुशी का माहौल है। वहीं जीपी हाईस्कूल के शिक्षकों और मित्रों ने भी उनकी उपलब्धि पर गर्व करते हुए बधाई दी।

भाजपा का सदस्यता फार्म सत्यापन होते ही जिला और मंडल चुनाव की घोषणा: घूरन राम

जिला सदस्यता सत्यापन प्रभारी ने जैलेंद्र कुमार से लिया अपडेट

कहा- सदस्यता अभियान का कर लिया गया है सत्यापन
आजाद सिपाही संवाददाता

पदाधिकारियों के साथ बैठक कर जरूरी जानकारी लेते रांची जिला चुनाव प्रदाधिकारी घूरन राम।

अनगड़ा। भाजपा के रांची जिला चुनाव पदाधिकारी सह पूर्व सांसद घूरन राम ने बुधवार को जसपुरिया बीएड कालेज सभागार में भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की। जिसमें उपस्थित जिला सदस्यता सत्यापन प्रभारी जैलेन्द्र कुमार से अपडेट लिया। इसके बाद घुरन राम ने बताया कि सदस्यता फार्म का सत्यापन होते ही प्रखंड और जिला चुनाव की घोषणा कर दी जाएगी। सदस्यता अभियान का सत्यापन कर लिया गया है। उन्होंने कहा कि संगठन चुनाव को लेकर कार्यकर्ताओं में काफी उत्साह है। इस अवसर पर सांसद प्रतिनिधि प्रमोद सिंह, रामकुमार दुबे, प्रभुदयाल बड़ाईक, संजीव तिवारी और डॉ अनिल मिश्रा आदि उपस्थित थे।

यह संसार भगवान का सुंदर बगीचा है : रश्मि किशोरी

बेड़ो (आजाद सिपाही)। महादानी मंदिर परिसर में नवनिर्मित दशभुजी मां देवी दुर्गा देवी के मंदिर में 11 दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा सह शतचंडी महायज्ञ के आयोजन से बेड़ो प्रखंड मुख्यालय में माहौल भक्तिमय बना हुआ है। सुबह से लेकर रात तक श्रद्धालु यज्ञ स्थल पहुंच कर पूजा-अर्चना कर रहे हैं। बुधवार को श्रद्धालुओं ने यज्ञ मंडप का परिक्रमा कर सुख-समृद्धि की कामना की। वहीं धार्मिक अनुष्ठान यज्ञाचार्य अंचल पाठक, मृत्यंजय पाठक, विकास पाठक, नरोत्तम पांडेय, भरतेंदु द्विवेदी, ध्रुव मिश्रा, आशुतोष पांडेय और सोनू पांडेय की अगुवाई में बतौर मुख्य यजमान साधन कुमार राय सपत्नी लखी राय, राजेंद्र साहू पत्नी अनिता देवी, सुदामा वर्मा पत्नी संगीता देवी, जोगिंद्र महतो पत्नी सुलेखा महतो और मोहन सोनी पत्नी गायत्री देवी से यज्ञचार्य ने कई धार्मिक अनुष्ठान कराए। सबसे पहले शक्ति देवी की अराधना की गई। इसके बाद गौरी गणेश के पूजन के साथ ही मां सरस्वती, मां लक्ष्मी, मां अंबिका अंबे सहित सभी आवाहित देवी-देवताओं की यज्ञशाला में बने हवन कुंड में यजमानों ने घी सामग्री से आहुतियां डाल कर मंगल कामना की। कथावाचिका रश्मि किशोरी ने भगवान के 24 अवतारों की कथा के साथ ही समुद्र मंथन की रोचक कथा सुनाया। कहा कि यह संसार भगवान का एक सुंदर बगीचा है। यहां चौरासी लाख योनियों के रूप में विभिन्न प्रकार के फूल खिले हैं। जब-जब कोई अपने गलत कर्मो द्वारा इस संसार रूपी भगवान के बगीचे को नुकसान पहुंचाने की चेष्टा करता है तब-तब भगवान इस धरती पर अवतार लेकर सजनों का उद्धार और दुर्जनों का संघार करते हैं। समुद्र मंथन की कथा सुनाते हुए कहा कि मानव हृदय ही संसार सागर है। मनुष्य के अच्छे और बुरे विचार ही देवता और दानव द्वारा किया जाने वाला मंथन है। कभी हमारे अंदर अच्छे विचारों का चिंतन मंथन चलता रहता है और कभी हमारे ही अंदर बुरे विचारों का चितन मंथन चलता रहता। जिसके अंदर का दानव जीत गया उसका जीवन दुःखी, परेशान और कष्ट कठिनाइयों से भरा होगा। वहीं, जिसके अंदर के देवता जीत गया उसका जीवन सुखी संपन्न और भगवत प्रेम से भरा हुआ होगा। इसलिए हमेशा अपने विचारों पर नजर रखते हुए बुरे विचारों को अच्छे विचारों से जीतते हुए अपने मानव जीवन को सुखमय एवं आनंद मय बनाना चाहिए।

आरटीसी बीएड कॉलेज में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस सप्ताह का शुभारंभ

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। आरटीसी बीएड महाविद्यालय में बुधवार को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस सप्ताह का आयोजन हुआ। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ ऋचा पदमा ने कहा कि एक से आठ मार्च तक कॉलेज में महिला दिवस सप्ताह मनाया जा रहा है। जिसके अंतर्गत भाषण, निबंध लेखन, चित्रकला एवं स्लोगन राइटिंग आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं। इसमें महाविद्यालय के प्रशिक्षु शिक्षक भाग लेकर अपने नेतृत्व क्षमता का विकास कर रहे हैं। कार्यक्रम में सामाजिक, राजनीतिक आदि क्षेत्रों में सफल नारी शक्ति की उपलब्धियों को महाविद्यालय में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षु शिक्षकों को अवगत कराते हुए उन्हें प्रोत्साहित करना उद्देश्य है। कार्यक्रम में सत्र 2024-26 के सभी प्रशिक्षु उपस्थित रहे। इसे सफल बनाने में व्याख्याता विनोद प्रसाद, आलोक रंजन, डॉ पूनम मेहता, डॉ भारती, डॉ प्रिया पांडे, डॉक्टर निकू, डॉ रश्मि संध्या, डॉ अंकित दुलारी गुड़िया, विनीत चौधरी, बबीता कुमारी, सीमा कुमारी, प्रियंका कुमारी आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही। मौके पर महाविद्यालय के समस्त व्याख्याता, कर्मचारी एवं अन्य उपस्थित थे।

सीताडीह में एक भूखंड पर स्वामित्व को लेकर ग्रामीणों ने किया अंचल का घेराव

ग्रामीणों के साथ मामले की सच्चाई जानने पहुंचे हैं : जैलेंद्र कुमार

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। सीताडीह स्थित एक भूखंड के स्वामित्व को लेकर बुधवार को सीताडीह के ग्रामीण अनगड़ा अंचल का घेराव करने पहुंचे। इसका नेतृत्व समाजसेवी बुधराम बेदिया कर रहे थे। बतातें चलें कि पिछले दिनों 4.90 एकड़ भूमि पर कब्जा को लेकर दो पक्षों के बीच मारपीट हुई थी। मामला अनगड़ा थाना तक भी पहुंचा था। बाद में इस मामले को लेकर बुधवार को अनगड़ा अंचल कोर्ट में दोनों पक्षों को अपने-अपने कागजात के साथ बुलाया गया था। लेकिन अंचल पदाधिकारी राजू कमल के विस डयूटी लगने के कारण अंचल कोर्ट नहीं हो सका। काफी देर तक दोनों पक्ष के लोग अंचल कार्यालय में रहे। बुधराम बेदिया ने बताया कि उक्त भूखंड जीएम लैंड है। फर्जी कागजात बनाकर उसपर कब्जा करने का प्रयास किया जा रहा है। वहीं, मौके पर पहुंचे भाजपा के पूर्व रांची जिलाध्यक्ष जैलेंद्र कुमार ने बताया कि ग्रामीणों के साथ मामले की सच्चाई जानने पहुंचे है। लेकिन सीओ साहब नहीं है। सीओ साहब ही अब इस मामले में अंतिम फैसला करेंगे। अब इस मामले की सुनवाई सीताडीह में ही किया जाए। इधर जोन्हा के सैफ अनवर ने बताया कि उक्त भूखंड मेरे परिवार की है। सात दशक से जमीन पर कब्जा है। जमीन का डीड एवं अद्यतन रसीद मेरे परिवार के नाम कट रहा है। कुछ दलाल किस्म के लोग अनावश्यक रूप से विवाद पैदा कर रहे है। अंचल कार्यालय का जो भी फैसला होगा मानेंगे। इस मौके पर जयराम महली आदि उपस्थित थे।

सेल जीतपुर कॉलोनी में घर का ताला तोड़कर चोरी

झरिया/जोरापोखर (आजाद सिपाही)। घर का ताला तोड़कर अज्ञात चोरों ने कीमती सामानों की चोरी कर ली। जिस समय घटना हुई परिजन घर पर नहीं थे। इसकी सूचना पीड़ित सरजू ने मोबाइल फोन से जोरापोखर पुलिस को दी। खबर पाते ही पुलिस जांच के लिए घटना स्थल पर पहुंची पर संपत्ति की चोरी का सही आंकड़ा पता नहीं चल पाया है। वहीं, पड़ोसी ने बताया कि सरजू की पत्नी देवंती देवी का निधन 26 फरवरी को जीतपुर में ही हुआ था। सरजू अपनी पत्नी का दाह संस्कार करने पूरे परिवार के साथ बिहार के गिधौर गये हैं। घर में ताला बंद था। बुधवार की सुबह उनका बिजली का तार खराब होने पर जब हम उसकी मरम्मती को लेकर ऊपर चढ़े तो चहारदीवारी के अंदर कमरे का ताला टूटा देखा। जबकि बाहर से ताला बंद है। वहीं, समान इधर-उधर बिखरे पड़े है। उन्होंने घटना की सूचना तुरंत सरजू को मोबाइल पोन पर दी। इजसके बाद सरजू ने जामाडोबा की रहने वाली अपनी पुत्री को मौके पर भेजा। उसने आकर देखा तो घर के अंदर रखी अलमीरा का ताला टूटा हुआ था। जबकि दो बक्सा का भी ताला टूटा था। घर में समान बिखरे पड़े थे। फिलहाल कितनी की चोरी हुई है इसकी जानकारी नहीं मिली है। सरजू के पहुंचने पर ही पता चल पाएगा कि कितने की चोरी हुई है। दूसरी ओर, जोरापोखर पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

लापुंग प्रखंड कार्यालय में शोभा की वस्तु बना शौचालय

लापुंग (आजाद सिपाही)। प्रखंड परिसर में निर्मित चार शौचालय बिना उपयोग के जर्जर हो गये हैं। प्रखंड मुख्यालय के सामने लाखों रुपया खर्च कर विधानसभा चुनाव के समय चुनाव कर्मियों के लिए एक शौचालय की मरम्मति कर उसे खोला गया था। पर दुर्भाग्य वश लापुंग मुख्यालय में एक भी शौचालय उपयोग के लिए नहीं हैं। प्रखंड परिसर में विशेष कर महिलाओं को शौच के लिए काफी परेशानी होती हैं। एक समय ऐसा था कि पूरे प्रखंड परिसर के शौचालय में पानी ही नहीं था। काफी जद्दोजहद के बाद एक शौचालय का मरम्मत कर पानी की व्यवस्था की गयी। लेकिन प्रखंड में आने वाले महिला-पुरुष इसका उपयोग नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि गेट पर ताला लगा दिया गया है। लापुंग में प्रखंड के सभी पदाधिकारी एवं जन प्रतिनिधि की नजर इस पर पड़ती है पर सभी मौन हैं।

खिजरी विधायक ने विस में उठाया डिग्री कॉलेज के लिए नवनिर्मित भवन को सौंपने का मामला

अनगड़ा (आजाद सिपाही)। खिजरी विधायक राजेश कच्छप ने बुधवार को विधानसभा सत्र के शून्यकाल में प्रखंड के बेड़वारी स्थित डिग्री कॉलेज में शीघ्र पढ़ाई शुरू कराने के मामले को प्रमुखता से उठाया। उन्होंने विस अध्यक्ष का ध्यान आकृष्ट कराते हुए कहा कि खिजरी विस क्षेत्र अंतर्गत अनगड़ा प्रखंड के बेड़वारी गांव में झारखंड सरकार के भवन निर्माण विभाग की ओर से करीब 18 करोड़ रुपये की लागत से डिग्री कॉलेज संचालन के लिए भवन का निमार्ण कराया गया था। भवन तीन साल पहले बनकर तैयार है पर अभी तक इसमें पढ़ाई शुरू नहीं हो पायी है। विधायक ने कहा कि विभागीय अधिकारी एवं संवेदक के उदासीन रवैए के कारण अभी तक भवन को सौंपा नहीं गया है। उन्होंने सवाल उठाया कि नवनिर्मित कॉलेज भवन के उपर 33 हजार वोल्ट का हाईटेंशन विद्युत तार गुजरा है। ऐसे में भवन निर्माण की स्वीकृति कैसे प्रदान की गई। विधायक ने आसन के माध्यम से सरकार से मांग किया कि इस भवन में अविलंब डिग्री कॉलेज का संचालन शुरू करते हुए हाईटेंशन विद्युत तार को हटवाने की कार्रवाई की जाए।

विधायक ने विस में उठाया एसएनएमएमसीएच अस्पताल में मरीजों की परेशानी का मामला

धनबाद (आजाद सिपाही)। विधायक राज सिन्हा ने बुधवार को झारखंड विधानसभा में शून्यकाल के दौरान धनबाद के शहीद निर्मल महतो मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल (एसएनएमएमसीएच) में जिले के आम लोगों एवं मरीजों को होने वाली समस्याओं को गंभीरता पूर्वक उठाया। सदन को बताया कि धनबाद जिला मुख्यालय अंतर्गत मेडिकल कॉलेज एसएनएमएमसीएच के इमरजेंसी वार्ड विभाग की स्थिति बदत्तर हो गई है। कहा कि सात करोड़ रुपये की लागत से बिछी ऑक्सीजन पाइपलाइन जर्जर एवं अनुपयोगी हो गई है। इमरजेंसी वार्ड में लगे सभी ऑक्सीजन रेगुलेटरों की चोरी हो चुकी है. जिसका खामियाजा यहां आने वाले हजारों मरीजों को भुगतना पड़ता है। विधायक ने सरकार से एसएनएमएमसीएच के इमरजेंसी विभाग में हुए सरकारी राजस्व की बंदरबांट की उच्च स्तरीय जांच कराते हुए जर्जर ऑक्सीजन पाइपलाइन सहित रेगुलेटरों का अधिष्ठापन करते हुए अविलंब चिकित्सा व्यवस्था दुरुस्त कराए जाने की जोरदार मांग की, ताकि धनबाद के आम लोगों को सहूलियत हो। गौरतलब हो कि धनबाद कोयलांचल सहित आसपास के जिले के भी आम गरीब मरीजों की इमरजेंसी चिकित्सा की निर्भरता एसएनएमएमसीएच पर ही है।

बंपर पैदावर के बावजूद लागत मूल्य नहीं मिलने से खेतों में ही पड़े हैं टमाटर

बेड़ो सब्जी मंडी में दो रुपये किलो की दर से बिक रहे टमाटर, किसानों में निराशा

आजाद सिपाही संवाददाता

बेड़ो। प्रखंड मुख्यालय सहित क्षेत्र के गांवों में इस बार टमाटर की बंपर पैदावार हुई है। लेकिन किसानों के लिए यह खुशी से ज्यादा निराशा का कारण बनी हुई है। बेड़ो सब्जी मंडी में टमाटर का थोक भाव महज दो रुपये प्रति किलो बिक रहा है। जिस कारण किसान अपने टमाटर को खेत में ही छोड़ने को मजबूर हैं। क्योंकि टमाटर तोड़वाने, बाजार तक ले जाने में काफी खर्च हो जाता है। किसानों के अनुसार टमाटर की खेती में लगने वाली लागत बिक्री मूल्य से तीन गुना अधिक है। वहीं टमाटर की खेती करने वाले किसानों ने बताया कि यहां के लोगों की आजीविका का मुख्य साधन खेती है। यहां के सभी लोग कृषि से जुड़े हैं। यहां 12 महीने सब्जी की खेती होती है। लेकिन इस बार यहां के किसानों की स्थिति काफी दयनीय है। प्रखंड क्षेत्र में इस बार टमाटर की बंपर पैदावार हुई है। जिस कारण टमाटर की कीमतों में काफी गिरावट आई है। व्यापारी इसे दो रुपये प्रति किलो खरीद रहे हैं। ऐसे में किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है। टमाटर की कीमत को लेकर किसानों ने बताया कि कोल्ड स्टोरेज की सुविधा नहीं है। कोल्ड स्टोरेज की सुविधा होती तो टमाटर को सुरक्षित रखा जा सकता था, लेकिन सुविधा ना होने के कारण टमाटर को खेत में ही छोड़ना पड़ रहा है। जो टमाटर बाजार में भेजे गए थे, वे भी नहीं बिक पाए हैं। किसानों ने जिला और प्रखंड प्रशासन से मांग की है कि प्रखंड में कोल्ड स्टोरेज की व्यवस्था की जाए, ताकि फसल को बर्बाद होने से बचाया जा सके। किसानों का कहना है कि जिस तरह से खाद बीज महंगा है। सिंचाई के लिए डीजल महंगा है। ऐसे में दो से पांच रुपए में सब्जी बेचने से किसानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। अगर यही स्थिति रही तो किसानों को भारी नुकसान होगा। हम अपने बच्चों को क्या खिलाएंगे।

जैलेंद्र कुमार ने पीड़ित परिवार को आर्थिक-खाद्य मदद दी

सिकिदिरी (आजाद सिपाही)। सांडी गांव के भोला महतो (32) का निधन पिछले दिनों गंभीर बीमारी से हो गयी थी। घर में पत्नी, दो साल की बेटी और छह साल के बेटा के अलावा बुजुर्ग पिता जगरनाथ महतो, पत्नी सुनीता देवी हैं। घर की माली हालत ठीक नहीं है। श्राद्ध कर्म में सहयोग के लिए नीलमोहन पाहन ने पूर्व जिलाध्यक्ष जैलेंद्र कुमार से संपर्क किया. जिसके बाद जैलेंद्र कुमार खुद मौके पर पहुंच कर पीड़ित परिवार को आर्थिक एवं खाद्य सामग्री दे कर सहयोग किया। इस मौके पर पूर्व मुखिया नीलमोहन पाहन, भोलानाथ महतो, कुलेश महतो, निर्मल महतो, जितेंद्र महतो और राम मुंडा आदि उपस्थित रहे।

सड़क हादसे में स्कूटी सवार दो घायल

बेड़ो (आजाद सिपाही)। बेड़ो-लापुंग सड़क पर रोगो गांव के समीप बुधवार की शाम 6.30 बजे ऑटो एवं स्कूटी की टक्कर में स्कूटी सवार दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। उनके नाम लापुंग के दोलैचा निवासी प्रकाश महली और इटकी के कुल्ली भंडरा की दिव्या कुमारी (14) के रुप में हुई।

युवक ने मां-बेटे को जान से मारने की दी धमकी, पीड़ित पहुंचे थाना

गुमला (आजाद सिपाही)। सिसई प्रखंड क्षेत्र के पुसो थाना अंतर्गत एक गांव निवासी विवाहित महिला ने मंगलवार के अपराह्न 4 बजे गुमला थाना पहुंचकर गांव के ही एक युवक पर छेड़छाड़ 6 वर्षीय बेटे को जान से मारने की धमकी देने के मामले को लेकर गुमला थाना पहुंची। जानकारी देते हुए महिला ने बताया 8 वर्ष पूर्व एक युवक से उसका विवाह हुआ था। गांव के ही रहने वाला और रिश्ते में देवर लगने वाला युवक बहला फुसला कर उसे अपने प्रेम जाल में फंसा लिया। इसके बाद दोनों गांव छोड़कर भाग गये। वहीं दोनों का एक नाजायज पुत्र भी है। मामले को लेकर 2020 में गांव में पंचायत की गयी थी जिसमें महिलाओं को अपने पति के साथ रहने की बात पर सहमति बनी इसके बाद महिला अपने पति के साथ रहने लगी। इसके बाद आरोपी युवक महिला के पति और बेटे को जान से मारने की धमकी देता है। कहता है पति-पत्नी साथ में रहे लेकिन मुझसे संबंध बना रहेगा अन्यथा तीनों को जान से मार दिया जायेगा। वही मामले को लेकर पति-पत्नी बेटे को लेकर गुमला थाना पहुंचे।

जमीन विवाद को लेकर नवयुवक संघ ने बनारी में की सड़क जाम

निजी जमीन को धार्मिक रूप देकर हड़पने की हो रही है साजिश

आजाद सिपाही संवाददाता

बिशुनपुर। थाना क्षेत्र के बनारी में बुधवार की सुबह जमीन विवाद को लेकर एक घंटे तक नवयुवक संघ के द्वारा सड़क जाम किया गया। इसके बाद अंचलाधिकारी शेखर वर्मा एवं थाना प्रभारी राकेश कुमार सिंह के द्वारा लोगों को समझा बुझा कर रोड जाम को हटाया गया।

इस मौके पर झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता अशोक उरांव एवं नवयुवक संघ बनारी के विवेक साहू ने अंचल अधिकारी को बताया कि बानारी स्थित दुर्गा मंदिर के पीछे का जमीन को रूपेशवर पाल सिंह के द्वारा अरविंद साहू को बेच दिया गया है जबकि यह जमीन मंदिर के जमीन का हिस्सा है। जिसे उनके पूर्वजों के द्वारा दान पत्र के माध्यम से मंदिर को दिया गया है। जिस कारण उक्त जमीन का दाखिल खारिज का आवेदन को कैंसिल करते हुए मंदिर के नाम पर करने का मांग किया। जहां अंचल अधिकारी शेखर वर्मा ने कहा कि दाखिल खारिज एक न्यायिक प्रक्रिया के तहत होता है। इसके लिए आंचल से नोटिस दोनों पक्ष को भेजा गया है। दोनों पक्ष अपना पेपर प्रस्तुत करेंगे और दो-तीन तारीख पड़ने के बाद न्यायिक प्रक्रिया के तहत उचित कार्रवाई किया जायेगा। जिसके पक्ष में साक्ष्य होगा उसी के नाम पर दाखिल खरीज किया जायेगा। इसके बाद ग्रामीणों के द्वारा सड़क जाम हटाया गया।

क्या है मामला

बनारी दुर्गा मंदिर के पीछे का जमीन नागेश्वर पाल सिंह के नाम से दर्ज है उनका बेटा रूपेश्वर पाल सिंह का कहना है कि मेरे पूर्वज के द्वारा मंदिर बनाने के लिए मौखिक रूप से 2 डिसमिल जमीन दिया गया था। जहां मंदिर बना हुआ है। जिसके बाद पुनः नवयुवक संघ के आग्रह पर मंदिर का संचालन के लिए चार दुकान सेड बनाने के लिए जमीन दिया गया ताकि उक्त दुकान का भाड़ा से मंदिर का संचालन हो सके। परंतु अब शेष बचे मेरे जमीन को जबरदस्ती नवयुवक संघ के द्वारा मंदिर के नाम पर हड़पने की साजिश रची जा रही है। जिस कारण मैं उक्त जमीन को अरविंद कुमार साहू को बेच दिया है। इस दरमियान नवयुवक संघ के द्वारा फर्जी दान पत्र भी बनाया गया है जिसका हस्ताक्षर मेरे पिताजी का हस्ताक्षर से बिल्कुल मैच नहीं करता है। जिसको लेकर मैं न्यायालय में 420 का मुकदमा दायर करूंगा।

जमीन हड़पने की हो रही है साजिश

इधर जमीन के खरीददार अरविंद कुमार साहू का कहना है कि मैं रुपेश्ववर पाल सिंह से 4 मई 2023 को बनारी दुर्गा मंदिर के पीछे का खाली जमीन को तीन डेसिमल रजिस्ट्री कराया। जिसकी जानकारी नवयुवक संघ को हुई तो उनके द्वारा 3 फरवरी 2024 की रात को बजरंगबली का मूर्ति का स्थापना कर जमीन हड़पने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जब मैं इसकी शिकायत थाना को किया तो नवयुवक संघ के द्वारा 6 फरवरी 2024 को बैठक कर लिखित समझौता किया गया। अरविंद साहू बजरंगबली की स्थापित मूर्ति से 7:30 फीट पीछे अपना घेराव करेंगे इसके बाद अरविंद के द्वारा इस समझौता के आधार पर घेरा कार्य प्रारंभ किया तो पुनः संघ के लोगों ने 17 मार्च 2024 को भीड़ में आकर घेरा को तोड़ते हुए अरविंद के ऊपर झूठा एसटीएसी का मुकदमा दायर किया गया जो बाद में फर्जी साबित हो गया।

अचल संपत्ति को हड़पना चाहता है नवयुवक संघ

इधर 85 वर्षीय रूपेश्वर पाल सिंह ने कहा कि मेरे अचल संपत्ति पर बनारी के नवयुवक संघ का नजर लगा हुआ है जिसे वह किसी भी प्रकार धार्मिक रूप देकर हड़पने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने इसके लिए प्रशासन से मदद की गुहार लगाया है।

बाजार टांड़ गुमला में लगा गंदगी का अंबार

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। गुमला शहर के बाजार टांड़ का 22 फरवरी को नगर परिषद द्वारा सैरात बंदोबस्ती के लिए खुला डाक आयोजित किया गया था। जिसमें 24 शर्तों के साथ खुली बोली लगायी गयी थी। जिसमें बाजार टांड़ के नियमित साफ सफाई की शर्त भी शामिल था बावजूद संवेदक द्वारा बाजार टांड़ की साफ सफाई की ओर किसी प्रकार का ध्यान नहीं दिया जाता है जबकि बाजार से लाखों रुपये पैसा की वसूली की जाती है। बाजार टांड़ में मंगलवार और शनिवार को साप्ताहिक बाजार लगाया जाता है। इसके बाद बाजार को यूं ही छोड़ दिया जाता है जिससे वहां गंदगी का अंबार लग जाता है। मांस मछली और सड़े हुए सब्जी के अवशेष से दुर्गंध फैल जाती है। जिससे आसपास के लोगों को भारी परेशानी भी होती है। मामले को लेकर मंगलवार की अपराह्न 4 बजे कांग्रेस नेता मिनहाज खान बाजार टांड़ पहुंचे और वस्तु स्थिति से अवगत हुए। उन्होंने बताया बाजार टांड़ में शराब की बिक्री भी की जाती है। वहीं पूरे बाजार में गंदगी का अंबार लगा हुआ है। ठेकेदार को बाजार की साफ सफाई की और ध्यान देना चाहिए। मामले को लेकर नगर परिषद के प्रशासक सार्जेन मरांडी से उनका पक्ष लेने की कोशिश की गयी है लेकिन उन्होंने इस मामले में टालमटोल करते हुए कुछ भी जवाब नहीं दिया।

पोढ़ापाठ टोले में सोलर पावर ग्रिड की स्थापना, 21 घरों को मिली बिजली

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। जिले के घाघरा प्रखंड अंतर्गत आदर पंचायत के पोढ़ापाठ टोले (पीवीटीजी टोला) में सोलर पावर ग्रिड की स्थापना कर 21 घरों को बिजली आपूर्ति से जोड़ा गया। यह कार्य झारखंड बिजली वितरण निगम लिमिटेड (जेबीवीएनएल) के तत्वावधान में जरेडा द्वारा सफलतापूर्वक संपन्न किया गया।

10 किलोवाट पावल क्षमता की इस सौर ऊर्जा परियोजना के माध्यम से प्रत्येक घर को 500 वॉट बिजली उपलब्ध करायी गयी है, जिससे स्थानीय निवासियों को घरेलू उपयोग के लिए निर्बाध बिजली मिल सकेगी। इस पहल से न केवल टोले के लोगों का जीवन स्तर सुधरेगा, बल्कि बच्चों की शिक्षा, सुरक्षा एवं आर्थिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहन मिलेगा।

उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी के निर्देशानुसार, जिले के उन दूरस्थ क्षेत्रों में, जहां पारंपरिक बिजली आपूर्ति संभव नहीं है, वहां सोलर लाइट की व्यवस्था कर ग्रामीणों को बिजली से आच्छादित करने का कार्य किया जा रहा है। इसी क्रम में पोढापाठ टोले में सोलर पावर ग्रिड की स्थापना की गयी, जिससे ग्रामीणों को ऊर्जा की सुविधा मिल सके और वे विकास की मुख्यधारा से जुड़ सकें।

ग्रामवासियों ने सरकार के इस प्रयास के प्रति आभार प्रकट किया और कहा कि इससे उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव आयेगा। इस परियोजना के अंतर्गत इंपैनल्ड कंपनी द्वारा आगामी पांच वर्षों तक सोलर सिस्टम का रखरखाव किया जायेगा, जिससे इसकी प्रभावशीलता और दीर्घकालिक उपयोग सुनिश्चित हो सके।

किसानों के बीच तरबूज के पौधे और जैविक खाद वितरित

बिशनपुर (आजाद सिपाही)। ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन (ओएनजीसी), नयी दिल्ली द्वारा संचालित 'संकुल आधारित ग्राम विकास कार्यक्रम' के तहत आइएसडीजी रिसर्च फाउंडेशन द्वारा बुधवार को बिशुनपुर प्रखंड अंतर्गत बिशुनपुर एवं सेरका ग्राम के अनुसूचित जनजातीय कृषकों को उत्पादन वृद्धि कर जीविकोपार्जन के लिए उन्नत किस्म के तरबूज के पौधे एवं जैविक खाद सामग्री वितरण किया गया। प्रत्येक कृषकों को 1150 तरबूज के पौधे का वितरण किया गया। इस वितरण कार्यक्रम में विकास सहयोगी अजीत उरांव, संस्था के कार्यकर्ता सहदेव साहू एवं नीरज गोप सहित अन्य ग्रामवासी उपस्थित थे।

देश-विदेश की खबरों के लिए क्लिक करें
www.azadsipahi.in

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को लेकर चार दिवसीय कार्यक्रम शुरू

आजाद सिपाही संवाददाता

सिसई। बैजनाथ जालान महाविद्यालय सिसई में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को लेकर चार दिवसीय कार्यक्रम की शुरूआत बुधवार को किया गया। कार्यक्रम महाविद्यालय एन एस एस के द्वारा संपन्न कराया जायेगा। कार्यक्रम के तहत छात्र छात्राओं के लिए प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। इस क्रम में बुधवार को महिला सशक्तिकरण, महिलाओं की समाज में भुमिका, समानता का अधिकार विषय पर भाषण और निबंध प्रतियोगिता हुई। 6 और 7 मार्च को अलग-अलग प्रतियोगिता आयोजित किया जायेगा। वहीं आठ मार्च को विशेष कार्यक्रम होगा। जिसके लिए अतिथियों को आमंत्रित किया गया है। साथ ही प्रतियोगिता में सफल प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जायेगा। इस दौरान मुख्य रुप से एनएसएस कार्यक्रम पदाधिकारी सोनिया कुमारी, प्रवीण बसंती, जेन सिसिलिया बारला, सुदीप्ती खुशबू लकड़ा, डॉ रेखा कुमारी, डॉ इंद्रजीत राम, डॉ दीपक कुमार, रोज फिलोमिना डुंगडुंग, विनीता गुड़िया आदि के नेतृत्व में प्रतियोगिता कराया गया।

बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने किया रक्तदान

गुमला (आजाद सिपाही)। सदर अस्पताल गुमला परिसर के ब्लड बैंक में बजरंग दल के तीन कार्यकर्ताओं ने रक्तदान किया। रक्तदान करने वालों में कमलेश साहू ने ओ पॉजिटिव, सूरज केवट ने ओ पॉजिटिव, और प्रदीप सिंह ने ए पॉजिटिव ब्लड रक्तदान किया है तीनों रक्तदाताओं ने सदर अस्पताल में इलाजरत मरीज की सहायता हेतु रक्तदान किया। विश्व हिंदू परिषद बड़गांव के अध्यक्ष प्रदीप सिंह स्वस्थ व्यक्ति को प्रत्येक तीन-चार महीने का अंतराल में रक्तदान करना चाहिए रक्तदान करने से व्यक्ति कई गंभीर बीमारियों से भी हमेशा दूर रहता है। मौके पर विकाश राम, यशराज सिंह, प्रकाश कुमार लैब टेक्नीशियन संगीता कुमारी अंजू कुमारी मीडिया प्रभारी रोहित खंडेलवाल उपस्थित थे।

महिला ने मारपीट और गोली मारने की धमकी को लेकर थाना में सौंपा आवेदन

रायडीह (आजाद सिपाही)। रायडीह प्रखंड के सुरसांग थाना क्षेत्र अंतर्गत तुल मूंगा सरई टोली गांव निवासी अनुराधा देवी ने मंगलवार की अपराह्न 4 बजे सुर सांग थाना को आवेदन सौंप कर तुल मूंगा छापर टोली गांव के रामजी किसान, महेश किसान और फुद नाथ किसान पर घर आकर मारपीट, गाली गलौज और गोली मारने की धमकी देने का आरोप लगाया है। थाना में दिये आवेदन के अनुसार महिला ने बताया मंगलवार की सुबह 8 बजे तीनों पिता पुत्र मेरे घर पहुंचे और घर का सामान निकाल कर घर खाली करने को कहा अन्यथा सारा सामान बाहर फेंक देने की बात कही। वही घर खाली नहीं करने पर जान से मार देने की धमकी दी। अनुराधा ने बताया विगत 9 वर्षों से स्वर्गीय सोहन किसान के घर पूरे परिवार के साथ किराये पर रहती हूं। एक वर्ष पूर्व रामजी किसान गोली मारने की धमकी दिया था। करीब एक माह पूर्व उस घर को खाली करने को कहा था। इस बात की जानकारी मकान मालकिन को दी तो मकान मालकिन बोली कि घर खाली नहीं करना है। जिस समय तीनों घर पर आये उस समय मैं घर पर अकेली थी। मैं एक महिला जनप्रतिनिधि हूं इसलिए कभी भी पति के साथ इधर-उधर जाना पड़ता है। हम लोगों को इनसे जान का खतरा है। महिला ने थाना को आवेदन देते हुए तीनों पर कानूनी कार्रवाई करने और अपने परिवार को सुरक्षा मुहैया कराने की मांग की है।

पीएचइडी और नगर परिषद दुरुस्त करे पेयजलापूर्ति : रमेश कुमार

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। गुमला विधायक भूषण तिर्की ने विस में शहरी पेयजल की समस्या से संबंधित मामला उठाया है। इसका स्थानीय स्तर पर समर्थन किया जा रहा है। चुंकि यह जनहित से जुड़ा है। इसपर कांग्रेस के प्रदेश सचिव रमेश कुमार चीनी ने विधायक का आभार जताया है। कहा है कि निश्चित इस समस्या से शहरवासी विशेषकर गर्मी के दिनों में चिंतित और भुक्तभोगी होते है। इसलिए पीएचइडी और नगर परिषद आपसी सामंजस्य बनाकर नियमित जलापूर्ति की व्यवस्था दुरूस्त करें। साथ ही जिन इलाकों में पाइपलाइन का विस्तारीकरण नहीं हो सका है। उन इलाकों को पाइपलाइन से जोड़ते हुए पेयजलाअपूर्ति की दिशा में कार्य करें। जिससे कि जनता को कोई भी समस्या न हो। बताते चलें कि लगातार पिछले कई सालों से रमेश कुमार पेयजलापूर्ति को लेकर आंदोलन करते रहे हैं। रमेश कुमार के आंदोलन का यह असर है कि वर्तमान में जलापूर्ति हो भी रही है। अन्यथा शहरी क्षेत्र में भी जलापूर्ति का हाल बद से बदतर था।

जिलिंगसिरा के युवक ने लगायी फांसी

घाघरा (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के जिलिंगसिरा निवासी 25 वर्ष सतनाम उरांव अपने घर के अपने कमरे के कंडी में दुपट्टा के सहारे फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतक के पिता मंगल उरांव बताया कि दो दिन पूर्व मेरा पुत्र सतनाम एवं उसकी पत्नी में कुछ विवाद हुआ था। जिसके बाद उसकी पत्नी दो दिन पूर्व अपने मां के घर चली गयी और वापस नहीं आयी। वही मंगल उराव ने बताया कि जब खेत से मेरी बड़ी बहू दीपरानी ने मंगलवार को शाम 4 बजे घर वापस आयी तो देखा की सतनाम उराव अपने कमरे में दुपट्टा के सहारे फांसी लगा लिया है। जिसकी सूचना तुरंत अपने ससुर मंगल उरांव को दी।

ऊर्जा संरक्षण पर किसानों को मिला प्रशिक्षण

आजाद सिपाही संवाददाता

घाघरा। झारखंड नवीकरणीय ऊर्जा विकास एजेंसी जेरेडा द्वारा कृषि क्षेत्र में ऊर्जा संरक्षण पर किसानों और अन्य संबंधित हित धारकों के लिए एकदिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण का शुभारंभ प्रखंड विकास पदाधिकारी दिनेश कुमार, बीटीएम नीरज कुमार सिंह, मुखिया चांदनी देवी, पंचायत समिति सदस्य सरवन उरांव सहित अन्य ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया।

प्रशिक्षण में किसानों को पीएम कुसुम सोलर योजना अंतर्गत चल रहे सोलर पंप सेट के विस्तृत जानकारी दी गयी। साथ ही बताया गया कि सरकार द्वारा सब्सिडी पर सोलर पंप सेट दिया जा रहा है। जिसका किसान समुचित लाभ उठाएं। मौके पर बीडीओ दिनेश कुमार ने कहा कि पीएम कुसुम सोलर योजना अंतर्गत मिल रहे पंपसेट का सभी किसान आवश्यकता अनुसार लाभ उठायें। और कृषक क्षेत्र में आगे बढ़े। मौके पर कृषि पदाधिकारी शंकर खेरवार, प्रखंड तकनीकी प्रबंधक नीरज कुमार सिंह, एटीएम पूनम बेदिया, शुभम मिंज, रितु किंडो, नीलकंठ कुमार सहित कई पंचायत के मुखिया, पंचायत समिति सदस्य, कृषक मित्र, प्रगतिशील कृषक उपस्थित थे।

बीडीओ ने पंचायत समिति सदस्यों के साथ की बैठक

घाघरा (आजाद सिपाही)। घाघरा बीडीओ दिनेश कुमार ने अपने कार्यालय कक्ष में पंचायत समिति सदस्यों के साथ बैठक किया। बैठक की अध्यक्षता प्रखंड प्रमुख सविता देवी ने की। बैठक में पंचायत समिति सदस्यों को अपने-अपने क्षेत्र में पेयजल, सड़क, आंगनबाड़ी रिपेयर वह अन्य कार्य से संबंधित योजना चयन करने की बात बीडीओ दिनेश कुमार द्वारा कही गयी। ताकि मूलभूत योजना ली जा सके और ग्रामीणों को उसका लाभ मिल सके। वही टाइट और अनटाइड मिलाकर योजनाओं का चयन करने की बात बीडीओ द्वारा कही गयी। मौके पर उप प्रमुख शिव देवी, बीपीआरओ शंकर साहू, सीमा देवी, पंचायत समिति सदस्य श्रवण उरांव, रामरीत उरांव, रिंकू लोहरा सहित कई पंचायत समिति सदस्य, कर्मी उपस्थित थे।

स्पोर्ट्स

अपने वनडे करियर में स्मिथ ने 170 मैचों में 43.28 की औसत से 5,800 रन बनाये, जिसमें 12 शतक और 35 अर्धशतक शामिल हैं। इसके अलावा, उन्होंने 28 विकेट भी हासिल किये।

स्टीव स्मिथ ने वनडे क्रिकेट से लिया संन्यास

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के सेमीफाइनल में भारतीय टीम के खिलाफ हार के बाद टूर्नामेंट से बाहर हुई ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट टीम के अनुभवी खिलाड़ी स्टीव स्मिथ ने वनडे फॉर्मेट को अलविदा कह दिया है।

स्मिथ चैंपियंस ट्रॉफी में पैट कमिंस की अनुपस्थिति में ऑस्ट्रेलियाई टीम की कमान संभाल रहे थे। उन्होंने मंगलवार को खेले गये सेमीफाइनल में 73 रनों की पारी भी खेली, लेकिन वह ऑस्ट्रेलिया को जीत नहीं दिला पाये और टीम को भारत के हाथों चार विकेट से हार का सामना करना पड़ा था। फिलहाल स्मिथ टेस्ट और टी20 क्रिकेट में खेलना जारी रखेंगे।

अपने वनडे करियर को अलविदा कहते हुए स्मिथ ने बुधवार को क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया की ओर से जारी बयान में कहा कि यह एक शानदार सफर रहा है और मैंने हर पल का आनंद लिया। दो विश्व कप जीतना अविश्वसनीय अनुभव था। अब 2027 विश्व कप की तैयारी शुरू करने का सही समय है, इसलिए मुझे लगता है कि यह वनडे से संन्यास लेने का उपयुक्त अवसर है।

उन्होंने आगे कहा कि टेस्ट क्रिकेट अभी भी मेरी प्राथमिकता है और मैं विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल, वेस्टइंडीज दौरे और फिर इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू सीरीज को लेकर उत्साहित हूं। मुझे लगता है कि मेरे पास अभी भी इस प्रारूप में देने के लिए बहुत कुछ है।

स्मिथ, ऑस्ट्रेलिया के सबसे सफल एकदिवीय खिलाड़ियों में से एक रहे हैं। उन्होंने 2010 में वेस्टइंडीज के खिलाफ ऑलराउंडर के रूप में अपना वनडे डेब्यू किया था। बाद में वह टीम के प्रमुख बल्लेबाज बन गये। अपने वनडे करियर में उन्होंने 170 मैचों में 43.28 की औसत से 5,800 रन बनाये, जिसमें 12 शतक और 35 अर्धशतक शामिल हैं। इसके अलावा, उन्होंने 28 विकेट भी हासिल किये। स्मिथ ऑस्ट्रेलिया की 2015 और 2023 की विश्व कप विजेता टीमों का अहम हिस्सा रहे।

नाबालिग से दुष्कर्म के दो आरोपी को जेल

गुमला (आजाद सिपाही)। सदर थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी 16 वर्षीय लड़की को 4 फरवरी को सरस्वती पूजा विसर्जन देखने जाने के क्रम में दो युवकों ने अगवा कर लिया और जबरन दुष्कर्म घटना को अंजाम दिया था। मामले को लेकर परिजन गुमला थाना में प्राथमिकी दर्ज कराये थे। घटना के बाद दोनों आरोपी फरार चल रहे थे। मंगलवार को गुप्त सूचना पर गुमला थाना प्रभारी सुरेंद्र कुमार सिंह ने गांव में छापामारी की। जिसमें अंजन गांव निवासी 18 वर्षीय आलोक उरांव और रोहित उरांव को गिरफ्तार कर लिया। घटना के दिन दोनो ने सरस्वती पूजा विसर्जन देखने गयी नाबालिक लड़की को अगवा कर एक नवनिर्मित भवन ले गये। इसी बीच मौका पाकर लड़की भागने लगी तभी दीवार से टकराकर वह गिर गयी। इसके बाद दोनों युवक उसके साथ लगातार दुष्कर्म किया।

एसपी ने बसिया थाना का निरीक्षण किया

मुख्य चौक-चौराहों पर सीसीटीवी कैमरा लगवाने का दिया निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

बसिया। पुलिस अधीक्षक, गुमला ने बुधवार को बसिया थाना का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी, बसिया, पुलिस निरीक्षक, बसिया अंचल थाना प्रभारी, बसिया एवं अन्य पदाधिकारी मौजूद थे। निरीक्षण से पूर्व थाना में पदस्थापित सभी पदाधिकारियों के साथ बैठक की गयी। सभी को निर्देश दिया गया कि अपने क्षेत्र- बीट से संबंधित सभी जानकारी रखेंगे, रूचि लेकर निगरानी रखेंगे तथा अधिक से अधिक आसूचनाओं का संकलन करेंगे। निरीक्षण के क्रम में थाना सिरिस्ता में संधारित

होने वाले सभी पंजी/ अभिलेखों एवं संचिकाओं का अवलोकन किया गया। सभी पंजी/संचिकाओं का रख-रखाव के संबंध में आवश्यक निर्देश दिया गया। महिलाओं से संबंधित अपराध की रोक-थाम हेतु स्कूल/ कॉलेज में जागरूकता अभियान चलाने का निर्देश दिया गया। थाना क्षेत्र के मुख्य चौक चौराहों पर सीसीटीवी कैमरा लगवाने तथा अपराध नियंत्रण के संबंध में थाना प्रभारी को आवश्यक निर्देश दिया गया, साथ ही थाना भवन, थाना परिसर एवं पुलिस कर्मियों के रहने वाले बैरक का भी निरीक्षण किया गया। बैरक में रहने वाले पुलिस पदाधिकारी/ कर्मियों को अपने आस-पास साफ सुथरा रखने का निर्देश दिया गया। थाना निरीक्षणोपरांत बसिया थाना परिसर स्थित निमार्णाधीन पुलिस निरीक्षक बसिया अंचल कार्यालय का निरीक्षण किया तथा आवश्यक निर्देश दिया गया।

रागिनी सिंह ने विस में उठायी धनबाद जिले के 27 गावों को निगम से अलग करने की मांग

धनबाद (आजाद सिपाही)। झरिया विधायक रागिनी सिंह ने बुधवार को विधानसभा के सत्र में झरिया सहित धनबाद जिले के 27 गावों को नगर निगम से अलग करने की मांग उठायी है। उनके इस मांग का समर्थन हटिया के विधायक नवीन जायसवाल, धनबाद के विधायक राज सिन्हा के अलावा टुंडी से झामुमो के विधायक मथुरा प्रसाद महतो ने भी किया है।

सिंदरी विधायक ने उठाया बंद पड़े अस्पताल का मुद्दा

धनबाद (आजाद सिपाही)। विधायक चंद्रदेव महतो ने विधानसभा सत्र में बुधवार को सिंदरी स्थित एफसीआइ के बंद पड़े बड़ा अस्पताल का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि डेढ़ लाख की आबादी के बीच एक भी अस्पताल नहीं है। पहले एफसीआइ का अस्पताल चल रहा था, तो लोगों को सुविधा मिलती थी। लेकिन अब मरीजों को धनबाद लेकर जाना पड़ता है।

ससुराल आकर युवक ने की खुदकुशी

धनबाद (आजाद सिपाही)। सुदामडीह थाना क्षेत्र के स्वारडीह बस्ती में एक युवक ने फांसी का फंदा लगाकर खुदकुशी कर ली। मृतक की पहचान विवेक राय (40) के रूप में हुई है। उसका पैतृक गांव पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले के भुइयांडीह गांव में है। वह पेशे के एक दिहाड़ी मजदूर है। वह एक विवाह समारोह में शामिल होने सुदामडीह के स्वारडीह बस्ती में आया था। वहीं मंगलवार की रात घर में बाइक पर खड़े होकर घर की छत के सहारे फंदा लगाकर झूल गया। बुधवार की सुबह घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंची सुदामडीह पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से शव को फंदे से उतारा। शव का पंचनामा करने के बाद अपने साथ ले गयी। लगे हाथ इसकी सूचना मृतका के परिजनों को दे दिया। उधर, स्वजनों ने बताया कि विवेक की शादी 10 साल पहले सुदामडीह निवासी रीना देवी से हुआ था। उनकी कोई संतान नहीं है। मृतक विवेक के पिता रासु राय और मां का पहले ही निधन हो चुकी है। पता चला है कि विवेक तीन फरवरी को पत्नी रीना के मामा के घर एक विवाह समारोह में शामिल होने पहुंचा था। वह शराब का अत्यधिक सेवन करता था। पुलिस मामला दर्ज कर जांच में जुट गयी है।

डीटी पीएंडपी ने एएडीओसीएम परियोजना का किया निरीक्षण, दिये जरूरी निर्देश

फुसरो/बेरमो (आजाद सिपाही)। सीसीएल के डीटी पीएंडपी चंद्रशेखर तिवारी ने बुधवार को सीसीएल ढ़ोरी क्षेत्र के एएडीओसीएम (अमलो) परियोजना का निरीक्षण किया। उन्होंने माइंस स्थित शिशा महल और वी पॉइंट में जाकर माइंस का निरीक्षण किया। साथ ही ऑटसोर्सिंग में लगे बीआरआर कंपनी के मशीनों का निरीक्षण कर खुश हुए। कहा कि सभी मशीन नई और बढ़िया तरीके से कम कर रही है। इ दौरान उन्होंने सीसीएल के अधिकारी को कोयला उत्पादन को लेकर विशेष दिशा निर्देश दिया। कहा कि ओबी हटाने के बाद यहां कोयला का अपार भंडार है। कोयला उत्पादन में सभी वर्कर की सुरक्षा अति आवश्यक है। सभी अधिकारी इसे प्रमुखता से ले। लगे हाथ अधिकारियों को वित्त वर्ष में लक्ष्य हासिल करने का निर्देश दिया। कहा कि सुरक्षित ढंग से कोयले का उत्पादन करते हुए अपने लक्ष्य को हासिल करें। बताया कि ढ़ोरी क्षेत्र में कोयले का भंडार है। एएडीओसीएम परियोजना भविष्य में बढ़िया कोयला उत्पादन करेगा। आगामी वर्ष 2025-26 में ढ़ोरी क्षेत्र के लिए कई योजनाएं हैं। वहीं, जीएम रंजय सिन्हा ने कहा कि सुरक्षित ढंग से कोयला उत्पादन करते हुए वित्त वर्ष अपने लक्ष्य को जरूर हासिल करेंगे। इसके पहले सीसीएल डोरी के चक्रीय रेस्ट हाउस में क्षेत्र के सभी अधिकारियों के साथ डीटी पीएंडपी ने बैठक कर कई निर्देश दिए। इस मौके पर पीओ राजीव कुमार सिंह, जीएम ऑपरेशन मनोज कुमार पाठक, खान प्रबंधक मुनिनाथ सिंह, एसओ ईएंडएम गौतम मोहंती, एरिया सेल्स ऑफिसर राजेश कुमार गुप्ता, डिस्पैच ऑफिसर विवेक कुमार सिंह, पर्सनल अभिषेक कुमार सिंहा, संतोष कुमार, अरुण कुमार सिंहा, पीई एक्सभेशष सुभाष चंद्र सिंहा, डिप्टी मनेजर ज्ञानदीप कुमार, बीआरआर कंपनी के कुणाल सिंह आदि मौजूद थे।

नवविवाहिता की संदिग्ध परिस्थिति में मौत, ससुराल वालों पर हत्या का आरोप

फुसरो/बेरमो (आजाद सिपाही)। बेरमो थाना क्षेत्र के बालुबैंकर में 19 वर्षीय एक नवविवाहिता की संदिग्ध परिस्थिति में मौत होने का मामला प्रकाश में आया है। उसका शव ससुराल के क्वार्टर से बरामद हुआ। यह खबर जंगल में लगी आग की तरह फैल गयी और लोगों की भारी भीड़ जुट गयी। घटना की सूचना पाकर परिजन एवं पड़ोसी भी पहुंच गये। तुरंत इसकी सूचना बेरमो पुलिस को दी गयी। जिसके बाद एसआई ननका उरांव, जोसेफ तिर्की, मो साजिद असांरी, एएसआई लक्ष्मण चौधरी, महिला थाना एएसआई रोजमेरी मस्सी कुर्ती, आरक्षित रहमत असांरी, नेमन तिग्गा और रोबिन हांसदा घटनास्थल पर पहुंच गये। मृतका की पहचान पूनम देवी के रूप में हुई है। वहीं, मृतका के पिता बिनोद गिरि के आरोप पर पुलिस ने उसके पति राहुल कुमार को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है। साथ ही उसके परिजनों से भी पूछताछ की। इसके बाद पचंनामा कर शव को पोस्टमार्टम के लिए बोकारो सदर अस्पताल भेज दिया। दूसरी ओर, मृतका की सास कविता देवी ने बताया कि उसका ससुराल चतरोचट्टी थाना क्षेत्र के कुरकनालो में है। पर वर्तमान में करीब 10 साल से बालुबैंकर स्थित कर्वाटर में रहकर रोजी रोजगार कर परिवार का भरण- पोषण करती हैं। पति बासुदेव गिरी एवं पुत्र राहुल कुमार मजदूरी करते है। अपने पुत्र राहुल कुमार का विवाह पेंक नारायणपुर थाना क्षेत्र के हरलाडीह बस्ती निवासी बिनोद गिरी की बडी बेटी पूनम कुमारी से 12 जूलाई 2024 को करायी थी। मृतका पूनम पांच बहनों में सबसे बड़ी थी। मंगलवार की शाम पूनम अपने कमरे में जाकर दरवाजा अंदर से बंद कर सो गयी। देर रात खाना खाने के लिए उठाने का प्रयास किया तो भीतर से कोई आवाज नहीं आयी। इसपर अपने पुत्र को बुलवाया, जो ईंट बना रहा था। कापी मशक्कत के बाद घर के पीछे से कमरे में गया तो पूनम अचेत अवस्था में मिली। वह खटीया से गमछा फंसाकर बेसुध पड़ी थी। जांच की गयी, तो उसकी मौत हो चुकी थी। उसने ऐसा क्यों किया। इसकी जानकारी नहीं है। उधर, बेरमो पुलिस ने कहा कि प्राप्त आवेदन के आलोक में पुलिस अग्रेत्तर कार्रवाई करेगी। कहा कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही स्थिति स्पष्ट होगी।

पिटाई से घायल ट्रक चालक की मौत, आक्रोशित लोगों ने शव को सड़क पर रखकर किया हंगामा

- एक मार्च को बुरी तरह पिटाई के बाद गंभीर रूप से हुआ था घायल, चार नामजद सहित 10 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज

आजाद सिपाही संवाददाता

सड़क पर शव रखकर हंगामा करते लोग।

धनबाद। हिल कॉलोनी रेल एसपी आवास के पास रहने वाले ट्रक चालक सुरेंद्र यादव की पिटाई के बाद मौत होने से लोगों का आक्रोश बुधवार को भड़क उठा। परिजनों-परिचितों के अलावा स्थानीय ग्रामीणों और यादव महासभा के प्रतिनिधियों ने रणधीर वर्मा चौक पर सुरेंद्र का शव सड़क पर रखकरजमकर बवाल काटा। प्रदर्शनकारियों ने मृत सुरेंद्र के हत्यारों को अविलंब गिरफ्तार करने और मृतक के परिजनों को उचित मुआवजा देने की मांग की। बतातें चलें कि बरवाअड्डा थाना क्षेत्र के कौआबांद राइस मिल के पास कुछ लोगों ने विगत एक मार्च को सुरेंद्र के साथ बुरी तरह मारपीट की थी। गंभीर रूप से घायल सुरेंद्र को असर्फी अस्पताल में भर्ती कराया था, जहां रविवार की दोपहर उसने दम तोड़ दिया। उधर, मामले के प्रत्यक्षदर्शी गवाह एवं कांड के सूचक मृतक के भाइ रवींद्र यादव ने बरवाअड्डा थाना में दुहाटांड़ निवासी जगु पासवास, उसके दो भाई रंजन और मुनचुन पासवाल के अलावा दुहाटांड़ के ही विशाल पासवान के खिलाफ भाई पर जावलेना हमले करने की प्राथमिकी दर्ज करायी थी। पुलिस को बताया था कि एक मार्च की रात करीब 11 बजे चारों नामजद के अलावा 10 अज्ञात लोगों ने उसे और उसके भाई सुरेंद्र यादव को घेर कर लोहे के रॉड से बुरी तरह पिटाई कर दी थी। इस दौरान जेब से पांच हजार और भाई की जेब से 10 हजार रुपये नकद की छिनताई कर ली थी। उधर, हंगामा की सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची और लोगों को समझा बुझा कर शांत कराया। साथ ही आरोपितों को जल्द से जल्द गिरफ्तार करने का आश्वासन दिया। जिसके बाद लोग शांत हुए और अवरोध हटा लिया।

दूसरी ओर, मृतक के भाई रवींद्र ने बताया कि छह महीना पहले ही भाई की शादी हुई थी। उसकी हत्या के बाद उसके परिवार का क्या होगा। रवींद्र ने बताया कि भाई ट्रक चालक है। इस कारण कुछ लोगों के साथ छोटे-मोटे विवाद थे। इसी कारण उसकी हत्या कर दी गयी।

झारखण्ड सरकार
राजस्व, निबंधन एवं भूमि सुधार विभाग
(जिला भू–अर्जन कार्यालय, राँची)
प्रारंभिक अधिसूचना
(अधिनियम–30/2013 की धारा–11 (1) के अधीन)
"खेलगाँव से नामकुम पथ तक (लं0–6.275 कि0मी0) निर्माण कार्य परियोजना"

चूँकि झारखण्ड सरकार/समाहर्त्ता को यह प्रतीत होता है मौजा–गाड़ी, खटंगा, लोवाडीह एवं सामलौंग, थाना सं. क्रमशः–194, 179, 213 एवं 212, अंचल–बड़ागांई, कांके एवं अरगोड़ा, जिला–राँची में भूमि सार्वजनिक प्रयोजन, यथा परियोजना–"खेलगाँव से नामकुम पथ तक (लं0–6.275 कि0मी0) निर्माण कार्य परियोजना" हेतु अपेक्षित है, प्रभावित परिवारों के पुनर्वासन एवं पुनर्व्यस्थापन के प्रयोजनार्थ अपर समाहर्त्ता अथवा नियम 2(1) (ख) के तहत् नियुक्त पदाधिकारी प्रशासक के रूप में नियुक्त किए गए हैं। अतएव अधिसूचित किया जाता है कि मौजा–गाड़ी, खटंगा, लोवाडीह एवं सामलौंग, थाना सं. क्रमशः–194, 179, 213 एवं 212, अंचल–बड़ागांई, कांके एवं अरगोड़ा, जिला–राँची में उपर्युक्त कथित परियोजना के लिए कमोवेश रकबा क्रमशः–3.306, 7.351, 7.661 एवं 3.173 एकड़, कुल रकबा–21.491 एकड़ भूमि मानक माप का भू–खण्ड, जिसका विस्तृत विवरणी निम्नलिखित है, अर्जनाधीन है:–

मौजा–गाड़ी

खाता सं0	सर्वे प्लॉट सं0	स्वामित्व का प्रकार	भूमि का प्रकार	अर्जन के अधीन क्षेत्रफल (एकड़ में)	हितबद्ध व्यक्ति का नाम व पता	सीमा (भूखंड सं0) उ0	द0	पू0	प0
4	1765	रैयती	टांड़–II	0.190	ठीषुन उरांव वल्द बंचु उरांव वगैरह	1763	1755	1764	1767
66	1763	रैयती	टांड़–II	0.156	नान्हु उरांव वल्द टेटा उरांव वगैरह	1775	1764	176	1775
124	1775	रैयती	दोन–II	0.394	राम क्रिस्तान, पाने क्रिस्तान पेसरान मंगरा क्रिस्तान वगैरह	1794	1763	1973	1770
133	1776	रैयती	दोन–II	0.125	शनिचखा क्रिस्चन वगैरह पे0–गोटा क्रिस्चन वगैरह	1792	1775	1977	1973
	1971			0.078	अज्ञात	1970	1976	1970	1972
12	1972	रैयती	दोन–II	0.093	कोका क्रिस्तान वल्द भाड़े क्रिस्तान वगैरह	1969	1970	1970	1973
111	1968	रैयती	दोन–II	0.121	महादेव उरांव पे0 मनला उरांव वगैरह	1966	1968	1966	1968
111	1967	रैयती	टांड़–II	0.071	महादेव उरांव पे0 मनला उरांव वगैरह	1966	1968	1966	1968
	1966			0.339	अज्ञात	1965	1967	1978	1990
45	1965	रैयती	टांड़–II	0.179	ठिसुन उरांव वल्द बचू उरांव वगैरह	1793	1966	सिवाना	1791
45	1757	रैयती	दोन–II	0.152	ठिसुन उरांव वल्द बचू उरांव वगैरह	1756	1574	1758	1756
	1970			0.097	अज्ञात	1969	1976	1977	1971
107	1969	रैयती	दोन–II	0.136	मतला उरांव वगैरह पे0–फगुवा उरांव वगैरह	1966	1970	1978	1968
100	1756	रैयती	दोन–II	0.172	बेचुवा उरांव, शनिचरवा उरांव पे0–बलूआ उरांव वगैरह	1767	नाला	1767	1755
104	1759	रैयती	दोन–II	0.037	भोला उरांव वल्द बुधू उरांव वगैरह	निज	निज	नदी	1764
45	1767	रैयती	दोन–II	0.271	ठिसुन उरांव वल्द बचू उरांव वगैरह	1770	1766	1765	निज
169	1574		परती नाली	0.055	गैरमजरूआ				
169	1764		परती कदीम	0.631	गैरमजरूआ				
169	1762		परती कदीम	0.004	गैरमजरूआ				
169	1758		परती कदीम	0.005	गैरमजरूआ				
			कुल	3.306					

मौजा–खटंगा

खाता सं0	सर्वे प्लॉट सं0	स्वामित्व का प्रकार	भूमि का प्रकार	अर्जन के अधीन क्षेत्रफल (एकड़ में)	हितबद्ध व्यक्ति का नाम व पता	सीमा (भूखंड सं0) उ0	द0	पू0	प0
	796			0.242	अज्ञात	786	767	767	सिवाना
65	787	रैयती	टांड़–II	0.425	मुकुन्द महतो, रामनाथ महतो पिता–चौने महतो वगैरह	789	796	788	सिवाना
9	788	रैयती	परती कदीम	0.105	जगना उरांव वल्द पोहा उरांव वगैरह	788	796	765	787
	789			0.629	अज्ञात	785	787	792	787
65	785	रैयती	परती कदीम	0.824	मुकुन्द महतो, रामनाथ महतो पिता–चौने महतो वगैरह	783	789	790	782
	783			0.516	अज्ञात	781	785	784	782
	777			1.653	एन सेक्टर मिस जे.भी. स्टार्स वगैरह	772	782	780	सिवाना
	780			0.227	अज्ञात	778	781	805	777
63	772	रैयती	परती कदीम	1.139	एन0वी0 स्टार मिस जे.भी. स्टार्स वगैरह	744	777	771	सिवाना
	744			0.448	अज्ञात	773	सिवाना	766	सिवाना
11	743	रैयती	टांड़–II	0.203	वासु वोधन वगैरह	742	744	745	सिवाना
52	742	रैयती	टांड़–II	0.110	नगटु कासी मुण्डा वल्द हेनका मुण्डा वगैरह	741	743	740	सिवाना
	781			0.830	अज्ञात	780	783	805	777
			कुल	7.351					

मौजा–लोवाडीह

खाता सं0	सर्वे प्लॉट सं0	स्वामित्व का प्रकार	भूमि का प्रकार	अर्जन के अधीन क्षेत्रफल (एकड़ में)	हितबद्ध व्यक्ति का नाम व पता	सीमा (भूखंड सं0) उ0	द0	पू0	प0
121	800		नाली	0.057	गैरमजरूआ मालिक	निज	निज	निज	निज
103	1022	रैयती	दोन–I	0.065	शोभा उरांव वहिरा, बुधुआ उरांव पिता चतुआ उरांव वगैरह	1021	सिवाना	1023	903
103	1021	रैयती	दोन–I	0.021	शोभा उरांव वहिरा, बुधुआ उरांव वगैरह	1018	1022	1024	903
19	1009	रैयती	दोन–II	0.090	गुजु साहु वल्द नन्दु साहु वगैरह	1008	1019	1040	1010
19	1008	रैयती	दोन–II 15	0.035	गुजु साहु वल्द नन्दु साहु वगैरह	1007	1009	1043	1011
	1007			0.002	पतरस, जिवासी, जोहन, लंगड़ा अलविस वल्द सुखद उरांव वगैरह	1001	1008	1049	1009
	1054			0.001	अज्ञात	1055	1049	1053	995
47	1057	रैयती	दोन–III	0.004	पतरष उरांव, जोउली उरांव, पे0 सुखर उरांव वगैरह	1058	1051	1104	1052
39	1059	रैयती	दोन–II	0.214	जयप्रकाष निर्मल लकड़ा वल्द जोदन लकड़ा वगैरह	1060	1102	1101	983
45	1060	रैयती	दोन–III	0.240	देयार सिंह वल्द ठाकुर सिंह वगैरह	1061	1059	1098	982
	1061			0.146	अज्ञात	1062	1060	1091	981
61	1062	रैयती	दोन–III	0.147	बाधु उरांव वल्द चमरा उरांव वगैरह	1064	1061	1091	980
72	1064	रैयती	दोन–III	0.069	टुईया बधुआ उरांव हडवा उरांव सिरिल उरांव मोरीष उरांव अलविष उरांव पे0 बिरसा उरांव वगैरह	1065	1062	1091	1063
72	1065	रैयती	दोन–III	0.144	टुईया बधुआ उरांव वो पेषरान बिरसा उरांव वगैरह	1059	1064	1091	1099
21	1089	रैयती	दोन–III	0.061	छोटका घासी उरांव वल्द थालो उरांव वगैरह	1087	1065	1090	1097
21	1087	रैयती	दोन–II	0.180	छोटका घासी उरांव वल्द थालो उरांव वगैरह	1088	1091	1081	1047
21	1088	रैयती	दोन–II	0.048	छोटका घासी उरांव वल्द थालो उरांव वगैरह	1072	1087	1080	1087
21	1072	रैयती	दोन–II	0.056	छोटका घासी उरांव वल्द थालो उरांव वगैरह	1073	1088	1079	1071
57	921	रैयती	दोन–III	0.330	बन्धु उरांव वल्द रघु उरांव वगैरह	896	919	896	923
54	896	रैयती	दोन–III	1.075	पौलीषु बड़ा वल्द बाघराए बड़ा वगैरह	900	921	902	894
4	900	रैयती	टांड़–III	0.308	बकास्त	894	896	1127	897
4	899	रैयती	दोन–III	0.352	बकास्त	1127	900	900	900
103	1023	रैयती	दोन–II	0.063	शोभा उरांव वहिरा बुधुआ उरांव, पिता चतुआ उरांव वगैरह	1024	सिवाना	1025	1022
103	1024	रैयती	दोन–II	0.140	शोभा उरांव वहिरा बुधुआ उरांव, पिता चतुआ उरांव वगैरह	1017	1023	1025	1021
47	1027	रैयती	दोन–I	0.143	पतरष उरंव जोउली उरांव पे0 सुखर उरांव वगैरह	1040	1025	1028	1019
48	1053	रैयती	दोन–III	0.018	पतरष उरंव जोउली उरांव पे0 सुखर उरांव वगैरह	1052	1049	1050	1054
48	1051	रैयती	दोन–I	0.302	पतरष उरंव, जोउली उरांव, पे0–सुखर उरांव वगैरह	1057	1050	1049	1052
47	1104	रैयती	दोन–II	0.073	पतरष उरंव जोउली उरांव पे0 सुखर उरांव वगैरह	1102	1102	1103	1057
48	1102	रैयती	दोन–II 8	0.247	पतरष उरंव, जोउली उरांव, पे0 सुखर उरांव वगैरह	1059	1104	1101	1058
54	904	रैयती	टांड़–III	0.002	पौलुष बड़ा वल्द बाधराए बड़ा वगैरह	902	909	905	896
	873			0.008	अज्ञात	876	928	896	निज
	923			0.411	अज्ञात	873	924	921	928
	924			0.014	अज्ञात	923	925	922	926
	925			0.008	अज्ञात	924	926	922	928
70	928	रैयती	टांड़–III	0.014	बुधु उरांव वल्द गोविन्द उरांव वगैरह	873	926	923	निज
	926			0.201	अज्ञात	928	917	923	927
	917			0.463	अज्ञात	926	1068	918	932
21	1068	रैयती	टांड़–III	0.130	छोटका घासी उरांव वल्द थाली उरांव वगैरह	917	1072	1073	निज
21	1069	रैयती	दोन–III	0.175	छोटका घासी उरांव वल्द थाली उरांव वगैरह	1068	1072	1060	1067
	1071			0.025	अज्ञात	1069	1088	1072	निज
	1063			0.008	अज्ञात	1065	1062	1064	978
47	1103	रैयती	दोन–II	0.061	पतरष उरांव, जोआरी उरांव पे0–सुखर उरांव वगैरह	1102	1105	1105	1104
47	1105	रैयती	दोन–II	0.205	पतरष उरांव, जोआरी उरांव पे0–सुखर उरांव वगैरह	1103	1106	निज	1057
47	1106	रैयती	परती कदीम	0.019	पतरष उरांव, जोआरी उरांव पे0–सुखर उरांव वगैरह	1105	1051	1107	1051
48	1050	रैयती	दोन–III	0.056	पतरष उरांव, जोआरी उरांव पे0–सुखर उरांव वगैरह	1051	1047	1049	1054
72	1047	रैयती	दोन–III	0.101	टुईआ बुधुआ उरांव वो पे0–बिरसा उरांव वगैरह	1050	1045	निज	1046
68	1046	रैयती	दोन–III	0.313	बुधुआ मुण्डा वल्द बन्धुआ मुण्डा वगैरह	1054	1045	1047	निज
48	1043	रैयती	दोन–II 5	0.270	पतरष उरांव, जोउली उरांव, पे0–सुखर उरांव वगैरह	1046	1042	1045	1007
	1045			0.035	अज्ञात	1043	1044	1041	1007
997	1042	रैयती	दोन–III	0.019	शनीचरक उरांव वो पे0–एतवा उरांव वगैरह	1043	1039	निज	1041
97	1041	रैयती	दोन–III	0.053	शनीचरक उरांव वो पे0–एतवा उरांव वगैरह	1043	1040	1042	1009
97	1040	रैयती	दोन–II 2	0.079	शनीचरक उरांव वो पे0–एतवा उरांव वगैरह	1009	1027	1039	1009
72	1016	रैयती	दोन–II	0.071	टुईया बुधुआ उरांव वो पे0–बिरसा उरांव वगैरह	1009	1024	1025	निज
	1017			0.289	अज्ञात	1016	1024	1027	1018
			कुल	7.661					

मौजा–सामलौंग

खाता सं0	सर्वे प्लॉट सं0	स्वामित्व का प्रकार	भूमि का प्रकार	अर्जन के अधीन क्षेत्रफल (एकड़ में)	हितबद्ध व्यक्ति का नाम व पता	सीमा (भूखंड सं0) उ0	द0	पू0	प0
259	766	रैयती	दोन–II	0.087	जकरीआ परउस मुण्डा, पे0–एतवा मुण्डा वगैरह	744	902	762	902
202	745	रैयती	टांड़–II	0.122	बुधु उरांव, कड़ीया उरांव, सुखराम उरांव, पे0–बिरसा उरांव वगैरह	786	766	788	744
207	787	रैयती	दोन–III	0.098	मुटका उरांव वल्द गुजुवा उरांव वगैरह	786	788	789	745
241	786	रैयती	दोन–III	0.068	बकास्त भुईंहरी	785	787	730	749
240	785	रैयती	दोन–III	0.093	बकास्त भुईंहरी	784	786	730	749
7	784	रैयती	दोन–II	0.177	कजरू उरांव, पकु उरांव, कुमरा उरांव, पे0–कदु उरांव वगैरह	780	785	748	747
117	781	रैयती	दोन–II	0.115	सोमा मुण्डा, पहलवान मुण्डा, लंगड़ा मुण्डा, पे0–सौना मुण्डा वगैरह	780	784	782	747
117	780	रैयती	दोन–II	0.184	सोमा मुण्डा, पहलवान मुण्डा, लंगड़ा मुण्डा, पे0–सौना मुण्डा वगैरह	779	781	782	747
202	778	रैयती	दोन–II	0.218	बुधु उरांव, कड़ीया उरांव, सुखराम उरांव, पे0–बिरसा उरांव वगैरह	776	779	848	747
202	779	रैयती	दोन–II	0.288	बुधु उरांव, कड़ीया उरांव, सुखराम उरांव, पे0–बिरसा उरांव वगैरह	778	780	848	747
104	776	रैयती	दोन–II	0.173	जेतुआ मुण्डा वल्द मोकरे मुण्डा वगैरह वगैरह	774	778	777	775
126	773	रैयती	दोन–II	0.082	दुलास कोइरी, परसुराम कोइरी वल्द दुर्गा कोईरी वगैरह	772	774	851	772
126	774	रैयती	दोन–II	0.081	दुलास कोइरी, परसुराम कोइरी वल्द दुर्गा कोईरी वगैरह	773	775	777	747
52	772	रैयती	दोन–II	0.164	मो0 लुटन कुवारी वल्द माधो तेली वगैरह	771	773	854	755
84	771	रैयती	दोन–II	0.064	बुचुआ उरांव, डीडा उरांव, पे0–कान्दु उरांव वगैरह	770	772	854	770
84	770	रैयती	दोन–II	0.067	बुधुवा उरांव, डीडा उरांव, पे0–कान्दु उरांव वगैरह	796	771	771	790
7	799	रैयती	टांड़–II	0.104	कजरू उरांव, पकु उरांव, कुमरा उरांव, पे0–कदु उरांव वगैरह	859	747	889	799
84	800	रैयती	टांड़–II	0.048	बुचुआ उरांव, डीडा उरांव, पे0–कान्दु उरांव वगैरह	802	902	801	902
207	788	रैयती	दोन–III	0.100	मुटका उरांव वल्द गुजुवा उरांव वगैरह	787	797	789	745
	856			0.280	अज्ञात	सिवाना	766	निज	निज
259	767	रैयती	दोन–II	0.076	जकरीआ परउस मुण्डा, पे0–एतवा मुण्डा वगैरह	766	767	निज	निज
	769			0.152	अज्ञात	767	770	निज	790
239	791	रैयती	टांड़–II	0.166	बकास्त	788	793	790	745
	792			0.166	अज्ञात	793	800	निज	799
			कुल	3.173					

यह अधिसूचना भू–अर्जन, पुनर्वासन और पुनर्व्यस्थापन में उचित प्रतिकर एवं पारदर्शिता अधिकार अधिनियम, 2013 (अधिनियम संख्या 30/2013), की धारा–11(1) के उपबंधों के अधीन सभी संबंधित व्यक्तियों के लिए जारी की जाती है।

भूमि की योजना का निरीक्षण जिला भू–अर्जन पदाधिकारी, राँची के कार्यालय में किसी कार्य दिवस को कार्यावधि में किया जा सकेगा। झारखण्ड सरकार/समाहर्त्ता–सह–समुचित सरकार उक्त अधिनियम की धारा 12 में यथा उपबंधित एवं यथा विनिर्दिष्ट कार्यों के समुचित निष्पादन हेतु अपेक्षित किसी भूमि का सर्वेक्षण एवं उसकी प्रविष्टि करने, किसी भूमि के किसी स्तर को मापने के लिए अवभूमि खोदने या भू–वेधन–छिद्र करने सहित सभी अन्य कार्यों के संचालन करने हेतु जिला भू–अर्जन पदाधिकारी, राँची और उनके कर्मचारी को प्राधिकृत करती है।

अधिनियम की धारा 11 (4) के अधीन कोई व्यक्ति जिला समाहर्त्ता के पूर्विक अनुमोदन के बिना इस अधिसूचना के प्रकाशन की तिथि से प्रारंभिक अधिसूचना में विनिर्दिष्ट भूमि का कोई अंतरण यथा क्रय/विक्रय नही करेगा या ऐसा कोई अंतरण नही करवाएगा या ऐसी भूमि पर कोई अवभार नही उत्पन्न करेगा। अधिनियम की धारा 15 के अधीन यथा उपबंधित इस अधिसूचना के प्रकाशन की तिथि से साठ (60 दिनों) के अन्तर्गत भू–अर्जन की बाबत किसी प्रकार की आपत्तियाँ हितबद्ध व्यक्ति द्वारा जिला भू–अर्जन पदाधिकारी, राँची के समक्ष दर्ज की जा सकेगी।

अमीन, जि0भू0अ0का0,राँची। | कानूनगो, जि0भू0अ0का0,राँची। | जि0 भू0 अ0 पदा0, राँची। | अपर समाहर्त्ता, राँची। | उपायुक्त, राँची।

PR 347821 Land Reforms(24-25)D

एनटीपीसी बोंगाइगांव ने नागालैंड के मोन जिले को दिये चिकित्सा वाहन

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। नागालैंड के मोन जिले में स्वास्थ्य सेवाओं को बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए एनटीपीसी लिमिटेड ने मोन के जिला प्रशासन को दो उन्नत जीवन रक्षक एंबुलेंस वैन और दो मुर्दा वैन सौंपे। इस वाहनों को अर्नब मैत्रा के उपस्थिति में कस्तूरी मैत्रा बर्दवी शिकला लेडीज क्लब एनटीपीसी बोंगाईगांव की अध्यक्ष और ओंकार नाथ एजीएम (एचआर) एनटीपीसी बोंगाईगांव द्वारा सौंपा गया। इस कार्यक्रम में मोन जिला प्रशासन का प्रतिनिधित्व करते हुए अजीत कुमार वर्मा आइएएस उपायुक्त उपस्थिति थे। यह पहल एनटीपीसी के कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) प्रयासों का हिस्सा है। इस पहल का उद्देश्य दूरदराज के मोन जिले के सामने आने वाली स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों का समाधान करना है। उन्नत जीवन रक्षक एम्बुलेंस आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं से लैस हैं। यह सुनिश्चित करते हुए कि गंभीर देखभाल बिना किसी देरी के आपातकालीन स्थितियों में रोगियों तक पहुंचे। इन एंबुलेंसों को जीवन-रक्षक सहायता प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है, जिसमें पारगमन के दौरान आपात स्थिति को कुशलतापूर्वक संभालने के लिए वेंटिलेटर, डिफाइब्रिलेटर और निगरानी प्रणाली जैसे उपकरण शामिल हैं।

इसके अतिरिक्त प्रदान की गयी मुर्दा वैन का उद्देश्य जिले में एक महत्वपूर्ण आवश्यकता को पूरा करते हुए मृतक के लिए गरिमापूर्ण और सम्मानजनक परिवहन सुनिश्चित करना है। ये वैन शवों को संरक्षित करने के लिए उचित प्रशीतन सुविधाओं से लैस हैं, जिससे परिवारों पर बोझ कम होता है और यह सुनिश्चित होता है कि पारंपरिक रीति-रिवाजों का सम्मान के साथ पालन किया जा सके।

कार्यक्रम के दौरान अर्नब मैत्रा ने अपनी सीएसआर पहल के माध्यम से सामुदायिक कल्याण के लिए एनटीपीसी की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। श्री मैत्रा ने कहा कि यह योगदान दूरदराज के क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे को बढ़ाने और मोन के निवासियों को समय पर और सम्मानजनक सेवाएं प्रदान करने के एनटीपीसी के व्यापक दृष्टिकोण का हिस्सा था। अजीत कुमार वर्मा आइएएस ने एनटीपीसी के समय पर समर्थन की सराहना की और दूरदराज के समुदायों के लिए स्वास्थ्य देखभाल पहुंच के अंतर को पाटने में इस तरह के योगदान के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री वर्मा ने क्षेत्र के उत्थान के लिए एनटीपीसी के लगातार प्रयासों के लिए जिला प्रशासन की ओर से आभार व्यक्त किया। 98.26 लाख मूल्य की इस परियोजना से मोन जिले के 3.47 लाख से अधिक निवासियों को लाभ होगा, जिससे क्षेत्र की आपातकालीन स्वास्थ्य देखभाल प्रतिक्रिया क्षमताओं में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। एनटीपीसी बोंगाईगांव, अपनी विभिन्न सीएसआर पहलों के माध्यम से, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और सतत विकास पर ध्यान देने के साथ, उत्तर-पूर्व भारत में समुदायों के सामाजिक उत्थान और कल्याण में योगदान देना जारी रखता है।

अपने पिता बीजू पटनायक को नवीन पटनायक ने पुष्पांजलि अर्पित की

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। विपक्ष के नेता और बीजद सुप्रीमो नवीन पटनायक ने बुधवार को अपने पिता और पूर्व मुख्यमंत्री बीजू पटनायक को उनकी 109वीं जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित की। नवीन पटनायक ने भुवनेश्वर के फॉरेस्ट पार्क में बीजू पटनायक की मूर्ति पर पुष्प अर्पित किये। उनके साथ बीजू जनता दल के कई वरिष्ठ नेता और भुवनेश्वर के मेयर भी थे। कार्यक्रम की शुरूआत में बोलते हुए बीजद नेता संजय दास बर्मा ने कहा कि गांवों में त्रिस्तरीय पंचायतों की स्थापना में बीजू पटनायक की अहम भूमिका थी। संविधान सभा में महिला विधायकों के लिए 33 प्रतिशत सीटें आरक्षित करने के पीछे भी वे ही जिम्मेदार हैं। उनके योगदान को याद करने के लिए उनके जन्मदिन पर पंचायती राज दिवस मनाया जाता था, लेकिन मौजूदा सरकार का इस दिन को पंचायती राज दिवस के रूप में मनाने का फैसला महापुरुष का अपमान है। वहीं, सुलता देव ने महांगा में बीजू पटनायक की मूर्ति का सिर काटे जाने की घटना की निंदा की है। अपने पार्टी सदस्यों के साथ विपक्ष के नेता नवीन पटनायक ने दिग्गज नेता बिजयानंद पटनायक, जिन्हें प्यार से बीजू पटनायक कहा जाता है, को पुष्पांजलि अर्पित की।

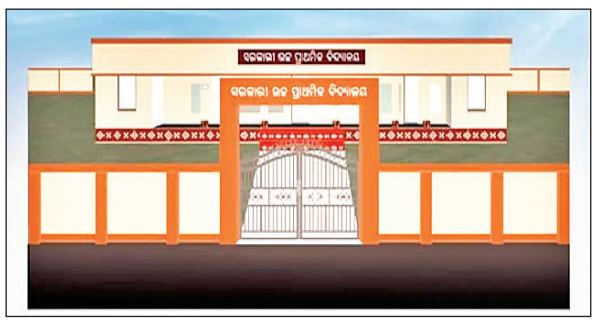

हाथी दांत व्यापारी गिरफ्तार

भुवनेश्वर (आजाद सिपाही)। कलाहांडी जिला एम रामपुर वन विभाग ने एक हाथी दांत व्यापारी को गिरफ्तार करने में कामयाबी हासिल की है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान कटक जिले के दुर्गा प्रसाद गांव के गोपबंधु महालिक उर्फ बाबुली के रूप में की गयी है। वन विभाग की एक टीम ने विशेष स्रोतों से मिली गुप्त सूचना पर एम रामपुर के पास मटोगंडा गांव में एक कबड्डी गोदाम पर छापा मारा और बाबुली को वहां से गिरफ्तार किया, जबकि उसका एक साथी मौके से फरार है गया। बाबुली के नाम पर राज्य के विभिन्न रेंजों में कई मामले दर्ज हैं। वह कई बार हाथी के शिकार के साथ-साथ हाथी दांत के व्यापार में भी शामिल था। 2021 में, आठगढ़ वन विभाग द्वारा गिरफ्तार किया गया था और वन विभाग द्वारा जेल से रिहा होने के बाद व्यवसाय में वापस आने की सूचना दी गयी थी। वह 5 साल से वन विभाग की जांच के दायरे में था और बचने और भागने में कामयाब रहा। एम रामपुर वन विभाग ने उसे गिरफ्तार किया है।

ओड़िशा के सरकारी स्कूल भवनों को नया रंग कोड अपनाने का निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। ओड़िशा में सरकारी स्कूल भवनों को नया रंग कोड अपनाने का निर्देश दिया गया है। बुधवार को इस संदर्भ में ओड़िशा स्कूल शिक्षा कार्यक्रम प्राधिकरण द्वारा राज्य के सभी कलेक्टरों को एक आधिकारिक पत्र भेजा गया। आधिकारिक पत्र में लिखा है, शीर्षक विषय पर संदर्भित पत्र का संदर्भ आमंत्रित करते हुए यह कहा जाता है कि, सरकार ने नये रंग कोड को मंजूरी देने की कृपा की है। रंग कोड की प्रति आपके त्वरित संदर्भ के लिए संलग्न है। इस संदर्भ में सभी सरकारी स्कूलों, जिनमें पीएम श्री स्कूल भी शामिल हैं, में निर्माण, मरम्मत और नवीनीकरण कार्यों के दौरान स्वीकृत रंग कोड को अपनाने के लिए संबंधित क्षेत्र के अधिकारियों को उचित निर्देश जारी करने का अनुरोध किया जाता है। यह आदेश स्कूल भवनों के रंग कोड से संबंधित सभी पिछले निर्देशों का स्थान लेगा। पता चला है कि ओडिशा के सरकारी स्कूलों का रंग कोड नारंगी रंग के अलग-अलग शेड्स में होगा, जैसा कि पत्र में निर्देश दिया गया है। यह स्कूलों के निर्माण, मरम्मत और नवीनीकरण के दौरान लागू होगा।

वेदांता एल्युमिनियम ने झारसुगुड़ा प्लांट में रासायनिक आपदाओं पर राज्यस्तरीय मॉक ड्रिल आयोजित की

आजाद सिपाही संवाददाता

झारसुगुड़ा, ओड़िशा। भारत के सबसे बड़े एल्युमिनियम उत्पादक वेदांता एल्युमिनियम ने अपने संयंत्र परिसर में एक व्यापक मॉक ड्रिल का आयोजन किया, जिसका उद्देश्य खतरनाक रसायनों से संबंधित सुरक्षा उपायों का मूल्यांकन और सुधार करना था। यह अभ्यास ओडिशा के 23 जिलों में एक साथ आयोजित राज्यव्यापी पहल का हिस्सा था, जिससे औद्योगिक सुरक्षा के प्रति वेदांता की प्रतिबद्धता और मजबूत हुई। इस ड्रिल में कर्मचारियों, सुरक्षा कर्मियों और स्थानीय प्रशासन की सक्रिय भागीदारी रही, जिससे आसपास के उद्योगों में सुरक्षा को प्राथमिकता देने की संस्कृति को बढ़ावा मिला। आपातकालीन प्रतिक्रिया दलों ने कुशलता से निकासी प्रोटोकॉल, नियंत्रण उपाय और प्राथमिक चिकित्सा सहायता को निष्पादित किया, जिससे संभावित खतरे को प्रभावी ढंग से कम किया जा सके।

इस ड्रिल में एक खतरनाक रासायनिक आपात स्थिति का परिदृश्य तैयार किया गया, जिसमें आपातकालीन प्रतिक्रिया तंत्र, विभिन्न एजेंसियों के बीच समन्वय और कार्यबल की तत्परता का परीक्षण किया गया। यह पहल जिला प्रशासन, ओडिशा राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (डरउ्टअ), राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (ओएसडीएमए), अग्निशमन सेवा और अन्य आपातकालीन प्रतिक्रिया टीमों के सहयोग से आयोजित की गयी।

यह कार्यक्रम कई प्रमुख सरकारी अधिकारियों की उपस्थिति में आयोजित किया गया। इनमें सब्यसाची पांडा, उप-कलेक्टर, झारसुगुड़ा, चंद्रमणि स्वैन, अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट, झारसुगुड़ा, सुसंता मिश्रा, जिला परियोजना अधिकारी, ओडिशा राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, अर्चना दास, सहायक निदेशक, फैक्ट्री एवं बॉयलर्स, झारसुगुड़ा जोन, अभिजीत साहू, निरीक्षक, राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल, ओडिशा, राजेंद्र सायला, प्रभारी निरीक्षक, बडमाल, ओडिशा, अनुश्का एक्का, उप-पर्यावरण वैज्ञानिक, झारसुगुड़ा, एके टोपनो, सहायक अग्निशमन अधिकारी, झारसुगुड़ा शामिल थे।

वेदांता एल्युमिनियम के मुख्य संचालन अधिकारी सुनील गुप्ता ने कहा कि सुरक्षा वेदांता के संचालन का अभिन्न हिस्सा है, और इस तरह की मॉक ड्रिल औद्योगिक सुरक्षा और आपातकालीन तैयारी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को और मजबूत करती है। स्थानीय प्रशासन और अन्य हितधारकों के सहयोग से, हम सुनिश्चित करते हैं कि हमारा कार्यबल और आसपास के समुदाय किसी भी अप्रत्याशित परिस्थिति का प्रभावी ढंग से सामना करने के लिए पूरी तरह से तैयार रहें। झारसुगुड़ा के उप-कलेक्टर सब्यसाची पांडा ने इस अभ्यास के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि औद्योगिक केंद्रों जैसे झारसुगुड़ा के लिए आपातकालीन तैयारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। मॉक ड्रिल ने उद्योग, प्रशासन, एनडीआरएफ और आपातकालीन प्रतिक्रिया टीमों के बीच उत्कृष्ट समन्वय को प्रदर्शित किया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि हम किसी भी संभावित खतरे को कम करने के लिए तैयार हैं।

ट्रैक सुरक्षा बढ़ाने के लिए इस्ट कोस्ट रेलवे में सुरक्षा बाड़ लगाने का काम

- इस्ट कोस्ट रेलवे के नेटवर्क पर सुरक्षा बाड़ लगाने के लिए 1000 करोड़ से अधिक का काम चल रहा है।

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। रेलवे सुरक्षा बढ़ाने और ट्रेन की गति बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, ईस्ट कोस्ट रेलवे ने अपने अधिकार क्षेत्र में विभिन्न रेलवे खंडों में सुरक्षा बाड़ लगाने की परियोजनाएं शुरू की हैं। सुरक्षा बढ़ाने के लिए इसीओआर पर रेलवे ट्रैक पर 865 करोड़ की लागत से कुल 2792 किलोमीटर सुरक्षा बाड़ लगाने का काम शुरू किया गया है। इन उपायों को लागू करके, इसीओआर एक सुरक्षित और कुशल रेलवे नेटवर्क प्रदान करने की अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत कर रहा है।

खुर्दा रोड डिवीजन:

1025.3 किलोमीटर के लिए ट्रैक सुरक्षा बाड़ लगाने के कार्यों के लिए 388.85 करोड़ रुपये मंजूर किये गये हैं, जिसमें भद्रक-पलासा और खुर्दा रोड-पुरी रेल लाइन सेक्शन में 797.3 किलोमीटर और नेरगुंडी-केराजंग रेल सेक्शन में 228 किलोमीटर शामिल हैं।

संबलपुर डिवीजन:

468.23 किलोमीटर के लिए ट्रैक सुरक्षा बाड़ लगाने के काम के लिए 288.045 करोड़ रुपये मंजूर किये गये हैं, जिसमें सरला रोड-बलांगीर रेल लाइन सेक्शन में 124.15 किलोमीटर और झारसुगुड़ा रोड-संबलपुर सिटी-केराजंगा रेल सेक्शन में 344.08 किलोमीटर शामिल हैं।

कार्यान्वयन और लाभ

सुरक्षा बढ़ाने के लिए फिक्स्ड नॉट फेंसिंग और डबल डब्ल्यू मेटल बीम क्रैश बैरियर लगाये जा रहे हैं। सुरक्षा बाड़ लगाने से कई खंडों में 130 किमी प्रति घंटे और उससे अधिक की गति से ट्रेन संचालन में सुविधा होगी। भुवनेश्वर और पलासा रेलवे स्टेशनों के पास दो पायलट खंडों पर काम शुरू हो चुका है, साथ ही ब्रह्मपुर-गोलंथरा रेल खंड और संबलपुर डिवीजन के कुछ संवेदनशील स्थानों पर भी काम शुरू हो चुका है। अब तक 30 किलोमीटर की बाड़ लगाने का काम पूरा हो चुका है। बाड़ लगाने के लिए इस स्थान की पहचान की गयी है, क्योंकि बैंक की ऊंचाई लगभग रेल स्तर पर है और जहां मवेशी अक्सर ट्रैक पार करते हैं। मंत्रालय भारत में आधुनिक रेल यात्रा की उभरती मांगों को पूरा करने के लिए रेलवे सुरक्षा और बुनियादी ढांचे को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। यह सुरक्षा बाड़ लगाने की पहल एक सुरक्षित और अधिक कुशल रेलवे नेटवर्क सुनिश्चित करने में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित। **संपादक :** हरिनारायण सिंह, **स्थानीय संपादक* :** विनोद कुमार,***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**